Geetanjali Yog LLP
D-170, Sector-8, Dwarka, New Delhi-110 045
Ph.: 09999916347, 9999985961, 9999985962
E-mail: info@shivyog.com
Website: www.shivyog.com
For online order:- www.universaldivineshop.com

Shiv Yog

श्री दुर्गासप्तशती

बीज मंत्रात्मक साधना

॥ ॐ श्री गणेशाय नमः ॥

॥ *om shrI gaNeshAya namah* ॥

वक्रतुण्ड महाकाय सूर्यकोटि समप्रभः ॥
निर्विघ्नं कुरुमेदेव सर्वकार्येषु सर्वदा ॥

vakratunda mahAkAya sUryakoThi sama-prabhAh |
nirvighnam kuru-medEva sarva-kAryesh.u sarvadA ||

अ a	आ A	इ i	ई I	उ u	ऊ U	ऋ R	ॠ R.	ऌ lr.
ॡ lr.u	ए e	ऐ ai	ओ o	औ au	अं am	अः ah		
क ka	ख kha	ग ga	घ gha	ङ n.a				
च ca	छ cha	ज ja	झ jha	ञ nya				
ट Ta	ठ Tha	ड Da	ढ Dha	ण Na				
त ta	थ tha	द da	ध dha	न na				
प pa	फ pha	ब ba	भ bha	म ma				
य ya	र ra	ल la	व va	श sha	ष s.a	स sa	ह ha	ळ la.
क्ष ksha	त्र tr.a	ज्ञ jna						

श्रीदुर्गासप्तशती

DURGA SAPTASHATI

बीजमन्त्रात्मक साधना

Beej Mantratmak Sadhana

CONTENTS

बाबाजी का परिचय	....	5
"BABAJI" - Introduction	....	12
दुर्गासप्तशती बीजमंत्र साधना	....	18
shri durga saptashati - Introduction	....	23
guru stotr.am	....	28
siddha kuny.jikA stotr.am	....	32
shApa vimocana stotr.am	....	37
prathamacaritr.am	....	42
madhyama caritr.am	....	50
uttara caritr.am	....	65
durgA dvatrishnnAma mAlA	....	104
mangalArati	....	106
devyAh kavacam	....	107
devyAh shrI argalA stotr.am	....	119
devyAh kIlakam	....	124
tantr.okta rAtri sUktam	....	127
shiva pancAkshara stotr.am	....	130
jyot se jyot jagAo	....	132
khsamA prArthanA	....	134

।। श्रीगणेशाय नमः ।।

गु अँधियारी जानिए, रु कहिये परकाश ।
मिटि अज्ञाने ज्ञान दे, गुरु नाम है तास ।। - संत कबीर

'गु' अर्थात अन्धकार (अज्ञान), 'रु' यानि प्रकाश (ज्ञान)। जो ज्ञान के प्रकाश से अज्ञान रूपी अंधकार को मिटा दे उसे गुरु कहते हैं।

अज्ञानतिमिरान्धस्य ज्ञानाञ्जनशलाकया ।
चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्रीगुरुवे नमः ।।

उस गुरु को मैं नमस्कार करता हूँ, जिसने ज्ञान का ऐसा अंजन मेरे नेत्रों में लगाया कि अज्ञानता का अंधकार मिट गया।

बाबाजी का परिचय

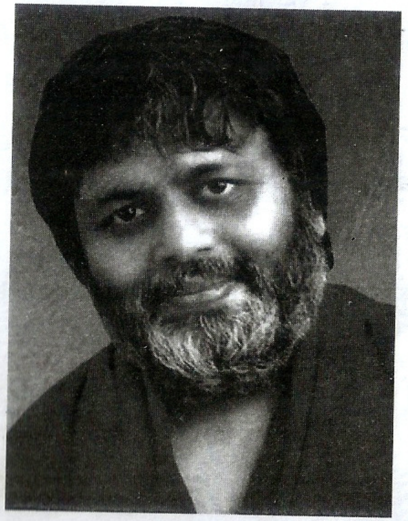

अनादि काल से भारत की पावन भूमि पर, समय-समय पर ऐसे सिद्ध गुरुओं का प्रादुर्भाव हुआ है जिन्होंने ब्रह्मज्ञान के प्रकाश को प्राणी मात्र के कल्याण के लिए जन-जन तक पहुँचाया है। ऐसे ही ज्ञान की दिव्य मशाल लिए आगे बढ़ रहे हैं अवधूत बाबा शिवानन्द जी ।

अवधूत बाबा शिवानन्द जी भगवान दत्तात्रेय की अवधूत श्रृंखला के सिद्ध गुरु हैं। बाबा जी ने अपना समस्त जीवन प्राणी मात्र के कल्याण के लिए समर्पित किया है। आज वे अपनी उपस्थिति से न केवल भारत की तपोभूमि को ही निर्मल कर रहें हैं अपितु अपने निष्काम प्रेम और करुणा द्वारा हम सभी को अनुग्रहित कर रहे हैं। शिव रूप भगवान् दत्तात्रेय की दिव्य ज्योति आज भी बाबाजी में प्रज्जवलित हो रही है।

बाबाजी की बाल्यावस्था -

अवधूत बाबा शिवानन्द जी की बाल्यकाल से ही ईश्वर के प्रति दृढ़ आस्था रही है। उन्हें आठ वर्ष की अल्पायु में ही एक अत्यंत तेजस्वी हिमालय योगी, १०८ स्वामी जगन्नाथ जी से गुरु दीक्षा लेने का परम सौभाग्य प्राप्त हुआ। स्वयं १०८ स्वामी जगन्नाथ जी भगवान दत्तात्रेय की अवधूत परंपरा के एक अवधूत संत थे। उनमें असाध्य रोगों को ठीक करने की अद्भुत क्षमता थी। एक बार बाबाजी के समक्ष उन्होंने एक मरणासन्न व्यक्ति को जीवनदान दे दिया, जिससे बाबाजी अत्यंत प्रभावित हुए। ऐसे सद्गुरु से दीक्षा प्राप्तकर, बाबाजी आठ वर्ष की छोटी सी आयु से ही साधना में लग गए। गुरु मन्त्र के साथ स्वामीजी ने बाबाजी को अन्य कई गूढ़ रहस्यों से भी अवगत कराया।

गुरु निर्देश के अनुसार बाबाजी एक सच्चे शिष्य की भाँति पूर्ण मनोयोग और समर्पण भाव से साधना में लग गए। जीवन की प्रतिकूल परिस्थितियों में भी उन्होंने अपनी साधना में कोई कमी नहीं आने दी। गुरु कृपा से बचपन में ही बाबाजी को दिव्य अनुभूतियाँ होनी प्रारम्भ हो गई। उम्र के साथ-साथ बाबाजी की साधना और भी बढ़ती चली गई।

साधना काल -

बाबाजी की आध्यात्मिक यात्रा चिरस्मरणीय रही है जो कि शिवयोगियों के लिए सदैव प्रेरणा का स्त्रोत्र रहेगी। आध्यात्म के जिस शिखर पर बाबाजी आज हैं, उसके पीछे उनका त्याग नकारा नहीं जा सकता। सांसारिक

आकर्षणों के बीच रह कर भी वे ईश्वर प्राप्ति के दिव्य लक्ष्य पर सतत अडिग रहे। बाबाजी का साधना काल यद्यपि वर्णन से परे है, फिर भी उनकी दिव्य साधनाओं का संक्षिप्त उल्लेख कुछ इस प्रकार है -

अवधूत बाबा शिवानन्द जी ने हिमालय की कंदराओं और अरावली पर्वत के निर्जन स्थानों में रह कर अन्न जल त्याग कर अनेक वर्षो तक कठिन तपस्या की। भगवान दत्तात्रेय की तपोभूमि - गिरिनार पर्वत, जैन धर्म के तीर्थकरों की तपोभूमि - शिखरजी, अरुणाचलेश्वर, सभी ज्योतिर्लिगों और पतितपावनी माँ गंगा के पावन तट पर भी बाबाजी ने ध्यान व तप किया।

परम पूज्य बाबाजी ने सभी शक्तिपीठों पर गहन साधनाएँ कर दशों महाविद्याओं को सिद्ध किया। उनकी कृपा से वहाँ के लोगों को अनेकानेक दिव्य अनुभूतियाँ हुईं। आज भी उन शक्तिपीठों के पुजारी बाबाजी के साथ हुए आश्चर्यजनक अनुभवओं एवं घटनाओं का बड़े हर्षोल्लास के साथ उल्लेख करते हैं।

इसी दौरान परम सिद्ध गुरुओं की कृपा होने पर बाबाजी को दिव्य संतों के सानिध्य मे रहने का परम सौभाग्य प्राप्त हुआ। इसके पश्चात् देश भर के तीर्थ स्थानों में साधुओं के साथ भ्रमण करते हुए वे दक्षिण भारत में तिरुवान्नामलै (जिस को साक्षात् भगवान शिव का निवास स्थान माना गया है) पहुँचे। वहाँ साधनारत योगियों और साधुओं ने बाबाजी को बहुत प्रेम व सम्मान दिया।

वस्तुतः शिवालिक पर्वतों की श्रेणियाँ एवं तीर्थ राज प्रयाग बाबाजी की मुख्य तपोभूमि रही है । शिवालिक पर्वत पर स्थित शक्तिपीठ नैनादेवी ही वो दिव्य स्थान है जहाँ माँ भगवती की कृपा प्राप्त कर, साधना करते-करते बाबाजी स्वयं शिवमय हो गए।

यो गुरुः सशिवः प्रोक्तो यः शिवः सः गुरुस्मृतः ।

(गुरु गीता - शिव-पार्वती संवाद)

अर्थात - जो गुरु है, वह ही शिव है और जो शिव है, वह ही गुरु है अर्थात दोनों एक हैं।

इस समय बाबाजी को माँ भगवती का निर्देश प्राप्त हुआ ''तुम मेरी प्रसन्नता के लिए शिव साधना करो।''

शिवमन्त्र दीक्षा की प्राप्ति

एक बार बाबाजी रात्रि के समय अपने साधना कक्ष में साधनारत थे। उन्होंने देखा कि शिरडी के साईं बाबा उनके कक्ष मे प्रवेश कर रहे हैं। साईं बाबा वहीं उनके दाहिनी ओर आ कर बैठ गए और ज़ोर ज़ोर से बाबाजी के कान में शिवमन्त्र का उच्चारण करने लगे। बाबा जी ने उन्हें धीमी आवाज़ में जप करने का निवेदन किया जिससे उनकी साधना में खलल न हो किन्तु साईं बाबा उसी वेग से उच्च स्वर में ही मन्त्रोच्चारण करते रहे। बाबाजी उस समय स्वयं पर हो रही गुरु कृपा से पूर्णता अनभिज्ञ थे कुछ समय पश्चात् बाबाजी ने अनुभव किया कि वे तो शक्ति मन्त्र के बजाय शिव मन्त्र उच्चारित कर रहे थे जिसे रोक पाने में वे पूर्णता असमर्थ थे। साईं बाबा की कृपा और शक्ति के फलस्वरूप बाबाजी शिवमंत्र का जाप करते-करते ध्यान में विलीन हो गए। गुरु सानिध्य में साधना करते-करते रात कैसे बीत गई पता ही नहीं चला। प्रातः ध्यान से उठने पर जब बाबाजी ने इधर-उधर देखा तो साईं बाबा अंतर्ध्यान हो चुके थे और साधना कक्ष में कोई नहीं था। तब बाबाजी को स्वयं पर हुई गुरु कृपा का अहसास हुआ और उन्हें साईं बाबा के वहाँ आने के दिव्य प्रयोजन का ज्ञान हुआ। साईं बाबा से शिव मन्त्र की गुरु दीक्षा प्राप्त कर बाबाजी को माँ भगवती के दिव्य सन्देश का स्मरण हो आया जो उन्हें साक्षात्कार के समय प्राप्त हुआ था औरं तभी से वे शिव साधना में संलग्न हो गए।

बाबाजी ने अपनी साधना के द्वारा न केवल आध्यात्म के सर्वोत्तम शिखर पर पहुँच कर आत्म साक्षात्कार की स्थिति को प्राप्त किया अपितु अति दिव्य हीलिंग पद्धतियों के रहस्यों के अलौकिक ज्ञान को भी अर्जित किया।

शिव शिवा से प्राप्त अपने इस दिव्य ज्ञान को बाबाजी ने केवल स्वयं तक ही सीमित नहीं रखा, उन्होंने निष्काम प्रेम एवं करुणामय भाव के फलस्वरूप इस गूढ़ ज्ञान को बड़ी सरलता से जनमानस के समक्ष प्रत्यक्ष किया।

'लोकाः समस्ताः सुखिनो भवन्तु'-

बाबाजी चाहते तो आजीवन अपनी अंतर्चेतना में स्थित हो कर सदैव ध्यानावस्था में रह सकते थे, किन्तु गुरु आज्ञा से प्रेरित हो बाबाजी ने 'लोकाः समस्ताः सुखिनो भवन्तु' को अपने जीवन का मूलमंत्र बना लिया और इसी मंत्र को यथार्थ करने हेतु उन्होंने अपना सारा जीवन समर्पित कर दिया। उन्होंने प्राचीन भारत के जिस परम पावन एवं गोपनीय ज्ञान को पुनर्जीवित किया, उसे मानव कल्याण के उद्देश्य से जन-जन तक पहुँचाने का बेड़ा उठाया। जो दिव्य ज्ञान प्राचीन समय में कई वर्षों के कठिन तप द्वारा ही प्राप्त हो सकता था, वह ज्ञान बाबाजी आज हमें प्रेमवश सहज ही प्रदान कर रहे हैं। जिस ज्ञान की प्राप्ति हेतु बाबाजी ने अपना सारा जीवन जटिल तप एवं कठिन साधनाओं को करने में व्यतीत कर दिया वह दिव्य ज्ञान, मात्र कृपा द्वारा वे जन कल्याण के लिए कितनी सरलता से लुटा रहे हैं! आज बाबाजी का अधिकतर समय अपने साधकों के कल्याण के लिए प्रार्थना करने में ही व्यतीत होता है जिससे वे अपने लक्ष्य से भटके बिना आध्यात्मिक मार्ग पर निरंतर बढ़ते रहें।

भारतीय हीलिंग पद्धति के जन्मदाता-

आज हम कई हीलिंग पद्धतियों से परिचित हैं किन्तु भारतीय हीलिंग पद्धति का दिव्य ज्ञान हमें बाबाजी से ही प्राप्त हुआ इसलिए आज बाबाजी 'भारतीय हीलिंग पद्धति के जन्मदाता' के रूप में जाने जाते हैं। बाबाजी के अनुसार सांसारिक अथवा आध्यात्मिक उपलब्धियों की प्राप्ति हेतु साधक के लिए शरीर का निरोगी होना अति आवश्यक है। 'नर से नारायण' तक की यात्रा मानव शरीर द्वारा ही संभव है। यह शरीर रूपी रथ जितना सुदृढ़ होगा

हमारी यह यात्रा उतनी ही अधिक सुगम हो सकेगी और हम जीवन का पूर्ण आनंद प्राप्त कर पाएँगे। अतः सबसे पहले इस शरीर को स्वस्थ रखना अत्यंत आवश्यक है। सिद्धा एवं शाम्भवी ध्यान व हीलिंग द्वारा ये संभव हो सका है। इस ध्यान एवं हीलिंग को करके हम पूर्ण स्वस्थ जीवन प्राप्त कर सकते हैं। बाबाजी के मार्ग दर्शन में सिद्धा ध्यान एवं हीलिंग के माध्यम से लाखों लोग अपने जीवन में सुखद परिवर्तन ला कर साधना के मार्ग पर सहज ही अग्रसर हो रहे हैं।

शिवयोग साधनाएँ -

बाबाजी ने प्राचीन भारत के पवित्र एवं परम गोपनीय साधनाओं के दिव्य रहस्यों को जनमानस के समक्ष प्रकट किया है जो कि उल्लेखनीय है। वे दुर्गा सप्तशती बीज मंत्र साधना और श्री विद्या साधना के दिव्य एवं दुर्लभ ज्ञान से लोगों को ज्ञानोदित एवं लाभान्वित कर रहें हैं। बाबाजी द्वारा उजागर दुर्लभ परम गोपनीय ज्ञान, साधनाएँ और हीलिंग पद्धतियों का सुंदर समन्वय 'शिवयोग' के नाम से विख्यात है जिसके संस्थापक स्वयं बाबाजी हैं। शिवयोग का तात्पर्य है 'शिव से जुड़ना' यानि 'अनंत से जुड़ना'।

शिवयोग मार्ग है - भोग से मोक्ष का! यह मार्ग है सोई हुई चेतना को जगाने का! यह मार्ग है जीवन को पूर्णता से जीने का!

शिवयोग पंथ है हमारी सोई हुई अनंत शक्तियों को जाग्रत करने का! यह पंथ है हमारे पाँचों शरीरों को शुद्ध कर जीवन में पूर्ण स्वास्थ्य, सम्पन्नता एवं सफलता के मार्ग प्रशस्त करने का!

यदि साधक शिवयोग के सिद्धांतों का अनुसरण करते हुए पूर्ण समर्पण भाव से शिवयोग की नियमित साधना करे तो वह निश्चय ही सांसारिक सुखों का अनुभव करते हुए शिवयोग की स्थिति को प्राप्त हो सकता है।

बाबाजी भगवान शिव-शिवा से सदैव प्रार्थना करते हैं कि सभी साधक शिवयोग के दिव्य मार्ग का अनुसरण करते हुए अधिक से अधिक साधना

और पुण्य कर्म कर सकें जिससे वे अज्ञानतावश हुए कर्मदोष, गृहदोष, देवदोष और पितृदोष से मुक्त हो सम्पूर्ण एवं सुखी जीवन जीते हुए आत्म-साक्षात्कार के मार्ग पर अग्रसर हो सकें।

मानव समाज के उत्थान में बाबाजी का योगदान सदैव अतुलनीय एवं अविस्मरणीय रहेगा।

सब धरती कागज करूँ, लेखनी सब बनराय ।
सात समुदंर की मसि करूँ, गुरु गुण लिखा न जाय ।।- संत कबीर

यदि समस्त पृथ्वी कागज़ हो जाए, सारे वन कलम हो जाए और सातों समुद्रों का जल स्याही बन जाए तो भी गुरु के गुण लिख पाना कठिन ही नहीं असंभव है।

"BABAJI" - Introduction

Gu andhiyAri jAniye, Ru kahiye parkAsh
Miti ajnAne jnAn de, Guru nAm hai tAs

– Sant Kabir

"Gu" means darkness (ignorance), "Ru" means light (knowledge). The one who, through the light of knowledge, dispels the darkness of ignorance, is the Guru.

ajnAna timirAndasya jnAnAnjanashalAkaya
chakshurunmIlitham yena tasmai srI guruve namah

I bow down in reverence to that Guru, who has anointed such a Divine alchemy in my eyes that the darkness of my ignorance has disappeared.

Introduction

From time immemorial, the sacred land of India has been graced by many Siddha Gurus, who have spread the Divine Light of God for the welfare of humankind. With a similar torch, ablaze with Divine flame, Avdhoot Baba Shivanandji is spreading this supreme work.

Avdhoot Baba Shivanandji is the foremost Guru in the Avdhoot lineage of Bhagwan Dattatreya. Babaji has dedicated his life for the welfare of humanity at large. Through his presence today, Babaji is not only sanctifying our land, but also blessing us with his unconditional love and compassion. The Divine flame of Lord Shiva as embedded in Bhagwan Dattatreya is glowing radiantly in our Babaji.

Babaji's childhood

From his very childhood, Avdhoot Baba Shivanandji has had immense faith in God. At the tender age of eight, he had the utmost good fortune to be blessed with Guru Deeksha from a Divinely powerful Himalayan yogi, 108 Swami Jagannath – who himself was an Avdhoota saint in the Bhagwan Dattatreya

lineage. 108 Swami Jagannath had wondrous abilities to heal seemingly incurable diseases. At one time, he gave the gift of life to a dying man. This episode had a deep impact on Babaji. Along with the Guru Mantra, Swamiji also revealed several other deep secrets to Babaji. After attaining initiation from such a Sadguru, Babaji has been practicing Sadhana rigorously.

Following the orders of his Guru, Shivanand Babaji, like a true disciple, started performing Sadhana with utmost devotion and complete surrender to the Divine Mother. Even during difficult circumstances, Babaji never let any paucity affect his Sadhana. With the grace of his Guru, Babaji started having Divine experiences since his childhood. Babaji's Sadhana grew deeper and deeper with the passage of time.

Sadhana Period

Babaji's spiritual journey is truly memorable and will always remain as a source of inspiration to all Shivyogis. One cannot dismiss the sacrifices he has made to attain the peak of spirituality, where he is today. While remaining in the midst of the material world and its myriad attractions, he was always steadfast on his Divine goal of "God realisation." Although his spiritual journey is beyond description, some brief details encompassing his holy Sadhanas are given below.

Avdhoot Baba Shivanandji has performed difficult tapasyas for many years in uninhabited places in the Himalayas and Aravali mountain ranges, often forsaking food and water. Babaji has meditated and performed tapasya at sacred places, such as Girnar, which is the seat of Bhagwan Dattatreya; Shikharji, the seat of the Jain Thirthankaras; at Arunachaleshar, at all Jyotirlingas and on the sacred banks of the ever-pure Ganges.

Param Pujya Babaji performed deep Sadhanas at all Shakti Peethas and attained the Dasha Mahavidyas. Through his grace, the people at those places were blessed with countless Divine experiences. Even today, the priests at those Shakti Peethas describe with great adoration, the fantastic experiences and incidents, they have had with Babaji.

During this period, Babaji, with the grace of Siddha Gurus, had the fortune to stay with the Divine Saints. After this, while on pilgrimage to the holy places across India, he reached Thiruvannamalai in Southern India, which is regarded as abode of Lord Shiva. There, the yogis and saints showered a lot of respect and love to Babaji.

Babaji's principal seat of tapasya has been the peaks of the Shivalik mountains and Theerth Raj Prayag. Nainadevi, the Shakti Peetha on the Shivalik mountain ranges, is indeed the Divine place where Babaji, through the grace of the Divine Mother, attained "Shiva Consciousness".

Yo Guru saShiva: proktho ya: Shiva: sa: Guru smrutah
(Guru GIta – Shiv PArvati samvAd)

One, who is Guru, is very much Shiva, and one who is Shiva is verily the Guru; i.e. One is embedded in the other.

At this time, Babaji received the order from the Mother Goddess - "For my happiness, you must perform the Sadhana of Shiva".

Union with Shiva Consciousness

Once, when Babaji was in deep Sadhana in his meditation room, he saw Shirdi Sai Baba entering his room. Sai Baba came and took a seat on his right and started reciting the Shiv Mantra very loudly in Babaji's ear. Babaji requested him to recite softly, so that his Sadhana would not be interrupted. However, Sai Baba continued to recite the Mantra with the same fervour and high voice. At that time, Babaji was not aware of the grace of the Guru being showered upon him. After some time, Babaji noticed that, instead of the Shakti Mantra, he was reciting the Shiva Mantra – and try as he might, he was unable to stop it. Through the grace and power of Sai Baba, Babaji was lost in deep meditation, while reciting the Shiva Mantra. Doing Sadhana in the presence of Sai Baba, he did not realise, how the whole night passed on. In the morning, when Babaji awoke from meditation, he looked around for Sai Baba – but he was no longer visible in the room. Then, Babaji realised the grace of the Guru that he had received and

also understood the reason for Sai Baba's visit. Having received the Guru Deeksha of the Shiva Mantra from Sai Baba, Babaji recalled the message from the Divine Mother he had received at the time of Her appearance before him. Since then, he has been deeply involved in performing 'Shiva Sadhana'.

Through his Sadhana, Babaji has not only reached the supreme acme of spirituality and attained the state of self realisation, but has also acquired the other worldly knowledge of the most hallowed healing methods. Babaji has not kept for himself this Divine knowledge, that he gained from Shiv Shiva; but through His unconditional love and compassion, has presented this secret doctrine to all in a simple manner.

" Lokah samastAh suKino bhavantu"

" Let the happiness prevail everywhere in the Universe"

If he had wished, Babaji could have forever remained in an eternal state of meditation steeped in his inner consciousness. But, inspired by the directive of his Guru, he has made his life's objective to be 'Loka: samastA: suKino bhavantu' (let the happiness prevail everywhere in the Universe) – and has dedicated his life to make this possible. For the welfare of humanity, he has taken up the task of giving all, the most sacred and secret knowledge of ancient India that he has revived. This Divine knowledge, that in olden times could only have been attained through rigorous tapasya for many years, is now being granted to us by Babaji through his doctrine of unconditional love. The knowledge for which Babaji spent his entire life in severe tapasya and arduous Sadhana, he grants to us simply through grace alone, for the benefit of humanity. Today, most of Babaji's time is spent in prayer for the welfare of his disciples, so that they can be steadfast in their goals and make continuous progress on the spiritual path.

Father of Indian Healing

The ancient Indian knowledge of healing was revealed to us by Babaji. He is also revered as the 'Father of Indian Healing'. According to Babaji, a healthy body is very important for attaining

both material and spiritual goals. The journey from 'Nar to Narayan' (Man to God) is only possible through the human body. Only when the chariot like body is robust, the journey of life becomes easier and safer, making our life joyful. Therefore, first of all, it is important to keep our bodies healthy. This is possible through Siddha and Shambhavi Meditation and other Healing methods. By practicing the meditation and healing methods, we can obtain a completely healthy life. Under Babaji's guidance, millions of people have experienced significant positive changes in their lives through Siddha Meditation and Healing and are making easy progress on the path of Sadhana.

Shivyog Sadhanas

Babaji has presented to all, the sacred and most secret Sadhanas of ancient India. He kindles wisdom and bestows material benefits to all beings, through the Divine and rigorous Durga Saptashati Beej Mantra Sadhana and Sri Vidya Sadhana. The light radiated from Babaji on the most secret and rigorous knowledge, sadhanas and healing practices, is beautiful confluence, renowned as "Shivyog" - which has been founded by Sri Shivanand Babaji. Shivyog means "uniting with Shiva", which is "uniting with infinity".

Shivyog doctrine is the way that leads from material abundance to Supreme Nirvana. This doctrine is the method to awaken the sleeping consciousness and to enliven the infinite dormant powers within us. This doctrine is for the purification of our five bodies and to make way for our lives to be filled with health, abundance and success.

If a Sadhak practices the doctrines of Shivyog and performs with a sense of surrender, the prescribed Sadhanas of Shivyog, then he or she will surely attain the state of Shivyog while experiencing material pleasures.

Babaji always prays to Lord Shiv Shiva that every Sadhak, while following the Divine Path of Shivyog, is able to perform more and more Sadhana and righteous deeds – so that they may be relieved from unknown ill effects of Karma dosha (ill effects of karmas), Grah dosha (ill effects from planets), Dev dosha

(ill effects from Divine beings, curses), Pitru dosha (ill effects from ancestors); and thereby, while living a complete and joyful life, make fast progress on the path of self realisation.

Babaji's contributions to the betterment of human society will always remain unparalleled and remembered forever.

Sab dharti kAgaz karoon, lekhni sab banrAy
sAth samundar ki masi karoon, Guru gun likha na jAye

– Sant Kabir

If the entire earth be turned into paper, all the forests be turned into a pen, and the seven oceans be turned into ink
– even then one cannot write enough on the glory of the Guru.

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

श्रीदुर्गासप्तशती बीजमंत्र साधना

प्रस्तावना

श्री दुर्गा सप्तशती हिन्दू धर्म का अत्यंत प्राचीन ग्रन्थ है। श्रीदुर्गासप्तशती साधना का रहस्य शिव पार्वती संवाद पर आधारित है। १३ अध्याय ७०० श्लोकों द्वारा रचित ये महाग्रन्थ शक्ति की साधना है। दुर्गासप्तशती पौराणिक समय से कीलित है क्योंकि इसमें अपार शक्ति निहित है। हर मनुष्य के पास न तो इसे खोलने का ज्ञान है और न ही शक्ति। लेकिन वर्तमान समय में कुछ ही सिद्धों के पास इसे खोलने का ज्ञान और शक्ति है। वास्तव में शक्ति साधना गुरु के सानिध्य में ही की जाती है क्योंकि यह गुरु कृपा पर ही आधारित है। दुर्गासप्तशती के सभी श्लोकों की कुछ अवधूतों और सिद्धों के पास भोज पत्रों पर लिखित जो पाण्डुलीपियाँ थीं, उसमें सबसे बड़ा रहस्य निहित है और वह रहस्य यह है कि प्रत्येक श्लोक का अमृत उसके बीजमंत्र में है। दुर्गासप्तशती के प्रत्येक श्लोक को शक्ति मंत्र के रूप में परिवर्तित करते हैं तो एक बीजमंत्र उत्पन्न होता है। इन श्लोकों को जागृत करने पर ही यह बीजमंत्र निकलता है। बाबा जी की कृपा से ये उत्कीलित एवं अत्यधिक शक्तिशाली बीजमंत्र हम सबको सहज ही सुलभ हो रहे हैं। इनका जप करने पर ही इनकी वास्तविक शक्ति अनुभव की जा सकती है और साधक को माँ भगवती की असीम कृपा प्राप्त होती है।

गुरुदीक्षा की आवश्यकता-

शक्ति साधना तभी फलीभूत होती है जब यह सद्गुरु द्वारा दीक्षा के रूप में मिलती है। जब सद्गुरु अनुग्रह करके शक्तिपात द्वारा साधक की बन्द ग्रन्थियों को खोलता है तो साधक में इन बीजमंत्रों की अनंत शक्ति को सम्भालने का सामर्थ्य आ जाता है। दीक्षा के बिना इस साधना का वास्तविक अनुभव प्राप्त नहीं हो सकता।

साधना का प्रभाव-

इन ७०० श्लोकों में अमृतरूपी माँ भगवती की कृपा बीजमंत्रों के रूप में छुपी है। सिद्धों के अनेकानेक वर्षों तक इन श्लोकों पर तपस्या किए जाने पर ये बीजमंत्र उत्पन्न हुए हैं। जो साधक श्रद्धा और पूर्ण भक्ति के साथ इनका जप करता है उसका भाग्योदय निश्चित है।

यदि परिवार का एक भी सदस्य घर में दुर्गासप्तशती के बीजमंत्रों का पाठ करता है तो पूरे परिवार का कल्याण हो जाता है।

साधना के नियम-

दुर्गासप्तशती के बीजमंत्रों का पाठ जहाँ भी होता है भगवती के तीन स्वरूपों और मातृशक्तियों का आवाहन् स्वतः ही हो जाता है, इसलिए यह साधना दीपक जलाकर एकांत में उत्तम एवं पवित्र स्थान पर ही करनी चाहिए। यात्रा करते समय इसका पाठ न करें। केवल गुरु द्वारा दीक्षित लोग ही इसका पाठ कर सकते हैं।

सामूहिक साधना-

दुर्गासप्तशती की सामूहिक साधना जहाँ भी होती है उस क्षेत्र में सकारात्मक उर्जा का प्रवाह बहुत बढ़ जाता है। कई हज़ार लोग जब मिलकर यह पाठ करते हैं तो आसुरी शक्तियों का पलायन होता है और अटकी हुई आत्माओं की उर्ध्वगति होती है। साधक के पितृों को भी मुक्ति मिलती है। ब्रह्मांड से दिव्य ज्योति नीचे आती है और अटके हुए पितृ दिव्य प्रकाश में उपर उठ जाते हैं। यदि जनसंख्या के एक प्रतिशत लोग भी यह साधना कर लें तो अपराध संख्या कम हो जाती है, पर्यावरण सम्भल जाता है, समय पर वर्षा होती है और फसल अच्छी होती है और खुशहाली बढ़ती है। सामूहिक साधना के द्वारा जितना सामूहिक चेतना का स्तर उपर उठता है उतना कल्याण अधिक होता है।

साधना द्वारा वाचिक तप-

ये साधना उच्च स्वर में की जाती है, मंत्रोच्चारण के द्वारा वाचिक तप होता है। इस बीजमंत्र उच्चारण से हमारे सूक्ष्म शरीरों में कर्म के जो बीज अटके हुए हैं, जो हमारे प्रारब्ध भोग का कारण बनते हैं, वे कमज़ोर पड़ना शुरु हो जाते हैं और पाँचों शरीर दिव्य उर्जा से परिपूर्ण हो जाते हैं। शब्द बीजमंत्र के प्रभाव से नाद में परिवर्तित हो जाता है। भाग्यशाली है वह मनुष्य, जिसके चारों ओर शक्ति का नाद हो - ब्रह्मनाद हो!

दुर्गाशप्तशती का महत्व-

दुर्गासप्तशती ग्रन्थ भक्तों के लिए कल्पतरू के समान है। जो कोई व्यक्ति एकाग्रचित्त होकर, प्रेम और भक्ति से परिपूर्ण होकर, विधिपूर्वक श्री दुर्गासप्तशती के बीजमन्त्रों का पाठ करता है, वह अपने जीवन में, निश्चय ही, माँ भगवती की विशेष कृपा का अनुभव करता है। इस पाठ को नियमित रूप से करने से भक्तों के सभी सात्विक मनोरथ सफल होते हैं। निष्काम भाव से की गई साधना से साधक भोग, स्वर्ग एवं दुर्लभ मोक्ष को प्राप्त होता है। दुर्गासप्तशती के बारहवें अध्याय में माँ के कथनानुसार साधक माँ भगवती के प्रसाद स्वरूप निम्नलिखित उपलब्धियों को भी प्राप्त करता है :-

१. वह अपने जीवन की सभी विघ्न बाधाओं एवं संकट से मुक्त हो, सफलता के मार्ग पर अग्रसर हो जाता है।

२. माँ साधक के जीवन के दुःख और दरिद्रता को हर लेती है और उसे सुख, समृद्धि और सम्पन्नता से भरपूर करती है।

३. समस्त शत्रुओं और गृह पीड़ा का शमन होता है, फलस्वरूप सर्वत्र शान्ति की अनुभूति होती है।

४. साधक धन-धान्य एवं उत्तम संतान से सम्पन्न होता है।

५. राक्षसों, भूत और पिशाचों का नाश होता है।

६. अभावों से मुक्ति होती है और जीवन में प्रचुरता का अनुभव होता है।

७. साधक को मनवांछित दुर्लभतम् वस्तु या स्थिति सहज ही प्राप्त हो जाती है।

८. साधक को कल्याणमयी, धार्मिक बुद्धि प्राप्त होती है, और वह उत्तम गति को प्राप्त होता है।

जिस घर में दुर्गासप्तशती की निरन्तर साधना होती है, उस घर में माँ भगवती स्थाई रूप से निवास करती है।

बाबाजी का उद्देश्य-

बाबाजी की इस शक्ति ग्रन्थ के रहस्यों को जन मानस के समक्ष प्रकट करना चाहते हैं जिससे हमारे पूर्वजों की यह धरोहर कहीं लुप्त न हो जाए। पौराणिक काल से दुर्गासप्तशती बीजमंत्र साधना अत्यंत दुर्लभ व अनमोल रही है। माँ भगवती के जिन बीजमन्त्रों की प्राप्ति हेतु बाबाजी ने अपना सारा जीवन लगा दिया, वह ज्ञान रूपी अमृत आज जन साधारण को गुरुकृपा से सहज ही उपलब्ध हो रहा है। पहले जो ज्ञान कुछ ही लोगों को सुपात्र जानकर दिया जाता था आज प्रेमवश बाबाजी उसे जनमानस के कल्याण में और पृथ्वी के उत्थान के लिए जन-जन तक पहुँचाना चाहते हैं। बाबाजी चाहते हैं कि सन् २०१२ में दुर्गासप्तशती के बीजमन्त्रों की साधनाएँ अधिक से अधिक हों और सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड इन दिव्य मन्त्रों के नाद से गुंजायमान हो उठे और इस ब्रह्माण्ड का कण-कण माँ भगवती की दिव्य कृपामृत वर्षा से सराबोर हो जाए।

दुर्गासप्तशती बीजमंत्र साधना शिविरों का आयोजन

बाबाजी इस दुर्गासप्तशती बीजमंत्र साधना के अनमोल ज्ञान से जनमानस को अवगत कराना चाहते हैं जिससे वे अपने जीवन में माँ भगवती की असीम एवं अपूर्व कृपा को तुरन्त अनुभव कर अपने जीवन को कृतार्थ कर सकें। वे चाहते हैं कि इन साधना शिविरों का आयोजन विश्व के

कोने-कोने में किया जाए जिससे कि ज्यादा से ज्यादा लोग इन दिव्य एवं जाग्रत बीजमंत्रों को प्राप्त कर अपने जीवन को लाभान्वित कर सकें। इसी उद्देश्य से दुर्गाशप्तशती बीजमंत्र साधना शिविर समय-समय पर विभिन्न स्थानों पर आयोजित किए जा रहे हैं।

दुर्गासप्तशती बीजमंत्र साधना के लिए गुरु द्वारा शक्तिपात दीक्षा अनिवार्य है अन्यथा इन बीजमंत्रों की अनन्त शक्ति को प्राप्त करना, संभाल पाना और अनुभव कर पाना असंभव है। गुरु द्वारा शक्तिपात चार प्रकार से किया जाता है - दृष्टि, स्पर्श, संकल्प और वाणी।

बाबाजी इन शिविरों में संकल्प एवं वाणी के माध्यम से शक्तिपात दीक्षा प्रदान करेंगे। बाबाजी द्वारा दिव्य शक्तिपात को ग्रहण करते हुए, साथ ही साथ उनका दर्शन करते हुए, इस साधना के दुर्लभ ज्ञान को प्राप्त कर सभी लोग अपना कल्याण मार्ग प्रशस्त कर सकते हैं।

जिस घर में गूँजे सदा सप्तशती उद्घोष ।
शान्ति, भक्ति और प्रेमरूप, माँ बसे मिटाकर रोष ।।
भय संकट का नाश हो, मिटे सभी गृह दोष ।
समृद्धि, धन-धान्य से भरे, सभी के कोष ।।

SHRI DURGA SAPTASHATI

- Introduction -

Preface

Sri Durga Saptashati is an ancient scripture of the Hinduism. The secret of Sri Durga Saptashati Sadhana is based on the conversation between Shiva and Parvathi. This epic work containing 13 Chapters and 700 verses is a Shakti Sadhana. From Puranic times, the Durga Saptashati has been "locked", as it is inherent with immense power. The ordinary mortal has neither the knowledge nor the ability to unlock this. In the present day, very few Siddhas have the knowledge and the power to unlock the Durga Saptashati. In the true sense, Shakti Sadhana is only performed in the presence of the Guru, because it is dependent on the benevolence of the Master. The biggest secret of the Durga Saptashati is contained in old palm leaf inscriptions in the possession of a few Avdhootas and Siddhas – and the secret is that the nectar of every verse is contained in its Beej Mantra. If we convert each verse of the Durga Saptashati into a Shakti Mantra, then it gets transformed into a Beej Mantra. Only when the power of the verses are awakened, do we realise the Beej Mantras. Through the grace of Babaji, we are able to obtain this unlocked and very powerful sadhana in such an easy manner. By mere recitation of these verses, sadhaks can experience the real power latent in them, and obtain the infinite grace of the Divine Mother.

The necessity of the Guru Deeksha

Shakti Sadhanas can only be obtained, when they are received from a Sadguru (true master) in the form of deeksha (initiation). When the Sadguru blesses us with Shaktipath (Divine transfer of energy), the inner knots of ignorance in our consciousness are removed – and we become capable of handling the infinite power of the Beej Mantras. In the absense of Deeksha, it is not possible to truly experience this Sacred Sadhana.

The effect of the Sadhana

The elixir like grace of the Divine Mother is hidden in these 700 verses. Only after deep meditation on these verses for countless years, the Siddhas were able to accomplish these Beej Mantras. The Sadhak, who recites Durga Saptashati with faith and true devotion, is assured of the dawn of good fortune in his or her life. Even if one member of the family recites the Beej Mantras of the Durga Saptashati at home, the entire family gets benefitted.

The Rules of the Sadhana

All the three forms of Divine Mother with Divine Powers get invoked, just by lighting a lamp and reciting "Durga Saptashathi" in solitude and in an atmosphere of sanctity and purity.

Only those, who have received the initiation from the Guru, are eligible to perform this Sadhana. It is not advisable to do this Sadhana while travelling.

Group Sadhana

Wherever the group Sadhana of the Durga Saptashati is performed, the flow of positive energy at that place increases immensely. When several thousand people recite this together, then demonic powers will get vanquished and lingering spirits will attain Higher realms. Even the ancestors of the Sadhak will receive salvation. The Divine radiance descends from Heaven and the ancestors bound to the earthly plane ascend into the Holy Light. Even if one percent of the population performs this Sadhana, the crime rates will come down; the environment will get stabilised; farmers will get good harvests with plenty of rains and overall well being will get enhanced. As much as the collective consciousness is improved through Group Sadhana, so much more would be the welfare.

Sadhana through Vocal Recitation

This Sadhana is performed in a high voice and vocal tapasya is accomplished through the recitation of the Mantras. By the recitation of these Mantras, the seeds of karmas stuck in our finer and etheral bodies due to past actions, become weaker and

weaker and all our five bodies get filled with Divine energy. Through the effect of the Beej Mantras, the sound of words gets transformed into Divine vibration. That person is indeed fortunate, who is surrounded by the energy of vibration, the vibration of God-head.

The Glory of the Durga Saptashati

The Durga Saptashati is very much like a wish fulfilling tree for the devotee. Whosoever recites the Beej Mantras of the Durga Saptashati by following the prescribed method, with a one pointed mind and filled with love and devotion, that person will definitely experience the special grace of the Divine Mother. By the recitation of these verses, devotees succeed in attaining all their good and pure desires. This Sadhana, when performed without a desire for fruit, confers upon the Sadhak material abundance, heavenly pleasures and ultimate salvation.

According to the story of the Goddess in the Twelfth Chapter of the Durga Saptashati, Sadhaks also obtain the below mentioned boons from the Divine Mother -

1. Their lives are relieved from all obstacles, hardships and sufferings; they proceed fast on the way to success.
2. The Mother removes sorrow and paucity from the Sadhak's life and fills it with happiness, well being and abundance.
3. All enemies and planetary afflictions are negated, thereby leading to the feeling of peace all-around.
4. The Sadhak is blessed with an abundance of wealth and material prosperity, and the finest children.
5. Demons, ghosts and evil spirits get destroyed.
6. Relieved from scarcities and deficiencies, one experiences plenitude in life.
7. The Sadhak very easily obtains the desired items and circumstances.
8. The Sadhak attains intelligence, that is noble and welfare oriented and proceeds towards spiritual upliftment.

The Divine Mother will always reside in the homes, where the Durga Saptashati Sadhana is performed regularly.

Babaji's objectives

Babaji would like to present to all humanity the secrets of the Shakti epics, so that this precious treasure of our ancestors is not lost. From the Puranic times, the Durga Saptashati Beej Mantra Sadhana has been difficult to obtain and closely guarded. Babaji, who dedicated his life to secure the Beej Mantras of the Divine Mother, is today spreading this Nectar like knowledge to one and all as a Guru's benediction. This knowledge, which was earlier revealed only to a very few highly deserving persons, is today being unfolded to all on the basis of Babaji's love for humanity at large and for the betterment of the world. Babaji desires that more and more people practice the Durga Saptashati Beej Mantra Sadhana, so that the vibration of entire Planet Earth increases – so that the Holy Nectar flows from the Divine Mother and is dispersed to all areas of the cosmos.

Conducting of Durga Saptashati Beej Mantra Sadhana Shivirs:

Babaji wants to introduce to one and all this precious knowledge of the Durga Saptashati Beej Mantra Sadhana, so that they can immediately experience the infinitely wonderful grace of the Divine Mother and lead a successful life. Babaji wishes to have these Sadhana Shivirs conducted in every corner of the world, in order that more and more people receive these Divine and Enlivened Beej Mantras and derive immense benefits in their lives. Following this objective, Durga Saptashati Beej Mantra Sadhana Shivirs are being organised from time to time in various places.

Obtaining Shaktipath from the Guru is essential to perform the Durga Saptashati Beej Mantra Sadhana. Otherwise, it is impossible to receive, handle and experience the infinite energy of these Beej Mantras. Shaktipath from the Guru is transmitted via four methods – sight, touch, intention and speech.

In these Shivirs, Babaji will bestow Shaktipath Deeksha through the medium of **speech** and **intention**. While receiving the Divine Shaktipath from Babaji and while beholding his presence, all of us can obtain the lofty knowledge of this Sadhana and strengthen the path, that leads to our welfare.

The home in which there is continuous vibration
by the recital of the Saptashati
In Her form of peace, devotion and love -
the Mother resides without anger
May fear and difficulties be destroyed,
may all planetary afflictions be erased
And may our vessel of life be filled with wealth,
abundance,
and well being.

॥ गुरु स्तुति ॥

॥ guru stotr.am ॥

अखण्डमण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरम् ।
तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥ ॥१॥

akhanDamanDalAkAram vyaptam yena caracaram |
tatpadam darshitam yena tasmai shrI gurave namah || ||1||

अज्ञानतिमिरान्धस्य ज्ञानाञ्जनशलाकया ।
चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥ ॥२॥

ajnyAna timirAndhasya jnyAnAnajana-shalAkaya |
cakshurunmIlitham yena tasmai shrI gurave namah || ||2||

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः ।
गुरुसाक्षात् परं-ब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥ ॥३॥

gururbramhA gururvishnu gururdevo maheshvarah |
gurusAkshAt param-bramha tasmai shrI gurave namah || ||3||

स्थावरं जंगमं व्याप्तं यत्किञ्चित् सचराचरम् ।
तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥ ॥४॥

sthAvaram jangamam vyAptam yatkincit sacarAcaram |
tatpadam darshitam yena tasmai shrI gurave namah || ||4||

नित्यानन्दम् व्यापि-यत्सर्वम् त्रैलोक्यं सचराचरम् ।
तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥ ॥५॥

nityAnandam vyApi-yatsarvam trilokyam sacarAcaram |
tatpadam darshitam yena tasmai shrI gurave namah || ||5||

सर्वश्रुतिशिरोरत्न विराजितपदाम्बुजः ।
वेदान्ताम्बुजसुर्यो यः तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥ ॥६॥

sarvashruti-shiroratna virAjita padAmbujah |
vedAntAmbuja suryo yah tasmai shrI gurave namah || ||6||

चैतन्यः शाश्वतं शान्तं व्योमातीतं निरञ्जनम् ।
नादबिन्दुकलातीतं तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥ ॥७॥

caitanyah shashvatam shantam vyomAtItam niranjanam |
nAdabindu kalAtItam tasmai shrI gurave namah || ||7||

ज्ञानशक्तिसमारूढः तत्त्वमालाविभूषितः ।
भुक्तिमुक्तिप्रदाता च तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥ ॥८॥

jnyAnashakti samArUdah tattva mAlA vibhUs.itah |
bhukti mukti pradAtA ca tasmai shrI gurave namah || ||8||

अनेकजन्मसम्प्राप्तकर्मबन्धविदाहिने ।
आत्मज्ञानप्रदानेन तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥ ॥९॥

aneka janma samprApta karma bandha vidAhine |
Atma jnyAna pradAnena tasmai shrI gurave namah || ||9||

शोषणं भवसिन्धोश्च ज्ञापनं सारसम्पदः ।
गुरुपादोदकं सम्यक् तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥ ॥१०॥

shos.anam bhava sindhoshca jnyapanam sArasampadah |
gurupAdodakam samyak tasmai shrI gurave namah || ||10||

न गुरोरधिकं तत्वं न गुरोरधिकं तपः ।
तत्व ज्ञानात्परं नास्ति तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥ ॥११॥

na guroradhikam tattvam na guroradhikam tapah |
tattva jnyAnAth-param nAsti tasmai shrI gurave namah || ||11||

मन्नाथः श्रीजगन्नाथो मद्गुरुः श्रीजगद्गुरुः ।
ममात्मा सर्वभूतात्मा तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥ ॥१२॥

mannAthah shrI jagannAtho madguruh shrI jagadguruh |
mamAtmA sarva-bhUtAtma tasmai shrI gurave namah || ||12||

ब्रह्मानन्दं परमसुखदं केवलं ज्ञानमूर्तिं ।
द्वन्द्वातीतं गगनसदृशं तत्त्वमस्यादिलक्ष्यम् ॥ ॥१३॥

brahmAnandam paramasukhadam kevalam jnyAnamUrtim |
dvandvatItam gaganasadrusham tattvamasyadi-lakshyam || ||13||

एकं नित्यं विमलमचलं सर्वधीसाक्षिभूतं ।
भावातीतं त्रिगुणरहितं सद्गुरुं तं नमामि ॥ ॥१४॥

ekam nityam vimalamacalam sarvadhI sAkshi bhUtam |
bhAvAtItam triguna rahitam sadgurum tam namami || ||14||

नित्यं शुद्धं निराभासं निराकारं निरंजनम् ।
नित्यबोधं चिदानन्दं गुरुर्ब्रह्म नमाम्यहम् ॥ ॥१५॥

nityam shuddam nirAbhAsam nirAkAram niranjanam |
nityabodham cidAnandam gururbrahmA namAmyaham || ||15||

ध्यानमूलं गुरोर्मूर्तिः पूजामूलं गुरोःपदम् ।
मंत्रमूलं गुरोर्वाक्यं मोक्षमूलं गुरोः कृपा ॥ ॥१६॥

dhyana mUlam gurormUrtih pUjA mUlam guroh padam |
mantra mUlam guror-vAkyam moksha mUlam guroh krupA || ||16||

त्वमेव माता च पिता त्वमेव त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव ।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव त्वमेव सर्वम् मम देवदेव ॥ ॥१७॥

tvameva mAtA ca pitA tvameva |
tvameva bandhUshca sakhA tvameva |
tvameva vidyA dravinam tvameva |
tvameva sarvam mama deva deva || ||17||

॥ इति गुरु स्तुति सम्पूर्णम् ॥

|| shri guru stotr.am sampUrNam ||

॥ सिद्ध कुञ्जिकास्तोत्रम् ॥

॥ siddha kuny.jikA stotr.am ॥

शिव उवाच ॥

शृणु देवि प्रवक्ष्यामि कुञ्जिकास्तोत्रमुत्तमम् ।
येन मन्त्रप्रभावेण चण्डीजापः शुभो भवेत् ॥ ॥१॥

shiva uvAca ॥

shruNu devi pravakshyAmi kunyjikA-stotra-muttamam ।
yena mantr.aprabhAveNa caNDI jApah shubho bhavet ॥ ॥1॥

न कवचं नार्गलास्तोत्रं कीलकं न रहस्यकम् ।
न सूक्तं नापि ध्यानं च न न्यासो न च वार्चनम् ॥ ॥२॥

na kavacam nArgalAstotr.am kIlakam na rahasyakam ।
na sUktam nApi dhyAnam ca na nyAso na ca vArcanam ॥ ॥2॥

कुञ्जिकापाठमात्रेण दुर्गापाठफलं लभेत् ।
अति गुह्यतरं देवि देवानामपि दुर्लभम् ॥ ॥३॥

kunyjikA-pATha-mAtr.eNa durgApATha-phalam labhet ।
ati-guhyataram devi devAnAmapi durlabham ॥ ॥3॥

गोपनीयं प्रयत्नेन स्वयोनिरिव पार्वति ।
मारणं मोहनं वश्यं स्तम्भनोच्चाटनादिकम् ।
पाठमात्रेण संसिद्धयेत् कुञ्जिकास्तोत्रमुत्तमम् ॥ ॥४॥

gopanIyam prayatnena svayoniriva pArvati ।
mAraNam mohanam vashyam stambhanoccAtanAdikam ।
pATha-mAtr.ena samsidhdyet kunyjikAstotr.a-muttamam ॥ ॥4॥

अथ मन्त्रः ॥

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे । ॐ ग्लौं हुं क्लीं जूं सः ।
ज्वालय ज्वालय ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल ।
ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे । ज्वल हं सं लं क्षं फट् स्वाहा ॥
इतिमन्त्रः ॥ ॥१॥

atha mantr.ah ॥

om aim hrIm klIm cAmuNdAyai vicce ।
om glaum hum klIm jUm sah ।
jvAlaya jvAlaya jvala jvala prajvala prajvala ।
aim hrIm klIm cAmuNdAyai vicce ।
jvala ham-sam-lam-ksham phat swAhA ॥
ithi mantr.ah ॥ ॥1॥

नमस्ते रुद्ररूपिण्यै नमस्ते मधुमर्दिनि ।
नमः कैटभहारिण्यै नमस्ते महिषार्दिनि ॥ ॥२॥

namaste rudrarUpiNyai namaste madhumardini ।
namah kaitabhahAriNyai namaste mahis.Ardini ॥ ॥2॥

नमस्ते शुम्भहन्त्र्यै च निशुम्भासुरघातिनि ।
जाग्रतं हि महादेवि जपं सिद्धिं कुरुष्व मे ॥ ॥३॥

namaste shumbha-hantryai ca nishumbhAasuraghAtini |
jAgratam hi mahAdevi japam sidhdim kurus.va me || ||3||

ऐंकारी सृष्टिरूपायै ह्रींकारी प्रतिपालिका ।
क्लींकारी कामरूपिण्यै बीजरूपे नमोऽस्तु ते ॥ ॥४॥

aim-kAri srushtirupAyai hrIm-kAri pratipAlikA |
klIm-kAri kAmarUpiNyai bIjarUpe namo'astu te || ||4||

चामुण्डा चण्डघाती च यैकारी वरदायिनी ।
विच्चे चाऽभयदा नित्यं नमस्ते मन्त्ररूपिणि ॥ ॥५॥

cAmuNdA caNDaghAti ca yai-kAri varadAyinI |
vicce cA'bhayadA nityam namaste mantr.arupiNI || ||5||

धां धीं धूं धूर्जटेः पत्नी वां वीं वूं वागधीश्वरी ।
क्रां क्रीं क्रूं कालिका देवि शां शीं शूं मे शुभं कुरू ॥ ॥६॥

dhAm dhIm dhUm dhUrjaTeh patnI
vAm vIm vUm vAghadhIshvarI |
krAm krIm krUm kAlikA devi
shAm shIm shUm me shubham kurU || ||6||

हुं हुं हुं हुंकाररूपिण्यै जं जं जं जम्भनादिनी ।
भ्रां भ्रीं भ्रूं भैरवी भद्रे भवान्यै ते नमो नमः ॥ ॥७॥

hum hum hum hUmkAra-rUpiNyai jam jam jam jambhanAdinI |
bhrAm bhrIm bhrUm bhairavI bhadre bhavAnyai te namo namah ||
||7||

अं कं चं टं तं पं यं शं वीं दुं ऐं वीं हं क्षं ।
धिजाग्रं धिजाग्रं त्रोटय त्रोटय दीप्तं कुरु कुरु स्वाहा ॥ ॥८॥

am kam cam Tam tam pam yam sham
vIm dum aim vIm ham ksham |
dhijAgram dhijAgram tr.oTaya tr.oTaya
dIptam kuru kuru swAhA || ||8||

पां पीं पूं पार्वती पूर्णा खां खीं खूं खेचरी तथा ।
सां सीं सूं सप्तशती देव्या मन्त्रसिद्धिं कुरुष्व मे ॥ ॥९॥

pAm pIm pUm pArvathI pUrNA
khAm khIm khUm khecarI tathA |
sAm sIm sUm saptashati devyA
mantr.a sidhdim kurushva me || ||9||

इदं तु कुञ्जिकास्तोत्रं मन्त्रजार्गतिहेतवे ।
अभक्ते नैव दातव्यं गोपितं रक्ष पार्वति ॥ ॥१०॥

idam tu kunyjikAstotr.am mantr.a jAgratirhetave |
abhakte naiva dAtavyam gopitam raksha pArvati || ||10||

यस्तु कुञ्जिकया देवि हीनां सप्तशतीं पठेत् ।
न तस्य जायते सिद्धिररण्ये रोदनं यथा ॥ ॥११॥

yasthu kunyjikayA devi hInAm saptashatIm paThet |
na tasya jAyate sidhdiraraNye rodanam yathA || ||11||

॥ इति श्रीरुद्रयामले गौरीतन्त्रे शिवपार्वतीसंवादे
कुञ्जिकास्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

॥ ॐ श्री दुर्गार्पणमस्तु ॥

|| iti shrI rudrayAmale gowri tantr.e shivapArvatI samvAde
kunjikAstotr.am sampUrnam ||
|| om shrI durgArpaNamastu ||

श्रीदुर्गासप्तशती बीजमन्त्रात्मक साधना

SHRI DURGA SAPTASHATI

Beej mantr.Aatmaka sAdhana

॥ ॐ श्री गणेशाय नमः ॥

|| Om shrI GaNeshAy namah ||

ॐ ऐं आत्मतत्त्वं शोधयामि नमः स्वाहा ।

om aim Atmatattvam shodhayAami namah swAhA |

ॐ ह्रीं विद्यातत्त्वं शोधयामि नमः स्वाहा ।

om hrIm vidyAtattvam shodhayAami namah swAhA |

ॐ क्लीं शिवतत्त्वं शोधयामि नमः स्वाहा ।

om klIm shivatattvam shodhayAami namah swAhA |

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं सर्वतत्त्वं शोधयामि नमः स्वाहा ॥

om aim hrIm klIm sarvatatvam shodhayAami namah swAhA |

॥ मृत संजीवनी मंत्र ॥

|| mrit-sanjIvani Mantr.a ||

ॐ ह्रीं ह्रीं वं वं ऐं ऐं मृतसंजीवनि विद्ये ।

om hrIm hrIm vam vam aim aim mrit-sanjIvani vidhye |

मृतमुत्थापयोत्थापय क्रीं ह्रीं ह्रीं वं स्वाहा ॥

mrit-mutthApayo-tthAapaya krIm hrIm hrIm vam swAhA

॥ शाप विमोचन स्तोत्रम् ॥

|| shApa vimocana stotr.am ||

ॐ । अस्य श्रीचण्डिकाया । ब्रह्म-वसिष्ठ-विश्वामित्र शापविमोचन मन्त्रस्य । वसिष्ठ-नारद संवाद । सामवेदाधिपति ब्रह्माण ऋषयः । सर्वैश्वर्यकारिणी श्रीदुर्गा देवता । चरित्रत्रयं बीजं । ह्रीं शक्तिः । त्रिगुणात्मस्वरूप चण्डिका शापविमुक्तौ । मम संकल्पित कार्यसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः ॥

Om | asya shrI canDikAyA | brahma-vasis.Tha-vishvAmitr.a shApa-vimocana mantr.asya | vasis.Tha-nArada-samvAda | sAmavedAdhipati brahmANa Rs.ayah | sarvaishvaryakAriNI shrIdurgA devatA | caritr.atr.ayam bIjam | hrIm shaktih | triguNAtmasvarUpa caNdikA shApavimuktau | mama sankalpita kAryasidhyarthe jape viniyogah ||

ॐ (ह्रीं) रीं रेतः स्वरूपिण्यै मधुकैटभमर्दिन्यै ।
ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्र शापाद् विमुक्ता भव ॥ ॥१॥

om (hrIm) rIm retah swarUpiNyai
madhukaiTabha-mardinyai |
brahma vasis.Tha vishwAmitra
shApAd vimuktA bhava || ||1||

ॐ श्रीं बुद्धिस्वरूपिण्यै महिषासुरसैन्यनाशिन्यै ।
ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्र शापाद् विमुक्ता भव ॥ ॥२॥

om shrIm budhdi-swarUpiNyai
mahis.Asura-sainya-nAshinyai |
brahma vasis.Tha vishwAmitra
shApAd vimuktA bhava || ||2||

ॐ रं रक्तस्वरूपिण्यै महिषासुरमर्दिन्यै ।
ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्र शापाद् विमुक्ता भव ॥ ॥३॥

om ram rakta-swarUpiNyai
mahis.asura-mardinyai |
brahma vasis.Tha vishwAmitra
shApAd vimuktA bhava || ||3||

ॐ क्षुं क्षुधास्वरूपिण्यै देववन्दितायै ।
ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्र शापाद् विमुक्ता भव ॥ ॥४॥

om kshum kshudhA-swarUpiNyai
deva-vanditAyai |
brahma vasis.Tha vishwAmitra
shApAd vimuktA bhava || ||4||

ॐ छां छायास्वरूपिण्यै दूतसंवादिन्यै ।
ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्र शापाद् विमुक्ता भव ॥ ॥५॥

om chAm chAyA swarUpiNyai
dUta-samvAdinyai |
brahma vasis.Tha vishwAmitra
shApAd vimuktA bhava || ||5||

ॐ शं शक्तिस्वरूपिण्यै धूम्रलोचनघातिन्यै ।
ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्र शापाद् विमुक्ता भव ॥ ॥६॥

om sham shakti swarUpiNyai
dhUmralocana-ghAtiNyai |
brahma vasis.Tha vishwAmitra
shApAd vimuktA bhava || ||6||

ॐ तृं तृषास्वरूपिण्यै चण्डमुण्डवधकारिण्यै ।
ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्र शापाद् विमुक्ता भव ॥ ॥७॥

om trum trushA swarUpiNyai
canDamuNDda-vadhakAriNyai |
brahma vasis.Tha vishwAmitra
shApAd vimuktA bhava || ||7||

ॐ क्षां क्षान्तिस्वरूपिण्यै रक्तबीजवधकारिण्यै ।
ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्र शापाद् विमुक्ता भव ॥ ॥८॥

om kshAm kshAnti swarUpiNyai
rakta-bIja-vadhakAriNyai |
brahma vasis.Tha vishwAmitra
shApAd vimuktA bhava || ||8||

ॐ जां जातिस्वरूपिण्यै निशुम्भवधकारिण्यै ।
ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्र शापाद् विमुक्ता भव ॥ ॥९॥

om jAm jAtiswarUpiNyai
nishumbha-vadhakAriNyai |
brahma vasis.Tha vishwAmitra
shApAd vimuktA bhava || ||9||

ॐ लं लज्जास्वरूपिण्यै शुम्भवधकारिण्यै ।
ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्र शापाद् विमुक्ता भव ॥ ॥१०॥

om lam lajjAswarUpiNyai
shumbha-vadhkAriNyai |
brahma vasis.Tha vishwamitra
shApad vimuktha bhava || ||10||

ॐ शां शान्तिस्वरूपिण्यै देवस्तुत्यै ।
ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्र शापाद् विमुक्ता भव ॥ ॥११॥

om shAm shAnti swarUpiNyai devastutyai |
brahma vasis.Tha vishwAmitra shApAd vimuktA bhava || ||11||

ॐ श्रं श्रद्धास्वरूपिण्यै सकलफलदात्र्यै ।
ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्र शापाद् विमुक्ता भव ॥ ॥१२॥

om shrAm shradhdA-swarUpiNyai
sakala-phala-dAtrai |
brahma vasis.Tha vishwAmitra
shApAd vimuktA bhava || ||12||

ॐ कां कान्तिस्वरूपिण्यै राजवरप्रदायै ।
ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्र शापाद् विमुक्ता भव ॥ ॥१३॥

om kAm kAnti swarUpiNyai
rAjavara-pradAyai |
brahma vasis.Tha vishwAmitra
shApAd vimuktA bhava || ||13||

ॐ मां मातृस्वरूपिण्यै अनर्गलमहिमसहितायै ।
ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्र शापाद् विमुक्ता भव ॥ ॥१४॥

om mAm mAtru-swarUpiNyai
anargala-mahima-sahitAyai |
brahma vasis.Tha vishwAmitra
shApAd vimuktA bhava || ||14||

ॐ ह्रीं श्रीं दुं दुर्गायै सं सर्वैश्वर्यकारिण्यै ।
ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्र शापाद् विमुक्ता भव ॥ ॥१५॥

om hrIm shrIm dum durgAyai
sam sarvaishvarya-kAriNyai |
brahma vasis.Tha vishwAmitra
shApAd vimuktA bhava || ||15||

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नमः शिवायै अभेद्य कवचस्वरूपिण्यै ।
ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्र शापाद् विमुक्ता भव ॥ ॥१६॥

om aim hrIm klIm namah shivAyai
abhedhya-kavaca swarUpiNyai |
brahma vasis.Tha vishwAmitra
shApAd vimuktA bhava || ||16||

ॐ क्रीं काल्यै कालि ह्रीं फट् स्वाहायै ऋग्वेदस्वरूपिण्यै ।
ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्र शापाद् विमुक्ता भव ॥ ॥१७॥

om krIm kAlyai kAli hrIm phat swahAyai
rigveda-swaropiNyai |
brahma vasis.Tha vishwAmitra
shApAd vimuktA bhava || ||17||

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं महाकाली महालक्ष्मी महासरस्वती स्वरूपिण्यै ।
त्रिगुणात्मिकायै दुर्गादेव्यै नमः ॥ ॥१८॥

om aim hrIm klIm mahAkAli mahAlakshmi
mahAsaraswati swarUpiNyai |
tri-gunAtmikAyai durgA-devyai namah || ||18||

॥ इति शाप विमोचन स्तोत्रम् सम्पूर्णम् ॥

||iti shApa vimocana stotr.am sampUrNam||

॥ ॐ श्री दुर्गार्पणमस्तु ॥

||om shrI durgArpaNamastu||

॥ अथः प्रथमचरित्रम् ॥

atha prathamacaritr.am

विनियोगः ॥

ॐ । अस्य श्री प्रथमचरित्रस्य । ब्रह्मा ऋषिः । महाकाली देवता । गायत्री छन्दः । नन्दा शक्तिः । रक्तदन्तिका बीजम् । अग्निस्तत्त्वम् । ऋग्वेदः स्वरूपम् । श्रीमहाकाली प्रीत्यर्थे । प्रथमचरित्र जपे विनियोगः ॥

viniyogah ॥

Om | asya shrI prathamacaritr.asya | brahmA Rs.ih | mahAkAlI devatA | gAyatr.I chandah | nandA shaktih | raktadantikA bIjam | agnistatvam | R.gvedah svarUpam | shrI mahAkAlIprItyarthe | prathama caritr.a jape viniyogah ||

I now recite the first Charitra for the pleasure of the Divine Mother MahAkAli – Bramha being the seer, MahAkAli being the diety, Gayatri being the meter, Nanda being the energy, Raktadantika being the seed, Fire being the element, Rig veda being the form.

महाकाली ध्यानम् ॥

ॐ खड्गं चक्रगदेषुचापपरिघाञ्छूलं भुशुण्डीं शिरः
शङ्खं संदधतीं करैस्त्रिनयनां सर्वाङ्गभूषावृताम् ॥
नीलाश्मद्युतिमास्यपाददशकां सेवे महाकालिकां
यामस्तौत्स्वपिते हरौ कमलजो हन्तुं मधुं कैटभम्

भगवान् विष्णु के सो जाने पर मधु कैटभ को मारने के लिये कमलजन्मा ब्रह्माजी ने जिसका स्तवन (स्तुति) किया, उन महाकाली देवी का मैं स्तवन करता हूँ। वे अपने दस हाथों में खड्ग, चक्र, गदा, बाण, धनुष, परिघ, शूल, भुशुण्डि, मस्तक और शङ्ख धारण किये हुये हैं। उनके तीन नेत्र हैं। वे समस्त अङ्गों में दिव्य आभूषणों से सुशोभित हैं। उनके शरीर की कान्ति नीलमणि के समान है तथा वे दसमुख और दस पैरों से युक्त हैं।

mahAkAlI dhyAnam ॥

Om khadgam cakragades.u-cApaparghan shUlam bhushunDIm shirah ।
Shankham sandadhatIm karaistrinayanAm sarvAngabhUshAvrutAm ।
yAm hanthum madhukaiTabhau jalajabhUstus.tAva supte harau ।
nIlAshmadyutimAsyapAdadashakAm seve mahAkAlikAm ॥

She who holds in her hands the Sword, Discuss, Mace, Arrows, Bow, Club, Spear, Missile, Skull, and Conch;

She who is three eyed, and is bedecked with ornaments on all her limbs;

She who Bramha praised in order to destroy Madhu and Kaitabha when Lord Vishnu was in yogic trance;

She who is lustrous as a blue jewel, She who is endowed with ten faces and ten legs;

..........: I meditate on that Divine Mother MahAkAli

* The weapons of MahAkAli signify her immense power. By obtaining her grace, we are able to destroy the myriad karmas and impurities collected within us.

अध्याय १ - मधु-कैटभ-वधः

1 - Slaying of madhu and kaiTabha

॥ ॐ बीजत्रयायै विद्महे तत्प्रधानायै धीमहि तन्नः शक्ति प्रचोदयात् ॥

॥ om bIjatr.ayAyai vidmahE
tatpradhAnAyai dhImahi tannah shakti pracodayAt ॥

ॐ ऐं श्रीं नमः १	1 om aim **shrIm** namah
ॐ ऐं ह्रीं नमः २	2 om aim **hrIm** namah
ॐ ऐं क्लीं नमः ३	3 om aim **klIm** namah
ॐ ऐं श्रीं नमः ४	4 om aim **shrIm** namah
ॐ ऐं प्रीं नमः ५	5 om aim **prIm** namah
ॐ ऐं ह्रां नमः ६	6 om aim **hrAm** namah
ॐ ऐं ह्रीं नमः ७	7 om aim **hrIm** namah
ॐ ऐं सौं नमः ८	8 om aim **saum** namah
ॐ ऐं प्रें नमः ९	9 om aim **prem** namah
ॐ ऐं म्रें नमः १०	10 om aim **mrem** namah
ॐ ऐं ल्ह्रीं नमः ११	11 om aim **lhrIm** namah
ॐ ऐं म्लीं नमः १२	12 om aim **mlIm** namah
ॐ ऐं स्त्रीं नमः १३	13 om aim **strIm** namah
ॐ ऐं क्रां नमः १४	14 om aim **krAm** namah
ॐ ऐं स्ल्हीं नमः १५	15 om aim **slhIm** namah
ॐ ऐं क्रीं नमः १६	16 om aim **krIm** namah
ॐ ऐं चां नमः १७	17 om aim **cAm** namah
ॐ ऐं भें नमः १८	18 om aim **bhem** namah
ॐ ऐं क्रीं नमः १९	19 om aim **krIm** namah
ॐ ऐं वैं नमः २०	20 om aim **vaim** namah
ॐ ऐं ह्रौं नमः २१	21 om aim **hraum** namah
ॐ ऐं युं नमः २२	22 om aim **yum** namah
ॐ ऐं जुं नमः २३	23 om aim **jum** namah
ॐ ऐं हं नमः २४	24 om aim **ham** namah
ॐ ऐं शं नमः २५	25 om aim **sham** namah
ॐ ऐं रौं नमः २६	26 om aim **raum** namah
ॐ ऐं यं नमः २७	27 om aim **yam** namah
ॐ ऐं विं नमः २८	28 om aim **vim** namah
ॐ ऐं वैं नमः २९	29 om aim **vaim** namah
ॐ ऐं चें नमः ३०	30 om aim **cem** namah
ॐ ऐं ह्रीं नमः ३१	31 om aim **hrIm** namah
ॐ ऐं क्रं नमः ३२	32 om aim **kram** namah
ॐ ऐं सं नमः ३३	33 om aim **sam** namah

ॐ	ऐं	कं	नमः	३४	34	om	aim	***kam***	*namah*
ॐ	ऐं	श्रीं	नमः	३५	35	om	aim	***shrIm***	*namah*
ॐ	ऐं	त्रों	नमः	३६	36	om	aim	***tr.om***	*namah*
ॐ	ऐं	स्त्रां	नमः	३७	37	om	aim	***strAm***	*namah*
ॐ	ऐं	ज्यैं	नमः	३८	38	om	aim	***jyaim***	*namah*
ॐ	ऐं	रौं	नमः	३९	39	om	aim	***raum***	*namah*
ॐ	ऐं	द्रां	नमः	४०	40	om	aim	***drAm***	*namah*
ॐ	ऐं	द्रों	नमः	४१	41	om	aim	***drom***	*namah*
ॐ	ऐं	ह्रां	नमः	४२	42	om	aim	***hrAm***	*namah*
ॐ	ऐं	द्रूं	नमः	४३	43	om	aim	***drUm***	*namah*
ॐ	ऐं	शां	नमः	४४	44	om	aim	***shAm***	*namah*
ॐ	ऐं	म्रीं	नमः	४५	45	om	aim	***mrIm***	*namah*
ॐ	ऐं	श्रौं	नमः	४६	46	om	aim	***shraum***	*namah*
ॐ	ऐं	जूं	नमः	४७	47	om	aim	***jUm***	*namah*
ॐ	ऐं	ल्ह्रूं	नमः	४८	48	om	aim	***lhrUm***	*namah*
ॐ	ऐं	श्रूं	नमः	४९	49	om	aim	***shrUm***	*namah*
ॐ	ऐं	प्रीं	नमः	५०	50	om	aim	***prIm***	*namah*
ॐ	ऐं	रं	नमः	५१	51	om	aim	***ram***	*namah*

ॐ	ऐं	वं	नमः	५२	52	om	aim	***vam***	*namah*
ॐ	ऐं	व्रीं	नमः	५३	53	om	aim	***vrIm***	*namah*
ॐ	ऐं	ब्लूं	नमः	५४	54	om	aim	***blUm***	*namah*
ॐ	ऐं	स्त्रौं	नमः	५५	55	om	aim	***str.aum***	*namah*
ॐ	ऐं	ब्लां	नमः	५६	56	om	aim	***blAm***	*namah*
ॐ	ऐं	लूं	नमः	५७	57	om	aim	***lUm***	*namah*
ॐ	ऐं	सां	नमः	५८	58	om	aim	***sAm***	*namah*
ॐ	ऐं	रौं	नमः	५९	59	om	aim	***raum***	*namah*
ॐ	ऐं	हसौं	नमः	६०	60	om	aim	***hsaum***	*namah*
ॐ	ऐं	क्रूं	नमः	६१	61	om	aim	***krUm***	*namah*
ॐ	ऐं	शौं	नमः	६२	62	om	aim	***shaum***	*namah*
ॐ	ऐं	श्रौं	नमः	६३	63	om	aim	***shraum***	*namah*
ॐ	ऐं	वं	नमः	६४	64	om	aim	***vam***	*namah*
ॐ	ऐं	त्रूं	नमः	६५	65	om	aim	***tr.Um***	*namah*
ॐ	ऐं	क्रौं	नमः	६६	66	om	aim	***kraum***	*namah*
ॐ	ऐं	क्लूं	नमः	६७	67	om	aim	***klUm***	*namah*
ॐ	ऐं	क्लीं	नमः	६८	68	om	aim	***klIm***	*namah*
ॐ	ऐं	श्रीं	नमः	६९	69	om	aim	***shrIm***	*namah*

ॐ	ऐं	व्लूं	नमः ७०	70	om aim *vlUm*	namah
ॐ	ऐं	ठां	नमः ७१	71	om aim *ThAm*	namah
ॐ	ऐं	ठ्रीं	नमः ७२	72	om aim *ThrIm*	namah
ॐ	ऐं	स्त्रां	नमः ७३	73	om aim *str.Am*	namah
ॐ	ऐं	स्लूं	नमः ७४	74	om aim *slUm*	namah
ॐ	ऐं	क्रैं	नमः ७५	75	om aim *kraim*	namah
ॐ	ऐं	च्रां	नमः ७६	76	om aim *crAm*	namah
ॐ	ऐं	फ्रां	नमः ७७	77	om aim *phrAm*	namah
ॐ	ऐं	जीं	नमः ७८	78	om aim *jIm*	namah
ॐ	ऐं	लूं	नमः ७९	79	om aim *lUm*	namah
ॐ	ऐं	स्लूं	नमः ८०	80	om aim *slUm*	namah
ॐ	ऐं	नों	नमः ८१	81	om aim *nom*	namah
ॐ	ऐं	स्त्रीं	नमः ८२	82	om aim *str.Im*	namah
ॐ	ऐं	प्रूं	नमः ८३	83	om aim *prUm*	namah
ॐ	ऐं	स्त्रूं	नमः ८४	84	om aim *str.Um*	namah
ॐ	ऐं	ज्रां	नमः ८५	85	om aim *jrAm*	namah
ॐ	ऐं	वौं	नमः ८६	86	om aim *vaum*	namah
ॐ	ऐं	ॐ	नमः ८७	87	om aim *om*	namah

ॐ	ऐं	श्रौं	नमः ८८	88	om aim *shraum*	namah
ॐ	ऐं	ऋं	नमः ८९	89	om aim *R.m*	namah
ॐ	ऐं	रूं	नमः ९०	90	om aim *rUm*	namah
ॐ	ऐं	क्लीं	नमः ९१	91	om aim *klIm*	namah
ॐ	ऐं	दुं	नमः ९२	92	om aim *dum*	namah
ॐ	ऐं	ह्रीं	नमः ९३	93	om aim *hrIm*	namah
ॐ	ऐं	गूं	नमः ९४	94	om aim *gUm*	namah
ॐ	ऐं	लां	नमः ९५	95	om aim *lAm*	namah
ॐ	ऐं	ह्रां	नमः ९६	96	om aim *hrAm*	namah
ॐ	ऐं	गं	नमः ९७	97	om aim *gam*	namah
ॐ	ऐं	ऐं	नमः ९८	98	om aim *aim*	namah
ॐ	ऐं	श्रौं	नमः ९९	99	om aim *shraum*	namah
ॐ	ऐं	जूं	नमः १००	100	om aim *jUm*	namah
ॐ	ऐं	डें	नमः १०१	101	om aim *DEm*	namah
ॐ	ऐं	श्रौं	नमः १०२	102	om aim *shraum*	namah
ॐ	ऐं	छ्रां	नमः १०३	103	om aim *chrAm*	namah
ॐ	ऐं	क्लीं	नमः १०४	104	om aim *klIm*	namah

|| इति प्रथमोऽध्यायः ||

|| iti prathamo dhyAyah ||

|| ॐ श्री दुर्गार्पणमस्तु ||

|| om shrI durgArpaNamastu ||

अथ मध्यमचरित्रम्

atha madhyama caritr.am

विनियोगः ॥

ॐ । अस्य श्री मध्यमचरित्रस्य । विष्णुर्ऋषिः । महालक्ष्मीर्देवता । उष्णिव
छन्दः । शाकम्भरी शक्तिः । दुर्गा बीजम् । वायुस्तत्त्वम् । यजुर्वेदः स्वरूपम्
श्रीमहालक्ष्मी प्रीत्यर्थे । मध्यमचरित्र जपे विनियोगः ॥

viniyogah ||

Om | madhyama caritr.asya | vis.NuRs.ih | mahAlakshmIr-devatA vus.Nikchandah | shAkambarI shaktih | durgA bIjam | vAyustatvam yajurvedah svarUpam | shrI mahAlaksmI prItyarthe madhyamacaritr.a jape viniyogah ||

I now recite the middle Charitra for the pleasure of the Divine Mother MahAlaksmI – Vishnu being the seer, MahAlakshmI being the diety, Ushnik being the meter, Shakambari being the energy, DurgA being the seed, Air being the element, Yajur veda being the form.

श्रीमहालक्ष्मी ध्यानम् ॥

ॐ अक्षस्रक्परशुं गदेषुकुलिशं पद्मं धनुष्कुण्डिकां
दण्डं शक्तिमसिं च चर्म जलजं घण्टां सुराभाजनम् ।
शूलं पाशसुदर्शने च दधतीं हस्तैः प्रसन्नाननां
सेवे सैरिभमर्दिनीमिह महालक्ष्मीं सरोजस्थिताम् ॥

मै कमल के आसन पर बैठी हुई प्रसन्न मुखवाली महिषासुरमर्दिनी भगवती महालक्ष्मी का ध्यान करता हूँ, जो अपने हाथों में अक्षमाला, फरसा, गदा, बाण, वज्र, पद्म, धनुष, कुण्डिका, दण्ड, शक्ति, खड्ग, ढाल, शङ्ख, घण्टा, मधुपात्र, शूल, पाश और चक्र धारण किये हुये हैं।

॥ ॐ नमश्चण्डिकायै ॥

shrImahAlakshmI dhyAnam ||

*Om akshasrakparashum gades.ukulisham padmam dhanuh kuDikAm |
daNDam shaktimasim ca carma jalajam ghamTAm surAbhAjanam |
shUlam pAshasudarshane ca dadhatIm hastaih pravAlaprabhAm |
seve sairibhamardinImiha mahAlakshmIm sarojasthitAm ||*

She who holds in her hands the Rosary, the Axe, Club, Arrows, Thunderbolt, Lotus, Bow, and Pitcher;

As also the Staff, Shakti, Sword, Shield, Conch, Bell, Nectar cup, Trident, Noose, and the Discuss;

She whose skin is of the colour of coral, She of the resplendent appearance;

The destroyer of MahishAsurA, She who is seated on the Lotus;

I meditate on that Divine Mother MahAlakshmI

The lotus seat of MahAlakshmI symbolises the unfolding of material abundance and spiritual progress. Through devotion to Her, we are blessed with all Divine qualities.

|| Om namah caNDikAyai ||

अध्याय २ - महिषासुर सैन्य वधः

2 - Slaughter of the armies of mahis.Asur

|| ॐ बीजत्रयायै विद्महे तत्प्रधानायै धीमहि तन्नः शक्ति प्रचोदयात् ||

|| om bIjatr.ayAyai vidmahE
tatpradhAnAyai dhImahi tannah shakti pracodayAt ||

ॐ ऐं श्रौं	नमः १	1	om aim shraum	nama
ॐ ऐं श्रीं	नमः २	2	om aim shrIm	nama
ॐ ऐं ह्सूं	नमः ३	3	om aim hsUm	nama
ॐ ऐं हौं	नमः ४	4	om aim haum	nama
ॐ ऐं ह्रीं	नमः ५	5	om aim hrIm	nama
ॐ ऐं अं	नमः ६	6	om aim am	nama
ॐ ऐं क्लीं	नमः ७	7	om aim klIm	nama
ॐ ऐं चां	नमः ८	8	om aim cAm	nama
ॐ ऐं मुं	नमः ९	9	om aim mum	nama
ॐ ऐं डां	नमः १०	10	om aim DAm	nama
ॐ ऐं यैं	नमः ११	11	om aim yaim	nama
ॐ ऐं विं	नमः १२	12	om aim vim	nama
ॐ ऐं च्वें	नमः १३	13	om aim ccEm	nama

ऐं ईं	नमः १४	14	om aim Im	namah
ऐं सौं	नमः १५	15	om aim saum	namah
ऐं व्रां	नमः १६	16	om aim vrAm	namah
ऐं त्रौं	नमः १७	17	om aim traum	namah
ऐं लूं	नमः १८	18	om aim lUm	namah
ऐं वं	नमः १९	19	om aim vam	namah
ऐं ह्रां	नमः २०	20	om aim hrAm	namah
ऐं क्रीं	नमः २१	21	om aim krIm	namah
ऐं सौं	नमः २२	22	om aim saum	namah
ऐं यं	नमः २३	23	om aim yam	namah
ऐं ऐं	नमः २४	24	om aim aim	namah
ऐं मूं	नमः २५	25	om aim mUm	namah
ऐं सः	नमः २६	26	om aim sah	namah
ऐं हं	नमः २७	27	om aim ham	namah
ऐं सं	नमः २८	28	om aim sam	namah
ऐं सों	नमः २९	29	om aim som	namah
ऐं शं	नमः ३०	30	om aim sham	namah
ऐं हं	नमः ३१	31	om aim ham	namah
ऐं ह्रौं	नमः ३२	32	om aim hraum	namah

ॐ	ऐं	म्लीं	नमः	३३	33	om	aim	**mlIm**	namah
ॐ	ऐं	यूं	नमः	३४	34	om	aim	**yUm**	namah
ॐ	ऐं	त्रूं	नमः	३५	35	om	aim	**tr.Um**	namah
ॐ	ऐं	स्त्रीं	नमः	३६	36	om	aim	**str.Im**	namah
ॐ	ऐं	आं	नमः	३७	37	om	aim	**Am**	namah
ॐ	ऐं	प्रें	नमः	३८	38	om	aim	**prEm**	namah
ॐ	ऐं	शं	नमः	३९	39	om	aim	**sham**	namah
ॐ	ऐं	ह्रां	नमः	४०	40	om	aim	**hrAm**	namah
ॐ	ऐं	स्मूं	नमः	४१	41	om	aim	**smUm**	namah
ॐ	ऐं	ऊं	नमः	४२	42	om	aim	**Um**	namah
ॐ	ऐं	गूं	नमः	४३	43	om	aim	**gUm**	namah
ॐ	ऐं	व्य्रूं	नमः	४४	44	om	aim	**vyrUm**	namah
ॐ	ऐं	ह्रूं	नमः	४५	45	om	aim	**hrUm**	namah
ॐ	ऐं	भैं	नमः	४६	46	om	aim	**bhyaim**	namah
ॐ	ऐं	ह्रां	नमः	४७	47	om	aim	**hrAm**	namah
ॐ	ऐं	क्रूं	नमः	४८	48	om	aim	**krUm**	namah
ॐ	ऐं	मूं	नमः	४९	49	om	aim	**mUm**	namah
ॐ	ऐं	ल्ह्रीं	नमः	५०	50	om	aim	**lhrIm**	namah
ॐ	ऐं	श्रां	नमः	५१	51	om	aim	**shrAm**	namah

ॐ	ऐं	द्रूं	नमः	५२	52	om	aim	**drUm**	namah
ॐ	ऐं	द्व्रूं	नमः	५३	53	om	aim	**dvrUm**	namah
ॐ	ऐं	ह्सौं	नमः	५४	54	om	aim	**hsaum**	namah
ॐ	ऐं	क्रां	नमः	५५	55	om	aim	**krAm**	namah
ॐ	ऐं	स्हौं	नमः	५६	56	om	aim	**sahaum**	namah
ॐ	ऐं	म्लूं	नमः	५७	57	om	aim	**mlUm**	namah
ॐ	ऐं	श्रीं	नमः	५८	58	om	aim	**shrIm**	namah
ॐ	ऐं	गैं	नमः	५९	59	om	aim	**gyaim**	namah
ॐ	ऐं	क्रूं	नमः	६०	60	om	aim	**krUm**	namah
ॐ	ऐं	त्रीं	नमः	६१	61	om	aim	**tr.Im**	namah
ॐ	ऐं	क्ष्फीं	नमः	६२	62	om	aim	**ksfIm**	namah
ॐ	ऐं	क्सीं	नमः	६३	63	om	aim	**ksIm**	namah
ॐ	ऐं	फ्रों	नमः	६४	64	om	aim	**phrom**	namah
ॐ	ऐं	ह्रीं	नमः	६५	65	om	aim	**hrIm**	namah
ॐ	ऐं	शां	नमः	६६	66	om	aim	**shAm**	namah
ॐ	ऐं	क्ष्म्रीं	नमः	६७	67	om	aim	**kshmrIm**	namah
ॐ	ऐं	रों	नमः	६८	68	om	aim	**rom**	namah
ॐ	ऐं	डुं	नमः	६९	69	om	aim	**n.um**	namah

|| इति द्वितीयोऽध्यायः ||

|| ॐ श्री दुर्गार्पणमस्तु ||

|| iti dvitIyodhyAyah ||

|| om shrI durgArpaNamastu ||

अध्याय ३ - महिषासुर वधः

3 - Slaying of mahis.Asura

ध्यानम् ॥

ॐ उद्यद्भानुसहस्रकान्तिमरुणक्षौमां शिरोमालिकां
रक्तालिप्तपयोधरां जपवटीं विद्यामभीतिं वरम् ।
हस्ताब्जैर्दधतीं त्रिनेत्रविलसद्वक्त्रारविन्दश्रियं
देवीं बद्धहिमांशुरत्नमुकुटां वन्देऽरविन्दस्थिताम् ॥

जगदम्बा के श्रीअङ्गों की कान्ति प्रातः काल के सहस्त्रों सूर्यों के समान है। वे लाल रंग की रेशमी साड़ी धारण किये हुये हैं। उनके गले में मुण्डमाला शोभा पा रही है। दोनों स्तनों पर रक्त चन्दन का लेप लगा हुआ है। वे अपने कर-कमलों में जपमालिका, विद्या और अभय तथा वर नामक मुद्राएँ धारण किये हुये हैं। तीन नेत्रों से सुशोभित; उनके मुखारविन्द की बड़ी शोभा हो रही है। उनके मस्तक पर चन्द्रमा के साथ ही रत्नमय मुकुट बँधा हुआ है तथा वे कमल के आसन पर विराजमान हैं। ऐसी देवी की मैं श्रद्धापूर्वक वन्दना करता हूँ।

॥ ॐ नमश्चण्डिकायै ॥

dhyAnam ॥

Om | udyAdbhAnusahasrakAntimaruNakshaumAm shiromAlikAm |
raktAliptapayodharAm japavaTIm vidyAmabhItim varam |
hastAbjairdadhatIm tr.inetr.avilasadvaktrAravindashriyam |
devIm baddhahimAmshuratnamukuTAmvanderavindasthitAm ||

She who glows like a thousand rising suns, adorned in red silk, who wears a garland of severed heads;

Whose breasts are anointed with blood, who holds a rosary, and bestows wisdom, fearlessness, and boons;

She who has a garland in Her hand, and is radiant with three eyes;

Who has the moon in Her crown , and is seated on a lotus;

...... I bow down in reverence to that Divine Mother

॥ Om namah caNDikAyai ॥

॥ ॐ बीजत्रयायै विद्महे तत्प्रधानायै धीमहि तन्नः शक्ति प्रचोदयात् ॥

॥ om bIjatr.ayAyai vidmahE
tatpradhAnAyai dhImahi tannah shakti pracodayAt ॥

ॐ ऐं श्रौं नमः १	1 om aim shraum namah
ॐ ऐं क्लीं नमः २	2 om aim klIm namah
ॐ ऐं सां नमः ३	3 om aim sAm namah
ॐ ऐं त्रों नमः ४	4 om aim tr.om namah
ॐ ऐं प्रूं नमः ५	5 om aim prUm namah
ॐ ऐं ग्लौं नमः ६	6 om aim glaum namah
ॐ ऐं क्रौं नमः ७	7 om aim kraum namah
ॐ ऐं व्रीं नमः ८	8 om aim vrIm namah
ॐ ऐं स्लीं नमः ९	9 om aim slIm namah
ॐ ऐं ह्रीं नमः १०	10 om aim hrIm namah
ॐ ऐं हौं नमः ११	11 om aim haum namah
ॐ ऐं श्रां नमः १२	12 om aim shrAm namah
ॐ ऐं ग्रीं नमः १३	13 om aim grIm namah
ॐ ऐं क्रूं नमः १४	14 om aim krUm namah
ॐ ऐं क्रीं नमः १५	15 om aim krIm namah
ॐ ऐं यां नमः १६	16 om aim yAm namah
ॐ ऐं द्लूं नमः १७	17 om aim dlUm namah
ॐ ऐं द्रूं नमः १८	18 om aim drUm namah
ॐ ऐं क्षं नमः १९	19 om aim ksham namah

ॐ ऐं ह्रीं नमः २०	20 om aim hrIm namah
ॐ ऐं क्रौं नमः २१	21 om aim kraum namah
ॐ ऐं क्ष्म्ल्रीं नमः २२	22 om aim kshmlrIm namah
ॐ ऐं वां नमः २३	23 om aim vAm namah
ॐ ऐं श्रूं नमः २४	24 om aim shrUm namah
ॐ ऐं ग्लूं नमः २५	25 om aim glUm namah
ॐ ऐं ल्रीं नमः २६	26 om aim lrIm namah
ॐ ऐं प्रें नमः २७	27 om aim prEm namah
ॐ ऐं हूं नमः २८	28 om aim hUm namah
ॐ ऐं ह्रौं नमः २९	29 om aim hraum namah
ॐ ऐं दें नमः ३०	30 om aim dEm namah
ॐ ऐं नूं नमः ३१	31 om aim nUm namah
ॐ ऐं आं नमः ३२	32 om aim Am namah
ॐ ऐं फ्रां नमः ३३	33 om aim phrAm namah
ॐ ऐं प्रीं नमः ३४	34 om aim prIm namah
ॐ ऐं दं नमः ३५	35 om aim dam namah
ॐ ऐं फ्रीं नमः ३६	36 om aim phrIm namah
ॐ ऐं ह्रीं नमः ३७	37 om aim hrIm namah
ॐ ऐं गूं नमः ३८	38 om aim gUm namah

ॐ ऐं श्रौं नमः ३९	39 om aim **shraum** namah
ॐ ऐं सां नमः ४०	40 om aim **sAm** namah
ॐ ऐं श्रीं नमः ४१	41 om aim **shrIm** namah
ॐ ऐं जुं नमः ४२	42 om aim **jum** namah
ॐ ऐं हं नमः ४३	43 om aim **ham** namah
ॐ ऐं सं नमः ४४	44 om aim **sam** namah
॥ इति तृतीयोऽध्यायः ॥	‖ iti trutIyodhyAyah ‖
॥ ॐ श्री दुर्गार्पणमस्तु ॥	‖ om shrI durgArpaNamastu ‖

अध्याय ४ - इन्द्रादि स्तुतिः

4 - Praise by Indra

ध्यानम् ॥

ॐ कालाभ्राभां कटाक्षैररिकुलभयदां मौलिबद्धेन्दुरेखां
शङ्खं चक्रं कृपाणं त्रिशिखमपि करैरुद्वहन्तीं त्रिनेत्राम् ॥
सिंहस्कन्धाधिरूढां त्रिभुवनमखिलं तेजसा पूरयन्तीं
ध्यायेद् दुर्गां जयाख्यां त्रिदशपरिवृतां सेवितां सिद्धिकामैः ॥

सिद्धि की इच्छा रखने वाले पुरुष जिनकी सेवा करते हैं तथा देवता जिन्हें सब ओर से घेरे रहते हैं, उन 'जया' नाम वाली दुर्गा देवी का ध्यान करें - उनके श्रीअङ्गों की आभा काले मेघ के समान श्याम है। वे अपने कटाक्षों से शत्रुसमूह को भय प्रदान करती हैं। उनके मस्तक पर चन्द्रमा की रेखा शोभा पाती है। वे अपने हाथों में शंख, चक्र, कृपाण और त्रिशूल धारण किये हुये हैं। उनके तीन नेत्र हैं। वे सिंह के कंधे पर सवार हैं और अपने तेज से तीनों लोकों को परिपूर्ण कर रही हैं।

॥ ॐ नमश्चण्डिकायै ॥

dhyAnam ‖

Om kAlA bhrAbhAm kaTAkshairarikulabhayadAm
maulibadhendurekhAm |
shankham cakram krupANam trishikhamapi
karairudvahantIm tr.inetr.Am |
simhaskandhAdhirUDham tr.ibhuvanamakhilam
tejasA pUrayantIm |
dhyAyed durgAm jayAkhyAm tr.idashaparivrutAm
sevitAmsidhikAmaih ||

She who is of the colour of dark clouds, whose grace drives fear into the hearts of one's enemies;

Whose brow has the rays of the bound moon, who holds the conch, discuss, dagger, and the trident;

She who is seated on the shoulder of a lion, who fills the three worlds with Her divine energy;

Who is served by those seeking spiritual progress, and is surrounded by the Gods;

...I meditate on that divine Mother Durga known as Jaya

|| Om namah caNDikAyai ||

|| ॐ बीजत्रयायै विद्महे तत्प्रधानायै धीमहि तन्नः शक्ति प्रचोदयात् ||

|| om bIjatr.ayAyai vidmahE tatpradhAnAyai dhImahi tannah shakti pracodayAt ||

ॐ	ऐं	श्रौं	नमः	१	1	om	aim	shraum	namah
ॐ	ऐं	सौं	नमः	२	2	om	aim	saum	namah
ॐ	ऐं	दीं	नमः	३	3	om	aim	dIm	namah
ॐ	ऐं	प्रें	नमः	४	4	om	aim	prEm	namah
ॐ	ऐं	यां	नमः	५	5	om	aim	yAm	namah
ॐ	ऐं	रूं	नमः	६	6	om	aim	rUm	namah
ॐ	ऐं	भं	नमः	७	7	om	aim	bham	namah
ॐ	ऐं	सूं	नमः	८	8	om	aim	sUm	namah
ॐ	ऐं	श्रां	नमः	९	9	om	aim	shrAm	namah

ॐ	ऐं	औं	नमः	१०	10	om	aim	aum	namah
ॐ	ऐं	लूं	नमः	११	11	om	aim	lUm	namah
ॐ	ऐं	डूं	नमः	१२	12	om	aim	DUm	namah
ॐ	ऐं	जूं	नमः	१३	13	om	aim	jUm	namah
ॐ	ऐं	धूं	नमः	१४	14	om	aim	dhUm	namah
ॐ	ऐं	त्रें	नमः	१५	15	om	aim	tr.Em	namah
ॐ	ऐं	ल्हीं	नमः	१६	16	om	aim	lhIm	namah
ॐ	ऐं	श्रीं	नमः	१७	17	om	aim	shrIm	namah
ॐ	ऐं	ईं	नमः	१८	18	om	aim	Im	namah
ॐ	ऐं	ह्रां	नमः	१९	19	om	aim	hrAm	namah
ॐ	ऐं	ल्हूं	नमः	२०	20	om	aim	lhrUm	namah
ॐ	ऐं	क्लूं	नमः	२१	21	om	aim	klUm	namah
ॐ	ऐं	क्रां	नमः	२२	22	om	aim	krAm	namah
ॐ	ऐं	लूं	नमः	२३	23	om	aim	lUm	namah
ॐ	ऐं	फ्रें	नमः	२४	24	om	aim	phrEm	namah
ॐ	ऐं	क्रीं	नमः	२५	25	om	aim	krIm	namah
ॐ	ऐं	म्लूं	नमः	२६	26	om	aim	mlUm	namah
ॐ	ऐं	घ्रें	नमः	२७	27	om	aim	ghrEm	namah
ॐ	ऐं	श्रौं	नमः	२८	28	om	aim	shraum	namah

ॐ ऐं हौं नमः २९	29	om aim **hraum**	namah
ॐ ऐं ब्रीं नमः ३०	30	om aim **vrIm**	namah
ॐ ऐं ह्रीं नमः ३१	31	om aim **hrIm**	namah
ॐ ऐं त्रौं नमः ३२	32	om aim **tr.aum**	namah
ॐ ऐं हलौं नमः ३३	33	om aim **hlaum**	namah
ॐ ऐं गीं नमः ३४	34	om aim **gIm**	namah
ॐ ऐं यूं नमः ३५	35	om aim **yUm**	namah
ॐ ऐं ल्हीं नमः ३६	36	om aim **lhIm**	namah
ॐ ऐं ल्हूं नमः ३७	37	om aim **lhUm**	namah
ॐ ऐं श्रौं नमः ३८	38	om aim **shraum**	namah
ॐ ऐं ओं नमः ३९	39	om aim **om**	namah
ॐ ऐं अं नमः ४०	40	om aim **am**	namah
ॐ ऐं म्हौं नमः ४१	41	om aim **mhaum**	namah
ॐ ऐं प्रीं नमः ४२	42	om aim **prIm**	namah

॥ इति चतुर्थोऽध्यायः ॥

॥ ॐ श्री दुर्गार्पणमस्तु ॥

॥ iti caturthodhyAyah ॥

॥ om shrI durgArpaNamastu ॥

॥ अथ उत्तरचरित्रम् ॥

atha uttara caritr.am

विनियोगः ॥

ॐ । अस्य श्री उत्तरचरित्रस्य । रुद्र ऋषिः । महासरस्वती देवता । अनुष्टुप् छन्दः । भीमा शक्तिः । भ्रामरी बीजम् । सूर्यस्तत्त्वम् । सामवेदः स्वरूपम् । श्री महासरस्वती प्रीत्यर्थे । उत्तरचरित्र जपे विनियोगः ॥

viniyogah ॥

Om | asya duttara caritr.asya | rudra Rs.ih | mahA sarasvatI devatA | anus.Tup chandah | bhImA shaktih | bhrAmarIbIjam | sUryastatvam | sAmavedah svarUpam | mahAsarasvatI prItyarthe uttara caritr.a jape viniyogah ॥

I now recite the last charitra for the pleasure of the Divine Mother MahAsaraswatI – Rudra being the seer, MahAsaraswatI being the diety, its meter being Anushtup, BhImA being the energy, BhrAmarI being the seed, Sun being the element, Sama veda being the form.

॥ Om namah caNDikAyai ॥

महासरस्वती ध्यानम् ॥

ॐ घण्टाशूलहलानि शङ्खमुसले चक्रं धनुः सायकं
हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्तविलसच्छीतांशुतुल्यप्रभाम् ।
गौरीदेहसमुद्भवां त्रिजगतामाधारभूतां महा-
पूर्वामत्र सरस्वतीमनुभजे शुम्भादिदैत्यर्दिनीम् ॥

जो अपने करकमलों में घण्टा, शूल, हल, शङ्ख, मूसल, चक्र, धनुष और बाण धारण किये हुये है। शरद् ऋतु के शोभायमान चन्द्रमा के समान उनकी मनोहर कान्ति है। जो तीनों लोकों की आधारभूता और शुम्भ आदि दैत्यों का नाश करने वाली हैं तथा गौरी के शरीर से जिनका अविर्भाव हुआ है, उन महासरस्वती देवी का मैं निरन्तर ध्यान करता हूँ।

॥ ॐ नमश्चण्डिकायै ॥

mahAsarasvatI dhyAnam ||

Om ghamTAshUlahalAni shankha musale cakram dhanuh sAyakam |
hastAbjairdadhatIm ghanAntavilasachhItAnshutulyaprabhAm |
gauridehasamudbhavAm tr.ijagatAmAdhArabhUtAm mahA |
pUrvAmatr.a sarasvatI manubhaje shumbAdidaityArdinIm||

She who holds in her hands the Bell, Trident, Plough, Conch, Pestle, Discuss, Bow, and Arrows;

Who is lustrous like the moon in the autumn sky;

She who has arisen from the body of Gauri, She who is the sustainer of the three worlds;

The destroyer of ShumbhA and other demons;

...I meditate on that Divine Mother MahAsaraswatI

* The vehicle of MahAsaraswatI, the swan, symbolises the power of knowledge and discrimination. She holds a Veena in her hand, which indicates the harmonisation of the three gunas (Satva, Rajas, Tamas).

|| Om namah caNDikAyai ||

अध्याय ५ - देव्या-दूत संवाद

5 - Devi's conversation with the messenger

|| ॐ बीजत्रयायै विद्महे तत्प्रधानायै धीमहि तन्नः शक्ति प्रचोदयात् ||

|| om bIjatr.ayAyai vidmahE
tatpradhAnAyai dhImahi tannah shakti pracodayAt ||

ॐ ऐं श्रौं नमः १	1	om aim **shraum**	namah
ॐ ऐं प्रीं नमः २	2	om aim **prIm**	namah
ॐ ऐं ओं नमः ३	3	om aim **om**	namah
ॐ ऐं ह्रीं नमः ४	4	om aim **hrIm**	namah
ॐ ऐं ल्रीं नमः ५	5	om aim **lrIm**	namah
ॐ ऐं त्रों नमः ६	6	om aim **tr.om**	namah
ॐ ऐं क्रीं नमः ७	7	om aim **krIm**	namah
ॐ ऐं ह्लौं नमः ८	8	om aim **hlaum**	namah
ॐ ऐं ह्रीं नमः ९	9	om aim **hrIm**	namah
ॐ ऐं श्रीं नमः १०	10	om aim **shrIm**	namah
ॐ ऐं हूं नमः ११	11	om aim **hUm**	namah
ॐ ऐं क्लीं नमः १२	12	om aim **klIm**	namah

ॐ ऐं रौं	नमः १३	13 om aim raum namah
ॐ ऐं स्त्रीं	नमः १४	14 om aim strIm namah
ॐ ऐं म्लीं	नमः १५	15 om aim mlIm namah
ॐ ऐं प्लूं	नमः १६	16 om aim plUm namah
ॐ ऐं ह्सौं	नमः १७	17 om aim hsaum namah
ॐ ऐं स्त्रीं	नमः १८	18 om aim strIm namah
ॐ ऐं ग्लूं	नमः १९	19 om aim glUm namah
ॐ ऐं व्रीं	नमः २०	20 om aim vrIm namah
ॐ ऐं सौः	नमः २१	21 om aim sauh namah
ॐ ऐं लूं	नमः २२	22 om aim lUm namah
ॐ ऐं ल्लूं	नमः २३	23 om aim llUm namah
ॐ ऐं द्रां	नमः २४	24 om aim drAm namah
ॐ ऐं क्सां	नमः २५	25 om aim ksAm namah
ॐ ऐं क्ष्म्रीं	नमः २६	26 om aim kshmrIm namah
ॐ ऐं ग्लौं	नमः २७	27 om aim glaum namah
ॐ ऐं स्कं	नमः २८	28 om aim skam namah
ॐ ऐं त्रूं	नमः २९	29 om aim tr.Um namah
ॐ ऐं स्क्लूं	नमः ३०	30 om aim sklUm namah
ॐ ऐं क्रौं	नमः ३१	31 om aim kraum namah
ॐ ऐं च्छ्रीं	नमः ३२	32 om aim cchrIm namah

ॐ ऐं म्लूं	नमः ३३	33 om aim mlUm namah
ॐ ऐं क्लूं	नमः ३४	34 om aim klUm namah
ॐ ऐं शां	नमः ३५	35 om aim shAm namah
ॐ ऐं ल्हीं	नमः ३६	36 om aim lhIm namah
ॐ ऐं स्त्रूं	नमः ३७	37 om aim str.Um namah
ॐ ऐं ल्लीं	नमः ३८	38 om aim llIm namah
ॐ ऐं लीं	नमः ३९	39 om aim lIm namah
ॐ ऐं सं	नमः ४०	40 om aim sam namah
ॐ ऐं लूं	नमः ४१	41 om aim lUm namah
ॐ ऐं हस्रूं	नमः ४२	42 om aim hsrUm namah
ॐ ऐं श्रूं	नमः ४३	43 om aim shrUm namah
ॐ ऐं जूं	नमः ४४	44 om aim jUm namah
ॐ ऐं हस्ल्रीं	नमः ४५	45 om aim hslrIm namah
ॐ ऐं स्कीं	नमः ४६	46 om aim skIm namah
ॐ ऐं क्लां	नमः ४७	47 om aim klAm namah
ॐ ऐं श्रूं	नमः ४८	48 om aim shrUm namah
ॐ ऐं हं	नमः ४९	49 om aim ham namah
ॐ ऐं ह्लीं	नमः ५०	50 om aim hlIm namah
ॐ ऐं क्स्त्रूं	नमः ५१	51 om aim kstr.Um namah
ॐ ऐं द्रौं	नमः ५२	52 om aim draum namah

ॐ ऐं क्लूं	नमः	५३	53	om aim **klUm**	namah
ॐ ऐं गां	नमः	५४	54	om aim **gAm**	namah
ॐ ऐं सं	नमः	५५	55	om aim **sam**	namah
ॐ ऐं ल्स्त्रां	नमः	५६	56	om aim **lstr.Am**	namah
ॐ ऐं फ्रीं	नमः	५७	57	om aim **phrIm**	namah
ॐ ऐं स्लां	नमः	५८	58	om aim **slAm**	namah
ॐ ऐं ल्लूं	नमः	५९	59	om aim **llUm**	namah
ॐ ऐं फ्रें	नमः	६०	60	om aim **phrEm**	namah
ॐ ऐं ओं	नमः	६१	61	om aim **om**	namah
ॐ ऐं स्म्लीं	नमः	६२	62	om aim **smlIm**	namah
ॐ ऐं ह्रां	नमः	६३	63	om aim **hrAm**	namah
ॐ ऐं ऊं	नमः	६४	64	om aim **Um**	namah
ॐ ऐं ल्हूं	नमः	६५	65	om aim **lhUm**	namah
ॐ ऐं हूं	नमः	६६	66	om aim **hUm**	namah
ॐ ऐं नं	नमः	६७	67	om aim **nam**	namah
ॐ ऐं स्त्रां	नमः	६८	68	om aim **str.Am**	namah
ॐ ऐं वं	नमः	६९	69	om aim **vam**	namah
ॐ ऐं मं	नमः	७०	70	om aim **mam**	namah
ॐ ऐं म्क्लीं	नमः	७१	71	om aim **mklIm**	namah
ॐ ऐं शां	नमः	७२	72	om aim **shAm**	namah

ॐ ऐं लं	नमः	७३	73	om aim **lam**	namah
ॐ ऐं भैं	नमः	७४	74	om aim **bhym**	namah
ॐ ऐं ल्लूं	नमः	७५	75	om aim **llUm**	namah
ॐ ऐं हौं	नमः	७६	76	om aim **haum**	namah
ॐ ऐं ईं	नमः	७७	77	om aim **Im**	namah
ॐ ऐं चें	नमः	७८	78	om aim **cEm**	namah
ॐ ऐं क्ल्रीं	नमः	७९	79	om aim **klrIm**	namah
ॐ ऐं ल्ह्रीं	नमः	८०	80	om aim **lhrIm**	namah
ॐ ऐं क्ष्म्ल्रीं	नमः	८१	81	om aim **kshmlrIm**	namah
ॐ ऐं पूं	नमः	८२	82	om aim **pUm**	namah
ॐ ऐं श्रौं	नमः	८३	83	om aim **shraum**	namah
ॐ ऐं ह्रौं	नमः	८४	84	om aim **hraum**	namah
ॐ ऐं भ्रूं	नमः	८५	85	om aim **bhrUm**	namah
ॐ ऐं क्स्त्रीं	नमः	८६	86	om aim **kstr.Im**	namah
ॐ ऐं आं	नमः	८७	87	om aim **Am**	namah
ॐ ऐं क्रूं	नमः	८८	88	om aim **krUm**	namah
ॐ ऐं त्रूं	नमः	८९	89	om aim **tr.Um**	namah
ॐ ऐं डूं	नमः	९०	90	om aim **DUm**	namah
ॐ ऐं जां	नमः	९१	91	om aim **jAm**	namah
ॐ ऐं ल्ह्रूं	नमः	९२	92	om aim **lhrUm**	namah

ॐ	ऐं	फ्रौं	नमः	९३	93 om aim phraum namah
ॐ	ऐं	क्रौं	नमः	९४	94 om aim kraum namah
ॐ	ऐं	किं	नमः	९५	95 om aim kim namah
ॐ	ऐं	ग्लूं	नमः	९६	96 om aim glUm namah
ॐ	ऐं	छ्रंक्लीं	नमः	९७	97 om aim chrmklIm namah
ॐ	ऐं	रं	नमः	९८	98 om aim ram namah
ॐ	ऐं	क्सैं	नमः	९९	99 om aim ksaim namah
ॐ	ऐं	स्हुं	नमः	१००	100 om aim sahum namah
ॐ	ऐं	श्रौं	नमः	१०१	101 om aim shraum namah
ॐ	ऐं	श्रीं	नमः	१०२	102 om aim shrIm namah
ॐ	ऐं	ओं	नमः	१०३	103 om aim om namah
ॐ	ऐं	लूं	नमः	१०४	104 om aim lUm namah
ॐ	ऐं	ल्हूं	नमः	१०५	105 om aim lhUm namah
ॐ	ऐं	ल्लूं	नमः	१०६	106 om aim llUm namah
ॐ	ऐं	स्क्रीं	नमः	१०७	107 om aim skrIm namah
ॐ	ऐं	स्त्रौं	नमः	१०८	108 om aim sstr.aum namah
ॐ	ऐं	स्भ्रूं	नमः	१०९	109 om aim sbhrUm namah
ॐ	ऐं	क्षमक्लीं	नमः	११०	110 om aim kshmklIm namah
ॐ	ऐं	व्रीं	नमः	१११	111 om aim vrIm namah
ॐ	ऐं	सीं	नमः	११२	112 om aim sIm namah

ॐ	ऐं	भूं	नमः	११३	113 om aim bhUm namah
ॐ	ऐं	लां	नमः	११४	114 om aim lAm namah
ॐ	ऐं	श्रौं	नमः	११५	115 om aim shraum namah
ॐ	ऐं	स्हैं	नमः	११६	116 om aim sahaim namah
ॐ	ऐं	ह्रीं	नमः	११७	117 om aim hrIm namah
ॐ	ऐं	श्रीं	नमः	११८	118 om aim shrIm namah
ॐ	ऐं	फ्रें	नमः	११९	119 om aim phrem namah
ॐ	ऐं	रूं	नमः	१२०	120 om aim rUm namah
ॐ	ऐं	च्छ्रूं	नमः	१२१	121 om aim cchrUm namah
ॐ	ऐं	ल्हूं	नमः	१२२	122 om aim lhUm namah
ॐ	ऐं	कं	नमः	१२३	123 om aim kam namah
ॐ	ऐं	द्रें	नमः	१२४	124 om aim drEm namah
ॐ	ऐं	श्रीं	नमः	१२५	125 om aim shrIm namah
ॐ	ऐं	सां	नमः	१२६	126 om aim sAm namah
ॐ	ऐं	ह्रौं	नमः	१२७	127 om aim hraum namah
ॐ	ऐं	ऐं	नमः	१२८	128 om aim aim namah
ॐ	ऐं	स्कीं	नमः	१२९	129 om aim skIm namah

|| इति पञ्चमोऽध्यायः || || iti pamcamodhyAyah ||

|| ॐ श्री दुर्गार्पणमस्तु || || om shrI durgArpaNamastu ||

अध्याय ६ - धूम्रलोचन-वधः

6 - Slaying of dhUmralocana

ध्यानम् ॥

ॐ नागाधीश्वरविष्टरां फणिफणोत्तंसोरुरत्नावली-
भास्वद्देहलतां दिवाकरनिभां नेत्रत्रयोद्भासिताम् ।
मालाकुम्भकपालनीरजकरां चन्द्रार्धचूडां परां
सर्वज्ञेश्वरभैरवाङ्कनिलयां पद्मावतीं चिन्तये ॥

मैं सर्वज्ञेश्वर भैरव के अंग में निवास करने वाली परमोत्कृष्ट पद्मावती देवी का चिन्तन करता हूँ। वे नागराज के आसन पर विराजमान हैं, नागों के फनों में सुशोभित होने वाले मणियों की विशाल माला से उनकी देहलता चमक रही है। उनका तेज़ सूर्य के समान है। तीन नेत्र उनकी शोभा बढ़ा रहे हैं। वे हाथों में माला, कुम्भ, कपाल और कमल लिये हुए हैं तथा उनके मस्तक पर अर्धचन्द्र मुकुट सुशोभित है।

॥ ॐ नमश्चण्डिकायै ॥

dhyAnam ॥

Om | nAgAdhIshvaravis.hTarAm
phaNiphaNottamsoruratnAvalI
bhAsvaddehalatAm divAkaranibhAm
netr.atr.ayodbhAsitAm |
mAlAkumbhakapAlanIrajakarAm
candrArdhacUDAm parAm
sarvajneshvarabhairvAnkanilayAm
padmAvatIm cintaye ॥

She who is seated on the king of serpents, adorned with the Divine gems of the snakes' hoods;
Whose lotus form is effulgent like the Sun, and is possessed of three eyes;
Who holds in Her hands the Garland, Pitcher, Skull, and Lotus, whose brow is decorated by the half Moon;
She who is together with the all knowing Lord Bhairava;
...I meditate on that Divine Mother Padmavati

॥ Om namah caNDikAyai ॥

॥ ॐ बीजत्रयायै विद्महे तत्प्रधानायै धीमहि तन्नः शक्ति प्रचोदयात् ॥

॥ om bIjatr.ayAyai vidmahE tatpradhAnAyai dhImahi tannah shakti pracodayAt ॥

ॐ	ऐं	श्रौं	नमः १	1	*om*	*aim*	***shraum***	*namah*
ॐ	ऐं	ॐ	नमः २	2	*om*	*aim*	***om***	*namah*
ॐ	ऐं	त्रूं	नमः ३	3	*om*	*aim*	***tr.Um***	*namah*
ॐ	ऐं	ह्रौं	नमः ४	4	*om*	*aim*	***hraum***	*namah*
ॐ	ऐं	क्रौं	नमः ५	5	*om*	*aim*	***kraum***	*namah*
ॐ	ऐं	श्रौं	नमः ६	6	*om*	*aim*	***shraum***	*namah*
ॐ	ऐं	त्रीं	नमः ७	7	*om*	*aim*	***tr.Im***	*namah*
ॐ	ऐं	क्लीं	नमः ८	8	*om*	*aim*	***klIm***	*namah*
ॐ	ऐं	प्रीं	नमः ९	9	*om*	*aim*	***prIm***	*namah*
ॐ	ऐं	ह्रीं	नमः १०	10	*om*	*aim*	***hrIm***	*namah*

ॐ ऐं ह्रौं नमः ११	11 om aim **hraum** namah
ॐ ऐं श्रौं नमः १२	12 om aim **shraum** namah
ॐ ऐं अ्रैं नमः १३	13 om aim **araim** namah
ॐ ऐं अ्रौं नमः १४	14 om aim **araum** namah
ॐ ऐं श्रीं नमः १५	15 om aim **shrIm** namah
ॐ ऐं क्रां नमः १६	16 om aim **krAm** namah
ॐ ऐं हूं नमः १७	17 om aim **hUm** namah
ॐ ऐं छ्रां नमः १८	18 om aim **chrAm** namah
ॐ ऐं क्ष्मक्ल्रीं नमः १९	19 om aim **kshmklrIm** namah
ॐ ऐं ल्लुं नमः २०	20 om aim **llum** namah
ॐ ऐं सौः नमः २१	21 om aim **sauh** namah
ॐ ऐं ह्लौं नमः २२	22 om aim **hlaum** namah
ॐ ऐं क्रूं नमः २३	23 om aim **krUm** namah
ॐ ऐं सौं नमः २४	24 om aim **saum** namah
॥ इति षष्ठोऽध्यायः ॥	‖ iti s.as.ThodhyAyah ‖
॥ ॐ श्री दुर्गार्पणमस्तु ॥	‖ om shrI durgArpaNamastu ‖

अध्याय ७ - चण्ड-मुण्ड वधः

7 - Slaying of caNDa and muNDa

ध्यानम् ॥

ॐ ध्यायेयं रत्नपीठे शुककलपठितं शृण्वतीं श्यामलाङ्गीं
न्यस्तैकाङ्घ्रिं सरोजे शशिशकलधरां वल्लकीं वादयन्तीम् ।
कह्लाराबद्धमालां नियमितविलसच्चोलिकां रक्तवस्त्रां
मातङ्गीं शङ्खपात्रां मधुरमधुमदां चित्रकोद्भासिभालाम् ॥

मैं मातंगी देवी का ध्यान करता हूँ। वे रत्नमय सिंहासन पर बैठकर पढ़ते हुए तोते का मधुर शब्द सुन रही हैं। उनके शरीर का वर्ण श्याम है। वे अपना एक पैर कमल पर रखे हुए हैं और मस्तक पर अर्धचन्द्र धारण किये हुये हैं तथा कह्लार पुष्पों की माला धारण किये वीणा वादन कर रही हैं। उनके अंग में कसी हुई चोली शोभा पा रही है। वे लाल रंग की साड़ी पहने हाथ में शंख का मय पात्र लिये हुए हैं। उनके शरीर पर मधु का हलका-हलका प्रभाव जान पड़ता है और ललाट में बिंदी शोभायमान् है।

॥ ॐ नमश्चण्डिकायै ॥

dhyAnam ॥

Om | dhyAyeyam ratnapIThe shukakalapaThitam
shruNvatIm shyAmalAngIm |
nyastaikAn.ghri saroje shashishakaladharAm
vallakIm vAdayantIm |
kalhArAbaddamAlAm niyamitavilasaccolikAm
raktavastr.Am |
mAtangIm shankhapAtr.Am madhuramadhumadAm
citr.akodbhAsibhAlAm ‖

She who is seated on a jewel throne, listening to the sweet recitals of the parrot, of dusky appearance;

Who is aglow with youthfulness, has one leg on a Lotus, bedecked with the crescent Moon on her forehead;

Who wears a garland of white lotuses, plays the Veena, beauteous with a fitting bodice and red garments;

She who holds a conch vessel, is mildly intoxicated, and has a dazzling vermilion mark on her forehead;

...I meditate on that Divine Mother Matangi

|| om namah caNDikAyai ||

|| ॐ बीजत्रयायै विद्महे तत्प्रधानायै धीमहि तन्नः शक्ति प्रचोदयात् ||

|| om bIjatr.ayAyai vidmahE tatpradhAnAyai dhImahi tannah shakti pracodayAt ||

ॐ ऐं श्रौं नमः १	1 *om aim* ***shraum*** *namah*
ॐ ऐं कुं नमः २	2 *om aim* ***kum*** *namah*
ॐ ऐं ल्हीं नमः ३	3 *om aim* ***lhIm*** *namah*
ॐ ऐं ह्रं नमः ४	4 *om aim* ***hram*** *namah*
ॐ ऐं मूं नमः ५	5 *om aim* ***mUm*** *namah*
ॐ ऐं त्रौं नमः ६	6 *om aim* ***tr.aum*** *namah*
ॐ ऐं ह्रौं नमः ७	7 *om aim* ***hraum*** *namah*
ॐ ऐं ॐ नमः ८	8 *om aim* ***om*** *namah*
ॐ ऐं ह्सूं नमः ९	9 *om aim* ***hsUm*** *namah*
ॐ ऐं क्लूं नमः १०	10 *om aim* ***klUm*** *namah*

ॐ ऐं क्रें नमः ११	11 *om aim* ***krEm*** *namah*
ॐ ऐं नें नमः १२	12 *om aim* ***nEm*** *namah*
ॐ ऐं लूं नमः १३	13 *om aim* ***lUm*** *namah*
ॐ ऐं ह्स्लीं नमः १४	14 *om aim* ***hslIm*** *namah*
ॐ ऐं प्लूं नमः १५	15 *om aim* ***plUm*** *namah*
ॐ ऐं शां नमः १६	16 *om aim* ***shAm*** *namah*
ॐ ऐं स्लूं नमः १७	17 *om aim* ***slUm*** *namah*
ॐ ऐं प्लीं नमः १८	18 *om aim* ***plIm*** *namah*
ॐ ऐं प्रें नमः १९	19 *om aim* ***prEm*** *namah*
ॐ ऐं अं नमः २०	20 *om aim* ***am*** *namah*
ॐ ऐं औं नमः २१	21 *om aim* ***aum*** *namah*
ॐ ऐं म्ल्रीं नमः २२	22 *om aim* ***mlrIm*** *namah*
ॐ ऐं श्रां नमः २३	23 *om aim* ***shrAm*** *namah*
ॐ ऐं सौं नमः २४	24 *om aim* ***saum*** *namah*
ॐ ऐं श्रौं नमः २५	25 *om aim* ***shraum*** *namah*
ॐ ऐं प्रीं नमः २६	26 *om aim* ***prIm*** *namah*
ॐ ऐं ह्स्व्रीं नमः २७	27 *om aim* ***hsvrIm*** *namah*

|| इति सप्तमोऽध्यायः ||

|| iti saptamodhyAyah ||

|| ॐ श्री दुर्गार्पणमस्तु ||

|| om shrI durgArpaNamastu ||

अध्याय ८ - रक्तबीज वधः

8 - Slaying of raktabIja

ध्यानम् ॥

ॐ अरुणां करुणातरङ्गिताक्षीं धृतपाशाङ्कुशबाणचापहस्ताम् ।
अणिमादिभिरावृतां मयूखैरहमित्येव विभावये भवानीम् ॥

मैं अणिमा आदि सिद्धि की किरणों से आवृत्त भवानी का ध्यान करता हूँ। उनके शरीर का रंग लाल है, नेत्रों में करुणा लहरा रही है तथा हाथों में पाश, अंकुश, बाण और धनुष शोभा दे रहे हैं।

॥ ॐ नमश्चण्डिकायै ॥

dhyAnam ॥

Om aruNAm karuNAtaran.gitAkshIm
dhrutapAshAn.kushabANacApahastAm |
aNimAdibhirAvrutAm mayUkhai
-rahamityeva vibhAvaye bhavAnIm ||

She who is red complexioned, whose eyes radiate waves of compassion;

Who holds in Her hands the Noose, Goad, Bow, and Arrows made from flowers;

Whose form is surronded by the rays of Anima and other siddhis;

In this state of beautitude;

...I meditate on that Divine Mother Bhavani

|| Om namah caNDikAyai ||

॥ ॐ बीजत्रयायै विद्महे तत्प्रधानायै धीमहि तन्नः शक्ति प्रचोदयात् ॥

|| om bIjatr.ayAyai vidmahE
tatpradhAnAyai dhImahi tannah shakti pracodayAt ||

ॐ ऐं श्रौं नमः १	1 om aim **shraum** namah
ॐ ऐं म्ह्लीं नमः २	2 om aim **mhlrIm** namah
ॐ ऐं प्रूं नमः ३	3 om aim **prUm** namah
ॐ ऐं एं नमः ४	4 om aim **em** namah
ॐ ऐं क्रों नमः ५	5 om aim **krom** namah
ॐ ऐं ईं नमः ६	6 om aim **Im** namah
ॐ ऐं एं नमः ७	7 om aim **em** namah
ॐ ऐं ऌीं नमः ८	8 om aim **lrIm** namah
ॐ ऐं फ्रौं नमः ९	9 om aim **phraum** namah
ॐ ऐं म्लूं नमः १०	10 om aim **mlUm** namah
ॐ ऐं नों नमः ११	11 om aim **nom** namah
ॐ ऐं हूं नमः १२	12 om aim **hUm** namah
ॐ ऐं फ्रौं नमः १३	13 om aim **phraum** namah
ॐ ऐं ग्लौं नमः १४	14 om aim **glaum** namah
ॐ ऐं स्मौं नमः १५	15 om aim **smaum** namah

ॐ ऐं सौं नमः १६	16 om aim **saum** namah
ॐ ऐं स्हौं नमः १७	17 om aim **sahaum** namah
ॐ ऐं श्रीं नमः १८	18 om aim **shrIm** namah
ॐ ऐं ख्सें नमः १९	19 om aim **khsEm** namah
ॐ ऐं क्ष्म्लीं नमः २०	20 om aim **kshmlIm** namah
ॐ ऐं ल्सीं नमः २१	21 om aim **lsIm** namah
ॐ ऐं ह्रौं नमः २२	22 om aim **hraum** namah
ॐ ऐं वीं नमः २३	23 om aim **vIm** namah
ॐ ऐं लूं नमः २४	24 om aim **lUm** namah
ॐ ऐं व्लीं नमः २५	25 om aim **vlIm** namah
ॐ ऐं त्स्रों नमः २६	26 om aim **tsrom** namah
ॐ ऐं ब्रुं नमः २७	27 om aim **brum** namah
ॐ ऐं श्क्लीं नमः २८	28 om aim **shklIm** namah
ॐ ऐं श्रूं नमः २९	29 om aim **shrUm** namah
ॐ ऐं ह्रीं नमः ३०	30 om aim **hrIm** namah
ॐ ऐं शीं नमः ३१	31 om aim **shIm** namah
ॐ ऐं क्लीं नमः ३२	32 om aim **klIm** namah
ॐ ऐं फ्रूं नमः ३३	33 om aim **phrUm** namah

ॐ ऐं क्लौं नमः ३४	34 om aim **klaum** namah
ॐ ऐं ह्रूं नमः ३५	35 om aim **hrUm** namah
ॐ ऐं क्लूं नमः ३६	36 om aim **klUm** namah
ॐ ऐं तीं नमः ३७	37 om aim **tIm** namah
ॐ ऐं म्लूं नमः ३८	38 om aim **mlUm** namah
ॐ ऐं हं नमः ३९	39 om aim **ham** namah
ॐ ऐं स्लूं नमः ४०	40 om aim **slUm** namah
ॐ ऐं औं नमः ४१	41 om aim **aum** namah
ॐ ऐं ल्हौं नमः ४२	42 om aim **lhaum** namah
ॐ ऐं श्ल्रीं नमः ४३	43 om aim **shlrIm** namah
ॐ ऐं यां नमः ४४	44 om aim **yAm** namah
ॐ ऐं थ्लीं नमः ४५	45 om aim **thlIm** namah
ॐ ऐं ल्हीं नमः ४६	46 om aim **lhIm** namah
ॐ ऐं ग्लौं नमः ४७	47 om aim **glaum** namah
ॐ ऐं ह्रौं नमः ४८	48 om aim **hraum** namah
ॐ ऐं प्रां नमः ४९	49 om aim **prAm** namah
ॐ ऐं क्रीं नमः ५०	50 om aim **krIm** namah
ॐ ऐं क्लीं नमः ५१	51 om aim **klIm** namah

ॐ	ऐं	न्स्लुं	नमः	५२	52	om aim **nslum**	namah
ॐ	ऐं	ह्रीं	नमः	५३	53	om aim **hIm**	namah
ॐ	ऐं	ह्लौं	नमः	५४	54	om aim **hlaum**	namah
ॐ	ऐं	ह्रैं	नमः	५५	55	om aim **hraim**	namah
ॐ	ऐं	भ्रं	नमः	५६	56	om aim **bhram**	namah
ॐ	ऐं	सौं	नमः	५७	57	om aim **saum**	namah
ॐ	ऐं	श्रीं	नमः	५८	58	om aim **shrIm**	namah
ॐ	ऐं	प्सूं	नमः	५९	59	om aim **psUm**	namah
ॐ	ऐं	द्रौं	नमः	६०	60	om aim **draum**	namah
ॐ	ऐं	स्त्रां	नमः	६१	61	om aim **sstr.Am**	namah
ॐ	ऐं	ह्स्लीं	नमः	६२	62	om aim **hslIm**	namah
ॐ	ऐं	स्ल्र्रीं	नमः	६३	63	om aim **sllrIm**	namah

॥ इति नामाष्टमोऽध्यायः ॥

॥ ॐ श्री दुर्गार्पणमस्तु ॥

॥ iti as.TamodhyAyah ॥

॥ om shrI durgArpaNamastu ॥

अध्याय ९ - निशुम्भ वधः

9 - Slaying of nishumbha

ध्यानम् ॥

ॐ बन्धूककाञ्चननिभं रुचिराक्षमालां
पाशाङ्कुशौ च वरदां निजबाहुदण्डैः ।
बिभ्राणमिन्दुशकलाभरणं त्रिनेत्र-
मर्धाम्बिकेशमनिशं वपुराश्रयामि ॥

मैं अर्धनारीश्वर के श्रीविग्रह की निरन्तर शरण लेता हूँ। उनका वर्ण बन्धूकपुष्प और सुवर्ण के समान रक्तपीत मिश्रित है। वे अपनी भुजाओं में सुन्दर अक्षमाला, पाश, अंकुश और वरद-मुद्रा धारण किये हुये हैं। अर्धचन्द्र उनका आभूषण है तथा वे तीन नेत्रों से सुशोभित हैं।

॥ ॐ नमश्चण्डिकायै ॥

dhyAnam ॥

Om | bandhUkakAncananibham rucirAkshamAlAm |
pAshAn.ukshau ca varadAm nijabAhudanDaih |
bibhrANamindushakalAbharaNam tr.inetr.a |
mardhAmbikeshamanisham vapurAshrayAmi ||

Who is effulgent like a mixture of the red noon flower and gold;
Who adorns the beautiful garland of letters;
Who bears on the shoulders the Noose and the Goad; and displays the gesture of granting boons;
Whose ornament is the crescent Moon, who is three eyed;
...I take constant refuge in that embodiment of ArdhanArIshwarA

॥ Om namah caNDikAyai ॥

|| ॐ बीजत्रयायै विद्महे तत्प्रधानायै धीमहि तन्नः शक्ति प्रचोदयात् ||

|| om bIjatr.ayAyai vidmahE
tatpradhAnAyai dhImahi tannah shakti pracodayAt ||

ॐ ऐं रौं	नमः १	1	om aim raum	namah
ॐ ऐं क्लीं	नमः २	2	om aim klIm	namah
ॐ ऐं म्लौं	नमः ३	3	om aim mlaum	namah
ॐ ऐं श्रौं	नमः ४	4	om aim shraum	namah
ॐ ऐं ग्लीं	नमः ५	5	om aim glIm	namah
ॐ ऐं ह्रौं	नमः ६	6	om aim hraum	namah
ॐ ऐं ह्सौं	नमः ७	7	om aim hsaum	namah
ॐ ऐं ईं	नमः ८	8	om aim Im	namah
ॐ ऐं ब्रूं	नमः ९	9	om aim brUm	namah
ॐ ऐं श्रां	नमः १०	10	om aim shrAm	namah
ॐ ऐं लूं	नमः ११	11	om aim lUm	namah
ॐ ऐं आं	नमः १२	12	om aim Am	namah
ॐ ऐं श्रीं	नमः १३	13	om aim shrIm	namah
ॐ ऐं क्रौं	नमः १४	14	om aim kraum	namah

ॐ ऐं प्रूं	नमः १५	15	om aim prUm	namah
ॐ ऐं क्लीं	नमः १६	16	om aim klIm	namah
ॐ ऐं भ्रूं	नमः १७	17	om aim bhrUm	namah
ॐ ऐं ह्रौं	नमः १८	18	om aim hraum	namah
ॐ ऐं क्रीं	नमः १९	19	om aim krIm	namah
ॐ ऐं म्लीं	नमः २०	20	om aim mlIm	namah
ॐ ऐं ग्लौं	नमः २१	21	om aim glaum	namah
ॐ ऐं ह्सूं	नमः २२	22	om aim hsUm	namah
ॐ ऐं प्लीं	नमः २३	23	om aim plIm	namah
ॐ ऐं ह्रौं	नमः २४	24	om aim hraum	namah
ॐ ऐं ह्स्त्रां	नमः २५	25	om aim hstr.Am	namah
ॐ ऐं स्हौं	नमः २६	26	om aim sahaum	namah
ॐ ऐं ल्लूं	नमः २७	27	om aim llUm	namah
ॐ ऐं क्स्लीं	नमः २८	28	om aim kslIm	namah
ॐ ऐं श्रीं	नमः २९	29	om aim shrIm	namah
ॐ ऐं स्तूं	नमः ३०	30	om aim stUm	namah
ॐ ऐं च्रें	नमः ३१	31	om aim crEm	namah

ॐ ऐं वीं नमः ३२	32 *om aim* ***vIm*** *namah*
ॐ ऐं क्ष्लूं नमः ३३	33 *om aim* ***kshlUm*** *namah*
ॐ ऐं श्लूं नमः ३४	34 *om aim* ***shlUm*** *namah*
ॐ ऐं क्रूं नमः ३५	35 *om aim* ***krUm*** *namah*
ॐ ऐं क्रां नमः ३६	36 *om aim* ***krAm*** *namah*
ॐ ऐं स्क्ष्लीं नमः ३७	37 *om aim* ***skshlIm*** *namah*
ॐ ऐं भ्रूं नमः ३८	38 *om aim* ***bhrUm*** *namah*
ॐ ऐं ह्रौं नमः ३९	39 *om aim* ***hraum*** *namah*
ॐ ऐं क्रां नमः ४०	40 *om aim* ***krAm*** *namah*
ॐ ऐं फ्रूं नमः ४१	41 *om aim* ***phrUm*** *namah*

॥ इति नवमोऽध्यायः ॥ ‖ iti navamodhyAyah ‖

॥ ॐ श्री दुर्गार्पणमस्तु ॥ ‖ om shrI durgArpaNamastu ‖

अध्याय १० - शुम्भ वधः

10 - Slaying of shumbha

ध्यानम् ॥

ॐ उत्तप्तहेमरुचिरां रविचन्द्रवह्नि-
नेत्रां धनुश्शरयुताङ्कुशपाशशूलम् ।
रम्यैर्भुजैश्च दधतीं शिवशक्तिरूपां
कामेश्वरीं हृदि भजामि धृतेन्दुलेखाम् ॥

मैं मस्तक पर अर्धचन्द्र धारण करने वाली शिव-शक्तिस्वरूपा भगवती कामेश्वरी का हृदय से चिन्तन करता हूँ। वे तपाये हुए सुवर्ण के समान सुन्दर हैं। सूर्य, चन्द्रमा और अग्नि - ये ही तीन उनके नेत्र हैं तथा वे अपने मनोहर हाथों में धनुष-बाण, अंङ्कुश, पाश और शूल धारण किये हुये हैं।

॥ ॐ नमश्चण्डिकायै ॥

dhyAnam ॥

Om | uttaptahemarucirAm ravicandravahni |
netr.Am dhanushshara yutAn.kushapAshashUlam |
ramyairbhujaishca dadhatIm shivashakti rUpAm |
kAmeshvarIm hrudi bhajAmi dhrutendulekhAm ||

She whose wonderful form is like molten gold, whose three eyes are the Sun, Moon, and Fire;
Who holds in Her graceful hands the Bow and Arrows, Goad, Noose, and Spear;
Whose forehead is bedecked with the crescent Moon;
She is who verily the Divine form of Shiva and Shakti;
...I meditate on that Divine Mother KAmeswarI in my heart

‖ Om namah caNDikAyai ‖

|| ॐ बीजत्रयायै विद्महे तत्प्रधानायै धीमहि तन्नः शक्ति प्रचोदयात् ||

|| om bIjatr.ayAyai vidmahE tatpradhAnAyai dhImahi tannah shakti pracodayAt ||

ॐ ऐं श्रौं	नमः १	1	om aim shraum	namah
ॐ ऐं ह्रीं	नमः २	2	om aim hrIm	namah
ॐ ऐं ब्लूं	नमः ३	3	om aim blUm	namah
ॐ ऐं ह्रीं	नमः ४	4	om aim hrIm	namah
ॐ ऐं म्लूं	नमः ५	5	om aim mlUm	namah
ॐ ऐं ह्रं	नमः ६	6	om aim hram	namah
ॐ ऐं ह्रीं	नमः ७	7	om aim hrIm	namah
ॐ ऐं ग्लीं	नमः ८	8	om aim glIm	namah
ॐ ऐं श्रौं	नमः ९	9	om aim shraum	namah
ॐ ऐं धूं	नमः १०	10	om aim dhUm	namah
ॐ ऐं हुं	नमः ११	11	om aim hum	namah
ॐ ऐं द्रौं	नमः १२	12	om aim draum	namah
ॐ ऐं श्रीं	नमः १३	13	om aim shrIm	namah
ॐ ऐं त्रों	नमः १४	14	om aim tr.om	namah
ॐ ऐं व्रूं	नमः १५	15	om aim vrUm	namah
ॐ ऐं फ्रें	नमः १६	16	om aim phrEm	namah

ॐ ऐं ह्रां	नमः १७	17	om aim hrAm	namah
ॐ ऐं जुं	नमः १८	18	om aim jum	namah
ॐ ऐं सौः	नमः १९	19	om aim sauh	namah
ॐ ऐं स्लौं	नमः २०	20	om aim slaum	namah
ॐ ऐं प्रें	नमः २१	21	om aim prEm	namah
ॐ ऐं हस्वां	नमः २२	22	om aim hsvAm	namah
ॐ ऐं प्रीं	नमः २३	23	om aim prIm	namah
ॐ ऐं फ्रां	नमः २४	24	om aim phrAm	namah
ॐ ऐं क्रीं	नमः २५	25	om aim krIm	namah
ॐ ऐं श्रीं	नमः २६	26	om aim shrIm	namah
ॐ ऐं क्रां	नमः २७	27	om aim krAm	namah
ॐ ऐं सः	नमः २८	28	om aim sah	namah
ॐ ऐं क्लीं	नमः २९	29	om aim klIm	namah
ॐ ऐं व्रें	नमः ३०	30	om aim vrEm	namah
ॐ ऐं इं	नमः ३१	31	om aim im	namah
ॐ ऐं ज्स्हल्रीं	नमः ३२	32	om aim jshlhrIm	namah

|| इति दशमोऽध्यायः ||

|| ॐ श्री दुर्गार्पणमस्तु ||

|| iti dashamodhyAyah ||

|| om shrI durgArpaNamastu ||

अध्याय ११ - नारायणी स्तुतिः

11 - Hymn to nArAyaNi

ध्यानम् ॥

ॐ बालरविद्युतिमिन्दुकिरीटां तुङ्गकुचां नयनत्रययुक्ताम् ।
स्मेरमुखीं वरदाङ्कुशपाशाभीतिकरां प्रभजे भुवनेशीम् ॥

मैं भुवनेश्वरी देवी का ध्यान करता हूँ। उनके श्रीअङ्गों की आभा प्रभात काल के सूर्य के समान है और मस्तक पर चन्द्रमा का मुकुट है। वे उभरे हुए स्तनों और तीन नेत्रों से युक्त हैं। उनके मुख पर मुस्कान की छटा छायी रहती है और हाथों में वरद, अङ्कुश, पाश एवं अभय-मुद्रा शोभा पाते हैं।

॥ ॐ नमश्चण्डिकायै ॥

dhyAnam ॥

'Om | bAlaravidyutimindukirITAm tungakucAm nayanatr.ayayuktAm |
smeramukhIm varadAn.kushapAshAbhItikarAm prabhaje bhuvaneshIm ||

She whose appearance is like the rising Sun, who has the Moon in Her crown;

Who is full breasted, having a pleasing smile on her face;

Who holds in Her hands the Goad and the Noose;

She who displays the gestures of granting Fearlessness and Boons;

...I meditate on that Divine Mother BhuvaneswarI

|| Om namah caNDikAyai ||

|| ॐ बीजत्रयायै विद्महे तत्प्रधानायै धीमहि तन्नः शक्ति प्रचोदयात् ।

|| om bIjatr.ayAyai vidmahE
tatpradhAnAyai dhImahi tannah shakti pracodayAt ||

ॐ ऐं श्रौं	नमः १	1	om aim **shraum**	namah
ॐ ऐं क्रूं	नमः २	2	om aim **krUm**	namah
ॐ ऐं श्रीं	नमः ३	3	om aim **shrIm**	namah
ॐ ऐं ल्लीं	नमः ४	4	om aim **llIm**	namah
ॐ ऐं प्रें	नमः ५	5	om aim **prEm**	namah
ॐ ऐं सौः	नमः ६	6	om aim **sauh**	namah
ॐ ऐं स्हौं	नमः ७	7	om aim **sahaum**	namah
ॐ ऐं श्रूं	नमः ८	8	om aim **shrUm**	namah
ॐ ऐं क्लीं	नमः ९	9	om aim **klIm**	nama.
ॐ ऐं स्क्लीं	नमः १०	10	om aim **sklIm**	nama
ॐ ऐं प्रीं	नमः ११	11	om aim **prIm**	nama
ॐ ऐं ग्लौं	नमः १२	12	om aim **glaum**	nama
ॐ ऐं ह्स्ह्रीं	नमः १३	13	om aim **hsahrIm**	nama
ॐ ऐं स्तौं	नमः १४	14	om aim **staum**	[illegible]
ॐ ऐं लीं	नमः १५	15	om aim **lIm**	[illegible]
ॐ ऐं म्लीं	नमः १६	16	om aim **mlIm**	[illegible]
ॐ ऐं स्तूं	नमः १७	17	om aim **stUm**	[illegible]

ॐ	ऐं	ज्स्हीं	नमः	१८	18 om aim **jsahrIm** namah
ॐ	ऐं	फ्रूं	नमः	१९	19 om aim **phrUm** namah
ॐ	ऐं	क्रूं	नमः	२०	20 om aim **krUm** namah
ॐ	ऐं	ह्रौं	नमः	२१	21 om aim **hraum** namah
ॐ	ऐं	ल्लूं	नमः	२२	22 om aim **llUm** namah
ॐ	ऐं	क्ष्म्रीं	नमः	२३	23 om aim **kshmrIm**namah
ॐ	ऐं	श्रूं	नमः	२४	24 om aim **shrUm** namah
ॐ	ऐं	ईं	नमः	२५	25 om aim **Im** namah
ॐ	ऐं	जुं	नमः	२६	26 om aim **jum** namah
ॐ	ऐं	त्रैं	नमः	२७	27 om aim **tr.aim** namah
ॐ	ऐं	द्रूं	नमः	२८	28 om aim **drUm** namah
ॐ	ऐं	ह्रौं	नमः	२९	29 om aim **hraum** namah
ॐ	ऐं	क्लीं	नमः	३०	30 om aim **klIm** namah
ॐ	ऐं	सूं	नमः	३१	31 om aim **sUm** namah
ॐ	ऐं	हौं	नमः	३२	32 om aim **haum** namah
ॐ	ऐं	श्व्रं	नमः	३३	33 om aim **shvram** namah
ॐ	ऐं	ब्रूं	नमः	३४	34 om aim **brUm** namah
ॐ	ऐं	स्फ्रूं	नमः	३५	35 om aim **sphrUm** namah
ॐ	ऐं	ह्रीं	नमः	३६	36 om aim **hrIm** namah

ॐ	ऐं	लं	नमः	३७	37 om aim **lam** namah
ॐ	ऐं	हसौं	नमः	३८	38 om aim **hsaum** namah
ॐ	ऐं	सें	नमः	३९	39 om aim **sEm** namah
ॐ	ऐं	ह्रीं	नमः	४०	40 om aim **hrIm** namah
ॐ	ऐं	ल्हीं	नमः	४१	41 om aim **lhIm** namah
ॐ	ऐं	विं	नमः	४२	42 om aim **vim** namah
ॐ	ऐं	प्लीं	नमः	४३	43 om aim **plIm** namah
ॐ	ऐं	क्ष्म्क्लीं	नमः	४४	44 om aim **kshmklIm** namah
ॐ	ऐं	त्स्त्रां	नमः	४५	45 om aim **tstr.Am** namah
ॐ	ऐं	प्रं	नमः	४६	46 om aim **pram** namah
ॐ	ऐं	म्लीं	नमः	४७	47 om aim **mlIm** namah
ॐ	ऐं	स्त्रूं	नमः	४८	48 om aim **str.Um** namah
ॐ	ऐं	क्ष्मां	नमः	४९	49 om aim **kshmAm** namah
ॐ	ऐं	स्तूं	नमः	५०	50 om aim **stUm** namah
ॐ	ऐं	स्ह्रीं	नमः	५१	51 om aim **sHrIm** namah
ॐ	ऐं	थ्प्रीं	नमः	५२	52 om aim **thprIm** namah
ॐ	ऐं	क्रौं	नमः	५३	53 om aim **kraum** namah
ॐ	ऐं	श्रां	नमः	५४	54 om aim **shrAm** namah
ॐ	ऐं	म्लीं	नमः	५५	55 om aim **mlIm** namah

|| इति एकादशोऽध्यायः ||
|| ॐ श्री दुर्गार्पणमस्तु ||

|| iti ekAdashodhyAyah ||
||om shrI durgArpaNamastu||

अध्याय १२ - फलस्तुतिः

12 - Eulogy of the merits

ध्यानम् ॥

ॐ विद्युद्दामसमप्रभां मृगपतिस्कन्धस्थितां भीषणां
कन्याभिः करवालखेटविलसद्धस्ताभिरासेविताम् ।
हस्तैश्चक्रगदासिखेटविशिखांश्चापं गुणं तर्जनीं
बिभ्राणामनलात्मिकां शशिधरां दुर्गां त्रिनेत्रां भजे ॥

मैं तीन नेत्रोंवाली दुर्गादेवी का ध्यान करता हूँ, उनके श्रीअङ्गों की प्रभा बिजली के समान है। वे सिंह के कंधे पर बैठी हुई भयंकर प्रतीत होती हैं। हाथों में तलवार और ढाल लिये अनेक कन्याएँ उनकी सेवा में खड़ी हैं। वे अपने हाथों में चक्र, गदा, तलवार, ढाल, बाण, धनुष, पाश और तर्जनी मुद्रा धारण किये हुए हैं। उनका स्वरूप अग्निमय है तथा वे माथे पर चन्द्रमा का मुकुट धारण किये हुये हैं।

॥ ॐ नमश्चण्डिकायै ॥

dhyAnam ॥

Om | vidyuddAmasamaprabhAm
mrugapatiskandhasthitAm bhIs.aNAm
kanyAbhih karavAlakheTavilasaddastAbhirAsevitAm |
hastaishcakragadAsikheTavishikhAmshcApam
guNam tarjanIm
bibhrANAmanalAtmikAm shashidharAm
durgAm tr.inetr.Am bhaje ||

She who dazzles like lightning, seated on the lion's shoulder, who appears terrifying;
She who wields the Sword and Shield, and is attended to by many damsels;

In Her hands the Discuss, Mace, Arrows, Bow, and Noose, who displays the gesture of warding off evils;
She of fiery countenance, bearing the Moon in Her crown, possessed of three eyes;
...I meditate on that Divine Mother DurgA

|| Om namah caNDikAyai ||

॥ ॐ बीजत्रयायै विद्महे तत्प्रधानायै धीमहि तन्नः शक्ति प्रचोदयात् ॥

|| om bIjatr.ayAyai vidmahE tatpradhAnAyai dhImahi tannah shakti pracodayAt ||

ॐ ऐं ह्रीं	नमः १	1	*om*	*aim*	***hrIm***	*namah*
ॐ ऐं ओं	नमः २	2	*om*	*aim*	***om***	*namah*
ॐ ऐं श्रीं	नमः ३	3	*om*	*aim*	***shrIm***	*namah*
ॐ ऐं ईं	नमः ४	4	*om*	*aim*	***Im***	*namah*
ॐ ऐं क्लीं	नमः ५	5	*om*	*aim*	***klIm***	*namah*
ॐ ऐं क्रूं	नमः ६	6	*om*	*aim*	***krUm***	*namah*
ॐ ऐं श्रूं	नमः ७	7	*om*	*aim*	***shrUm***	*namah*
ॐ ऐं प्रां	नमः ८	8	*om*	*aim*	***prAm***	*namah*
ॐ ऐं स्क्रूं	नमः ९	9	*om*	*aim*	***skrUm***	*namah*
ॐ ऐं दिं	नमः १०	10	*om*	*aim*	***dim***	*namah*
ॐ ऐं फ्रें	नमः ११	11	*om*	*aim*	***phrEm***	*namah*
ॐ ऐं हं	नमः १२	12	*om*	*aim*	***ham***	*namah*

ॐ ऐं सः	नमः १३	13 om aim sah	namah
ॐ ऐं चें	नमः १४	14 om aim cEm	namah
ॐ ऐं सूं	नमः १५	15 om aim sUm	namah
ॐ ऐं प्रीं	नमः १६	16 om aim prIm	namah
ॐ ऐं ब्लूं	नमः १७	17 om aim blUm	namah
ॐ ऐं आं	नमः १८	18 om aim Am	namah
ॐ ऐं औं	नमः १९	19 om aim aum	namah
ॐ ऐं ह्रीं	नमः २०	20 om aim hrIm	namah
ॐ ऐं क्रीं	नमः २१	21 om aim krIm	namah
ॐ ऐं द्रां	नमः २२	22 om aim drAm	namah
ॐ ऐं श्रीं	नमः २३	23 om aim shrIm	namah
ॐ ऐं स्लीं	नमः २४	24 om aim slIm	namah
ॐ ऐं क्लीं	नमः २५	25 om aim klIm	namah
ॐ ऐं स्लूं	नमः २६	26 om aim slUm	namah
ॐ ऐं ह्रीं	नमः २७	27 om aim hrIm	namah
ॐ ऐं व्लीं	नमः २८	28 om aim vlIm	namah
ॐ ऐं ओं	नमः २९	29 om aim om	namah
ॐ ऐं त्रों	नमः ३०	30 om aim ttr.om	namah

ॐ ऐं श्रौं	नमः ३१	31 om aim shraum	namah
ॐ ऐं ऐं	नमः ३२	32 om aim aim	namah
ॐ ऐं प्रें	नमः ३३	33 om aim prEm	namah
ॐ ऐं द्रूं	नमः ३४	34 om aim drUm	namah
ॐ ऐं क्लूं	नमः ३५	35 om aim klUm	namah
ॐ ऐं औं	नमः ३६	36 om aim aum	namah
ॐ ऐं सूं	नमः ३७	37 om aim sUm	namah
ॐ ऐं चें	नमः ३८	38 om aim cEm	namah
ॐ ऐं हूं	नमः ३९	39 om aim hrUm	namah
ॐ ऐं प्लीं	नमः ४०	40 om aim plIm	namah
ॐ ऐं क्षां	नमः ४१	41 om aim kshAm	namah

॥ इति द्वादशोऽध्यायः ॥

॥ iti dwAdashodhyAyah ॥

॥ ॐ श्री दुर्गार्पणमस्तु ॥

॥ om shrI durgArpaNamastu ॥

अध्याय १३ -

सुरथ-वैश्ययोर्वरप्रदानम्

13 - Bestowing of boons to surata & vais.ya

ध्यानम् ॥

ॐ बालार्कमण्डलाभासां चतुर्बाहुं त्रिलोचनाम् ।
पाशाङ्कुशवराभीतीर्धारयन्तीं शिवां भजे ॥

जो उदयकाल के सूर्यमण्डल की-सी कान्ति धारण करने वाली हैं, जिनके चार भुजाएँ और तीन नेत्र हैं तथा जो अपने हाथों में पाश, अङ्कुश, वर एवं अभय मुद्रा धारण किये रहती हैं, उन शिवादेवी का मैं ध्यान करता हूँ।

॥ ॐ नमश्चण्डिकायै ॥

dhyAnam ॥

Om । bAlArkamanDalAbhAsAm caturbAhum tr.ilocanAm ।
pAshAnkushavarAbhItIrdArayantIm shivAm bhaje ॥

She who is effulgent with the light of a multitude of rising Suns;

Who has four Arms, and three Eyes;

Who holds in Her hands the Noose and the Goad;

She who displays the gestures of granting Boons and Fearlessness;

...I meditate on that Divine Mother ShivA

॥ Om namah caNDikAyai ॥

॥ ॐ बीजत्रयायै विद्महे तत्प्रधानायै धीमहि तन्नः शक्ति प्रचोदयात्

॥ om bIjatr.ayAyai vidmahE
tatpradhAnAyai dhImahi tannah shakti pracodayAt ॥

ॐ	ऐं	श्रौं	नमः	१	1	om	aim	**shraum**	namah
ॐ	ऐं	व्रीं	नमः	२	2	om	aim	**vrIm**	namah
ॐ	ऐं	ओं	नमः	३	3	om	aim	**om**	namah
ॐ	ऐं	औं	नमः	४	4	om	aim	**aum**	namah
ॐ	ऐं	ह्रां	नमः	५	5	om	aim	**hrAm**	namah
ॐ	ऐं	श्रीं	नमः	६	6	om	aim	**shrIm**	namah
ॐ	ऐं	श्रां	नमः	७	7	om	aim	**shrAm**	namah
ॐ	ऐं	ओं	नमः	८	8	om	aim	**om**	namah
ॐ	ऐं	प्लीं	नमः	९	9	om	aim	**plIm**	namah
ॐ	ऐं	सौं	नमः	१०	10	om	aim	**saum**	namah
ॐ	ऐं	ह्रीं	नमः	११	11	om	aim	**hrIm**	namah
ॐ	ऐं	क्रीं	नमः	१२	12	om	aim	**krIm**	namah
ॐ	ऐं	ल्लूं	नमः	१३	13	om	aim	**llUm**	namah
ॐ	ऐं	ह्रीं	नमः	१४	14	om	aim	**hrIm**	namah
ॐ	ऐं	क्लीं	नमः	१५	15	om	aim	**klIm**	namah
ॐ	ऐं	प्लीं	नमः	१६	16	om	aim	**plIm**	namah

ॐ ऐं श्रीं नमः १७	17 om aim shrIm namah
ॐ ऐं ल्लीं नमः १८	18 om aim llIm namah
ॐ ऐं श्रूं नमः १९	19 om aim shrUm namah
ॐ ऐं ह्रूं नमः २०	20 om aim hrUm namah
ॐ ऐं ह्रीं नमः २१	21 om aim hrIm namah
ॐ ऐं त्रूं नमः २२	22 om aim tr.Um namah
ॐ ऐं ऊं नमः २३	23 om aim Um namah
ॐ ऐं सूं नमः २४	24 om aim sUm namah
ॐ ऐं प्रीं नमः २५	25 om aim prIm namah
ॐ ऐं श्रीं नमः २६	26 om aim shrIm namah
ॐ ऐं ह्लौं नमः २७	27 om aim hlaum namah
ॐ ऐं आं नमः २८	28 om aim Am namah
ॐ ऐं ॐ नमः २९	29 om aim om namah
ॐ ऐं ह्रीं नमः ३०	30 om aim hrIm namah

॥ इति त्रयोदशोऽध्यायः ॥

|| iti tr.ayodashOdhyAyah ||

॥ इति सप्तशतीमन्त्राणां बीजमन्त्राः समाप्ताः॥

|| iti saptashati mantr.ANAm bIjamantr.Ah samAptAh ||

॥ ॐ श्री दुर्गार्पणमस्तु ॥

|| om shrI durgArpaNamastu ||

॥ मृत संजीवनी मंत्र ॥

|| mrit-sanjIvani Mantr.a ||

ॐ ह्रीं ह्रीं वं वं ऐं ऐं

om hrIm hrIm vam vam aim aim

मृतसंजीवनि विद्ये ।

mrit-sanjIvani vidhye ।

मृतमुत्थापयोत्थापय

mrit-mutthApayo-tthAapaya

क्रीं ह्रीं ह्रीं वं स्वाहा ॥

krIm hrIm hrIm vam swAhA ||

॥ दुर्गाद्वात्रिंशन्नाम माला ॥

durgA dvatrishnnAma mAlA

दुर्गा दुर्गार्तिशमनी दुर्गापद्विनिवारिणी ।
दुर्गमच्छेदिनी दुर्गसाधिनी दुर्गनाशिनी ॥ ॥१॥

durgA durgati-shamanI durgA-padvi-nivAriNI |
durgamacchedinI durga-sAdhinI durga-nAshinI || ||1||

दुर्गतोद्धारिणी दुर्गनिहन्त्री दुर्गमापहा ।
दुर्गमज्ञानदा दुर्गदैत्यलोकदवानला ॥ ॥२॥

durgato-dhdariNI durga-nihantr.I durgamApahA |
durgamajnAnadA durga-daityaloka-davAnalA || ||2||

दुर्गमा दुर्गमालोका दुर्गमात्मस्वरूपिणी ।
दुर्गमार्गप्रदा दुर्गमविद्या दुर्गमाश्रिता ॥ ॥३॥

durgamA durgamA-lokA durgamAtma-swarUpiNI |
durga-mArga-pradA durgamA-vidyA durgamAshritA || ||3||

दुर्गमज्ञानसंस्थाना दुर्गमध्यानभासिनी ।
दुर्गमोहा दुर्गमगा दुर्गमार्थस्वरूपिणी ॥ ॥४॥

durgamajnana-samsthAnA durgamadhyAna-bhAsiNI |
durga-mohA durgamagA durgamArtha-swarUpinI || ||4||

दुर्गमासुरसंहन्त्री दुर्गमायुधधारिणी ।
दुर्गमाङ्गी दुर्गमता दुर्गम्या दुर्गमेश्वरी ॥ ॥५॥

durgamAsura-samhartr.I durgmAyudha-dhAriNI |
durgamAn.agi durgamatA durgamyA durgameshwarI || ||5

दुर्गभीमा दुर्गभामा दुर्गभा दुर्गदारिणी ॥ ॥६॥

durgabhImA durgabhAmA durgabhA durgadAriNI|| ||6

नामावलिमिमां यस्तु दुर्गाया मम मानवः ।
पठेत्सर्वभयान्मुक्तो भविष्यति न संशयः ॥ ॥७॥

nAmAvalimimAm yastu durgayA mama mAnavah |
paThetsarvabhayAnmukto bhavis.yati na samshayah || ||7

॥ ॐ श्री दुर्गार्पणमस्तु ॥

|| om shrI durgArpaNamastu ||

॥ इति दुर्गाद्वात्रिंशन्नाम माला स्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

|| iti durgA dvatrishnnAma mAlA sampUrnam ||

मङ्गलारती mangalArati

सर्वमंगलमाङ्गल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके ।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तुते

sarva mangala mAngalye shive sarvArtha sAdhike |
sharanye trayambake gauri nArAyani namostute

ॐ जयन्ती मङ्गला काली भद्रकाली कपालिनी ।
दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोऽस्तुते

om jayantI mangalA kAlI bhadrakAlI kapAlinI |
durgA kshamA shivA dhAtrI svahA svadA namOstute

सर्वस्वरुपे सर्वेशे सर्वशक्तिसमन्विते ।
भयेभ्यस्त्राहि नो देवि दुर्गे देवि नमोऽस्तुते

sarva svarUpe sarveshe sarva shakti samanvite |
bhaye-bhyas-trAhi-no-devi durge devi namOstute

दुर्गे देवि नमोऽस्तुते । दुर्गे देवि नमोऽस्तुते । दुर्गे देवि नमोऽस्तुते ।

durgEdEvi namostute | durgEdEvi namostute | durgEdEvi namostute |

जय दुर्गे देवि जाग्रता भव । प्रसन्ना भव । चैतन्या भव । वरदा भव ।

jaya durgE dEvi jAgrtA bhava | prasannA bhava | caitnyA bhava | varadA bhava |

जय अम्बे देवि जाग्रता भव । प्रसन्ना भव । चैतन्या भव । वरदा भव ।

jaya ambE dEvi jAgrtA bhava | prasannA bhava | caitnyA bhava | varadA bhava |

जय महाकाली देवि जाग्रता भव । प्रसन्ना भव । चैतन्या भव । वरदा भव ।

jaya mahAkAli dEvi jAgrtA bhava | prasannA bhava | caitnyA bhava | varadA bhava |

जय महालक्ष्मी देवि जाग्रता भव । प्रसन्ना भव । चैतन्या भव । वरदा भव ।

jaya mahAlaks.mi dEvi jAgrtA bhava | prasannA bhava | caitnyA bhava | varadA bhava |

जय सरस्वती देवि जाग्रता भव । प्रसन्ना भव । चैतन्या भव । वरदा भव ।

jaya mahAsarasvati dEvijAgrtA bhava | prasannA bhava | caitnyA bhava | varadA bhava |

॥ ॐ शान्ति शान्ति शान्तिः ॥

|| om shAnti shAnti shAntih ||

॥ देव्याः कवचम् ॥

॥ devyAh kavacam ॥

ॐ । अस्य श्रीचण्डीकवचस्य । ब्रह्मा ऋषिः । अनुष्टुप् छन्दः चामुण्डा देवता । अङ्गन्यासोक्तमातरो बीजम् । दिग्बन्धदेवतास्तत्त्वम् श्रीजगदम्बाप्रीत्यर्थे । सप्तशतीपाठाङ्गत्वेन जपे विनियोगः ।

॥ ॐ नमश्चण्डिकायै ॥

Om | asya shrI caNDI kavacasya | shrI brahmA Rs.ih | anus.Tup chanda cAmunDA devatA | anganyAsokta mAtaro bIjam digbandhadevatAstatvam | shrIjagadambA prItyarthe saptashatIpAThAngatvena jape viniyogah ||

|| Om namah caNDikAyai ||

मार्कण्डेय उवाच ॥

ॐ यद्गुह्यं परमं लोके सर्वरक्षाकरं नृणाम् ।
यन्न कस्यचिदाऽऽख्यातं तन्मे ब्रूहि पितामह ॥ ॥१

mArkandeya uvAca ॥

om yadhgUhyam paramam loke sarva rakshAkaram nruNAm
yanna kasyacidAkhyAtam tanme brUhi pitAmaha || ||1

ब्रह्मोवाच ।

अस्ति गुह्यतमं विप्र सर्वभूतोपकारकम् ।
देव्यास्तु कवचं पुण्यं तच्छृणुष्व महामुने ॥ ॥२

brahmovAca ॥

asti gUhyatamam vipra sarva bhUto pakArakam |
devyAstu kavacam puNyam tacchruNus.va mahAmune || ||2

प्रथमं शैलपुत्री च द्वितीयं ब्रह्मचारिणी ।
तृतीयं चन्द्रघण्टेति कूष्माण्डेति चतुर्थकम् ॥ ||३||

prathamam shailaputrI ca dvitIyam brahmacArinI |
trutIyam candra ghaNteti kus.mAndeti caturthakam || ||3||

पञ्चमं स्कन्दमातेति षष्ठं कात्यायनीति च ।
सप्तमं कालरात्रीति महागौरीति चाऽष्टमम् ॥ ||४||

panycamam skandamAteti s.as.tam kAtyAyanIti ca |
saptamam kAlarAtrIti mahAgaurIti cAs.tamam || ||4||

नवमं सिद्धिदात्री च नवदुर्गाः प्रकीर्तिताः ।
उक्तान्येतानि नामानि ब्रह्मणैव महात्मना ॥ ||५||

navamam sidhdidAtrI ca navadurgAh prakIrtitAh |
uktAnyetAni nAmAni brahmaNaiva mahAtmanA || ||5||

अग्निना दह्यमानस्तु शत्रुमध्ये गतो रणे ।
विषमे दुर्गमे चैव भयार्ताः शरणं गताः ॥ ||६||

agninA dahyamAnastu shatrumadhye gato raNe |
vis.ame durgame caiva , bhayArtAh sharaNam gatAh || ||6||

न तेषां जायते किंचिदशुभं रणसंकटे ।
नापदं तस्य पश्यामि शोकदुःखभयं न हि ॥ ||७||

na tes.Am jAyate kincidashubham ranasankaTe |
nApadam tasya pashyAmi shokaduhkhabhayam na hi || ||7||

यैस्तु भक्त्या स्मृता नूनं तेषां वृद्धिः प्रजायते ।
ये त्वां स्मरन्ति देवेशि रक्षसे तान्न संशयः ॥ ||८||

yaistu bhaktyA smrutA nUnam tes.Am vrudhdih prajAyate |
ye tvAm smaranti deveshi rakshase tAnna samshayah || ||8||

प्रेतसंस्था तु चामुण्डा वाराही महिषासना ।
ऐन्द्री गजसमारूढा वैष्णवी गरुडासना ॥ ||९||

pretasamsthA tu cAmuNdA vArAhI mahis.AsanA |
aindrI gajasamArUDhA vais.NavI garudAsanA || ||9||

माहेश्वरी वृषाऽऽरूढा कौमारी शिखिवाहना ।
लक्ष्मीः पद्मासना देवी पद्महस्ता हरिप्रिया ॥ ||१०||

mAheshvarI vrushArUdhA kaumArI shikhivAhanA |
lakshmIh padmAsanA devI padmahastA hari priyA || ||10||

श्वेतरूपधरा देवी ईश्वरी वृषवाहना ।
ब्राह्मी हंससमारूढा सर्वाभरणभूषिता ॥ ||११||

shvetarUpadharA devi IshvarI vrushavAhanA |
brAhmI hamsa-samArUDhA sarvAbharaNa-bhUs.itA || ||11||

इत्येता मातरः सर्वाः सर्वयोगसमन्विताः ।
नानाभरणशोभाढ्या नानारत्नोपशोभिताः ॥ ||१२||

ityetA mAtarah sarvAh sarvayoga samanvitAh |
nAnAbharaNa-shobhADhyA, nAnAratnopa-shobhitAh || ||12||

दृश्यन्ते रथमारूढा देव्यः क्रोधसमाकुलाः ।
शङ्खं चक्रं गदां शक्तिं हलं च मुसलाऽऽयुधम् ॥ ||१३||

drushyante rathamArUDhA devyah krodha-samAkulAh |
shan.kham cakram gadAm-shaktim halam ca musalAyudham || ||13||

खेटकं तोमरं चैव परशुं पाशमेव च ।
कुन्तायुधं त्रिशूलं च शार्ङ्गमायुधमुत्तमम् ॥ ||१४||

khetakam tomaram caiva parashum pAshameva ca |
kuntAyudham trishUlam ca shArgjn.amAyudhamuttamam || ||14||

दैत्यानां देहनाशाय भक्तानामभयाय च ।
धारयन्त्यायुधानीत्थं देवानां च हिताय वै ॥ ||१५||

daityAnAm dehanAshAya bhaktAnAmabhayAya ca |
dhArayantyAyudhAnIttham devAnAm ca hitAya vai || ||15||

नमस्तेऽस्तु महारौद्रे महाघोरपराक्रमे ।
महाबले महोत्साहे महाभयविनाशिनि ॥ ||१६||

namasteastu mahAraudre mahAghoraparAkrame |
mahAbale mahotsAhe mahAbhaya-vinAshini || ||16||

त्राहि मां देवि दुष्प्रेक्ष्ये शत्रूणां भयवर्धिनि ।
प्राच्यां रक्षतु मामैन्द्री आग्नेय्यामग्निदेवता ॥ ||१७||

tr.Ahi mAm devi dus.prekshye shatrUNAm bhayavardhini |
prAcyAm rakshatu mAmaindrI AgneyyAmagnidevatA || ||17||

दक्षिणेऽवतु वाराही नैर्ऋत्यां खड्गधारिणी ।
प्रतीच्यां वारुणी रक्षेद् वायव्यां मृगवाहिनी ॥ ||१८||

dakshiNevatu vArAhI naiRutyAm khaDgadhArinI |
pratIcyAm vAruNI rakshed vAyavyAm mrugavAhinI || ||18|

उदीच्यां पातु कौमारी ऐशान्यां शूलधारिणी ।
ऊर्ध्वं ब्रह्माणि मे रक्षेदधस्ताद् वैष्णवी तथा ॥ ||१९

udIcyAm pAtu kaumArI eshAnyAm shUladhAriNI |
Urdhvam brahmANi me rakshedadhastAd vais.navItathA || ||19

एवं दश दिशो रक्षेच्चामुण्डा शववाहना ।
जया मे चाग्रतः पातु विजया पातु पृष्ठतः ॥ ||२०

evam dasha disho rakshe-ccAmunDA shava-vAhanA |
jayA me cAgratah pAtu vijayA pAtu prus.Thatah || ||2

अजिता वामपार्श्वे तु दक्षिणे चापराजिता ।
शिखामुद्योतिनी रक्षेदुमा मूर्ध्नि व्यवस्थिता ॥ ||२

ajitA vAmapArshve tu dakshiNe cAparAjitA |
shikhAmudhyotinI rakshedumA mUrdhni vyavasthitA || ||2

मालाधरी ललाटे च भ्रुवौ रक्षेद् यशस्विनी ।
त्रिनेत्रा च भ्रुवोर्मध्ये यमघण्टा च नासिके ॥ ||२

mAlAdharI lalAte ca bhruvau rakshed yashasvinI |
trinetrA ca bhruvormadhye yamaghaNtA ca nAsike || |

शङ्खिनी चक्षुषोर्मध्ये श्रोत्रयोर्द्वारवासिनी ।
कपोलौ कालिका रक्षेत्कर्णमूले तु शांकरी ॥ ॥२३॥

shan.khinI cakshushormadhye shrotra.yordvAravasinI |
kapolau kAlikA rakshetkarNamUle tu shAnkarI || ||23||

नासिकायां सुगन्धा च उत्तरोष्ठे च चर्चिका ।
अधरे चाऽमृतकला जिह्वायां च सरस्वती ॥ ॥२४॥

nAsikAyAm sugandhA ca uttaros.te ca carcikA |
adhare cAmrutakalA jihvAyAm ca sarasvatI || ||24||

दन्तान् रक्षतु कौमारी कण्ठदेशे तु चण्डिका ।
घण्टिकां चित्रघण्टा च महामाया च तालुके ॥ ॥२५॥

dantAn rakshatu kaumArI kaNThadeshe tu caNDikA |
ghaNtikAm citraghaNtA ca mahAmAyA ca tAluke || ||25||

कामाक्षी चिबुकं रक्षेद् वाचं मे सर्वमङ्गला ।
ग्रीवायां भद्रकाली च पृष्ठवंशे धनुर्धरी ॥ ॥२६॥

kAmAkshI cibukam rakshed vAcam me sarvaman.galA |
grIvAyAm bhadrakAlI ca prus.Thavamshe dhanurdharI || ||26||

नीलग्रीवा बहिःकण्ठे नलिकां नलकूबरी ।
स्कन्धयोः खड्गिनी रक्षेद् बाहू मे वज्रधारिणी ॥ ॥२७॥

nIlagrIvA bahihkaNThe nalikAm nalakUbarI |
skandhayoh khaDginI rakshed bAhU me vajradhArinI || ||27||

हस्तयोर्दण्डिनी रक्षेदम्बिका चाङ्गुलीषु च ।
नखाञ्छूलेश्वरी रक्षेत्कुक्षौ रक्षेत्कुलेश्वरी ॥ ॥२८॥

hastayordaNDinI rakshedambikA cAn.gulIshu ca |
nakhAny-chUleshvarI rakshet-kukshau rakshetkuleshvarI || ||28||

स्तनौ रक्षेन्महादेवी मनः शोकविनाशिनी ।
हृदये ललिता देवी उदरे शूलधारिणी ॥ ॥२९॥

stanau rakshenmahAdevI manah-shoka-vinAshinI |
hrudaye lalitA devI udare shUladhAriNI || ||29||

नाभौ च कामिनी रक्षेद् गुह्यं गुह्येश्वरी तथा ।
पूतना कामिका मेढ्रं गुदे महिषवाहिनी ॥ ॥३०॥

nAbhau ca kAminI rakshed guhyam guhyeshvarI tathA |
pUtanA kAmikA meDhram gude mahis.avAhinI || ||30||

कट्यां भगवती रक्षेज्जानुनी विन्ध्यवासिनी ।
जङ्घे महाबला रक्षेत्सर्वकामप्रदायिनी ॥ ॥३१॥

kaTayAm bhagavatI rakshej-jAnunI vindhyavAsinI |
jan.ghe mahAbalA rakshetsarvakAma-pradAyinI || ||31||

गुल्फयोर्नारसिंही च पादपृष्ठे तु तैजसी ।
पादाङ्गुलीषु श्री रक्षेत्पादाऽधस्तलवासिनी ॥ ॥३२॥

gulphayor-nArasimhI ca pAdaprus.The tu taijasI |
pAdAn.gulIs.u shrI rakshet-pAdAdh-stala vAsinI || ||32||

नखान् दंष्ट्राकराली च केशांश्चैवोर्ध्वकेशिनी ।
रोमकूपेषु कौबेरी त्वचं वागीश्वरी तथा ॥ ||३३||

nakhAn dams.TrA-karAlI ca keshAm-shcaivordhva-keshinI |
romakUpes.u kauberI tvacam vAgIshvarI tathA || ||33||

रक्तमज्जावसामांसान्यस्थिमेदांसि पार्वती ।
अन्त्राणि कालरात्रिश्च पित्तं च मुकुटेश्वरी ॥ ||३४||

raktamajjAvasAmAmsAnyasthimedAmsi pArvatI |
antr.Ani kAlarAtr.ishca pittam ca mukuTeshvarI || ||34||

पद्मावती पद्मकोशे कफे चूडामणिस्तथा ।
ज्वालामुखी नखज्वालामभेद्या सर्वसंधिषु ॥ ||३५||

padmAvatI padmakoshe kaphe cUDAmaNistathA |
jvAlAmukhI nakhajvAlAmabhedyA sarvasandhis.u || ||35||

शुक्रं ब्रह्माणि मे रक्षेच्छायां छत्रेश्वरी तथा ।
अहंकारं मनो बुद्धिं रक्षेन्मे धर्मधारिणी ॥ ||३६||

shukram brahmANI me rakshecchAyAm chatr.eshvarI tathA |
ahamkAram mano budhdim rakshenme dharmadhArinI || ||36||

प्राणापानौ तथा व्यानमुदानं च समानकम् ।
वज्रहस्ता च मे रक्षेत्प्राणं कल्याणशोभना ॥ ||३७||

prANApAnau tathA vyAnamudAnam ca samAnakam |
vajrahastA ca me rakshet prANam kalyANashobhanA || ||37||

रसे रूपे च गन्धे च शब्दे स्पर्शे च योगिनी ।
सत्त्वं रजस्तमश्चैव रक्षेन्नारायणी सदा ॥ ||३८||

rase rUpe ca gandhe ca shabde sparshe ca yoginI |
sattvam rajastamashcaiva rakshennArAyaNI sadA || ||38||

आयू रक्षतु वाराही धर्मं रक्षतु वैष्णवी ।
यशः कीर्तिं च लक्ष्मीं च धनं विद्यां च चक्रिणी ॥ ||३९||

AyU rakshatu vArAhI dharmam rakshatu vais.NavI |
yashah kIrtim ca lakshmIm ca dhanam vidyAm ca cakrinI || ||39

गोत्रमिन्द्राणि मे रक्षेत्पशून्मे रक्ष चण्डिके ।
पुत्रान् रक्षेन्महालक्ष्मीर्भार्यां रक्षतु भैरवी ॥ ||४०

gotr.amindrANi me rakshet pashUnme raksha caNDike |
putrAn rakshen-mahAlakshmIrbhAryAm rakshatu bhairavI || ||40

पन्थानं सुपथा रक्षेन्मार्गं क्षेमकरी तथा ।
राजद्वारे महालक्ष्मीर्विजया सर्वतः स्थिता ॥ ||४१

panthAnam supathA rakshenmArgam kshemakarI tathA |
rAjadvAre mahAlakshmIrvijayA sarvatah sthitA || ||4

रक्षाहीनं तु यत्स्थानं वर्जितं कवचेन तु ।
तत्सर्वं रक्ष मे देवि जयन्ती पापनाशिनी ॥ ||४

rakshAhInam tu yatsthAnam varjitam kavacena tu |
tatsarvam raksha me devi jayantI pApanAshinI || ||4

पदमेकं न गच्छेत्तु यदीच्छेच्छुभमात्मनः ।
कवचेनाऽऽवृतो नित्यं यत्र यत्रैव गच्छति ॥ ॥४३॥

padamekam na gacchettu yadIcchecchubhama-atmanah |
kavacenA vruto nityam yatr.a yatr.aiva gacchati || ||**43**||

तत्र तत्रार्थलाभश्च विजयः सार्वकामिकः ।
यं यं चिन्तयते कामं तं तं प्राप्नोति निश्चितम् ॥ ॥४४॥

tatr.a tatr.Artha-lAbhashca vijayah sArvakAmikah |
yam yam cintayate kAmam tam tam prApnoti nishcitam || ||**44**||

परमैश्वर्यमतुलं प्राप्स्यते भूतले पुमान् ।
निर्भयो जायते मर्त्यः संग्रामेष्वपराजितः ॥ ॥४५॥

paramaishvaryamatulam prApsyate bhUtale pumAn |
nirbhayo jAyate martyah samgrAmes.vaparAjitah || ||**45**||

त्रैलोक्ये तु भवेत्पूज्यः कवचेनावृतः पुमान् ।
इदं तु देव्याः कवचं देवानामपि दुर्लभम् ॥ ॥४६॥

trailokye tu bhavetpUjyah kavacenAvrutah pumAn |
idam tu devyAh kavacam devAnAmapi durlabham || ||**46**||

यः पठेत्प्रयतो नित्यं त्रिसन्ध्यं श्रद्धयान्वितः ।
दैवी कला भवेत्तस्य त्रैलोक्येष्वपराजितः ॥ ॥४७॥

yah patethprayato nityam trisandhyam shraddhayAnvitah |
daivI kalA bhavettasya trailokyes.vaparAjitah || ||**47**||

जीवेद् वर्षशतं साग्रमपमृत्युविवर्जितः ।
नश्यन्ति व्याधयः सर्वे लूताविस्फोटकादयः ॥ ॥४८

jIved vars.ashatam sAgramapamrutyu-vivarjitah |
nashyanti vyAdhayah sarve lUtAvisphotakAdayah || ||**48**

स्थावरं जङ्गमं चैव कृत्रिमं चापि यद्विषम् ।
अभिचाराणि सर्वाणि मन्त्रयन्त्राणि भूतले ॥ ॥४९

sthAvaram jan.gamam caiva krutr.imam cApi yadvis.am |
abhicArANi sarvANi mantra-yantrANi bhUtale || ||**4**

भूचराः खेचराश्चैव जलजाश्चोपदेशिकाः ।
सहजा कुलजा माला डाकिनी शाकिनी तथा ॥ ॥५०

bhUcarAh khecarAshcaiva jalajAshcopadeshikAh |
sahajA kulajA mAlA DAkinI shAkinI tathA || ||**5**

अन्तरिक्षचरा घोरा डाकिन्यश्च महाबलाः ।
ग्रहभूतपिशाचाश्च यक्षगन्धर्वराक्षसाः ॥ ॥५

antariksha-carA ghorA DAkinyashca mahAbalAh |
graha-bhUta-pishAcAshca yaksha-gandharva-rAkshasAh || ||

ब्रह्मराक्षसवेतालाः कूष्माण्डा भैरवादयः ।
नश्यन्ति दर्शनात्तस्य कवचे हृदि संस्थिते ॥ ॥५

brahma-rAkshasa-vetAlAh kus.mANdA bhairavAdayah |
nashyanti darshanAttasya kavace hrudi samsthite || ||

मानोन्नतिर्भवेद् राज्ञस्तेजोवृद्धिकरं परम् ।
यशसा वर्धते सोऽपि कीर्तिमण्डितभूतले ॥ ॥५३॥

mAnonnatirbhaved rAjnastejo-vrudhdikaram param |
yashasA vardhate soapi kIrti maNdita-bhUtale || ||53||

जपेत्सप्तशतीं चण्डीं कृत्वा तु कवचं पुरा ।
यावद्भूमण्डलं धत्ते सशैलवनकाननम् ॥ ॥५४॥

japetsaptashatIm caNDIm krutvA tu kavacam purA |
yAvad-bhUmaNdalam dhatte sashailavana-kAnanam || ||54||

तावत्तिष्ठति मेदिन्यां संततिः पुत्रपौत्रिकी ।
देहान्ते परमं स्थानं यत्सुरैरपि दुर्लभम् ॥ ॥५५॥

tAvattis.Thati medinyAm santatih putrapautrikI |
dehAnte paramam sthAnam yatsurairapi durlabham || ||55||

प्राप्नोति पुरुषो नित्यं महामायाप्रसादतः ।
लभते परमं रूपं शिवेन सह मोदते ॥ ॥५६॥

prApnoti purus.o nityam mahAmAyA prasAdatah |
labhate paramam rUpam shivena saha modate || ||56||

॥ इति देव्याः कवचं सम्पूर्णम् ॥

|| iti devI kavacam sampUrNam ||

॥ ॐ श्री दुर्गार्पणमस्तु ॥

|| om shrI durgArpaNamastu ||

॥ देव्याः अर्गलास्तोत्रम् ॥

devyAh shrI argalA stotr.am

ॐ । अस्य श्रीअर्गलास्तोत्रमन्त्रस्य । विष्णुर्ऋषिः । अनुष्टुप् छन्
श्रीमहालक्ष्मीर्देवता । श्रीजगदम्बाप्रीत्यर्थं । सप्तशतीपाठाङ्गत्वेन जपे विनियोगः

॥ ॐ नमश्चण्डिकायै ॥

Om | asya shrI argalAstotr.a mantrasya | vis.NuRs.ih
Anus.Tup chandah | shrI mahAlakshmI devatA | shrI jagadamb
prItyarthe | saptashatI pAThAngatvena jape viniyogah ||

|| Om namah caNDikAyai ||

मार्कण्डेय उवाच ।

ॐ जयन्ती मङ्गला काली भद्रकाली कपालिनी ।
दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोऽस्तु ते ॥ ॥१

mArkandeya uvAca ||

om jayantIi mangalA kAli bhadra kAlI kApAlinI |
durgA kshamA shivA dhAtrI swAhA swadhA namo'stu te || ||

जय त्वं देवि चामुण्डे जय भूतार्तिहारिणि ।
जय सर्वगते देवि कालरात्रि नमोऽस्तु ते ॥ ॥२

jaya tvam devi cAmuNDe jaya bhutArti-hAriNi |
jaya sarvagate devi kAlarAtri namo'stute || ||

मधुकैटभविद्राविविधातृवरदे नमः ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ ॥३

madhu-kaitabha-vidrAvi vidhatruvarade namah |
rUpam dehi jayam dehi yasho dehi dvis.o jahi || |

महिषासुरनिर्णाशि भक्तानां सुखदे नमः ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ ॥४॥

mahisasura-nirNAshi bhaktAnAm sukhade namah |
rUpam dehi jayam dehi yasho dehi dvis.o jahi || ||4||

रक्तबीजवधे देवि चण्डमुण्डविनाशिनी ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ ॥५॥

raktabija-vadhe devi caNDa-muNDa-vinAshini |
rUpam dehi jayam dehi yasho dehi dvis.o jahi || ||5||

शुम्भस्यैव निशुम्भस्य धूम्राक्षस्य च मर्दिनि ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ ॥६॥

shumbhasyaiva nishumbhasya dhumrakshasya ca mardini |
rUpam dehi jayam dehi yasho dehi dvis.o jahi || ||6||

वन्दिताङ्घ्रियुगे देवि सर्वसौभाग्यदायिनि ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ ॥७॥

vanditan.ghri-yuge devi sarva-saubhAgya-dAyini |
rUpam dehi jayam dehi yasho dehi dvis.o jahi || ||7||

अचिन्त्यरूपचरिते सर्वशत्रुविनाशिनि ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ ॥८॥

acintya-rUpa-carite sarva-shatru-vinAsini |
rUpam dehi jayam dehi yasho dehi dvis.o jahi || ||8||

नतेभ्यः सर्वदा भक्त्या चण्डिके दुरितापहे ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ ॥९॥

natebhyah sarvadA bhaktyA caNDike duritApahe |
rUpam dehi jayam dehi yasho dehi dvis.o jahi || ||9||

स्तुवद्भ्यो भक्तिपूर्वं त्वां चण्डिके व्याधिनाशिनि ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ ॥१

stuvadbhyo bhakti-purvam tvAm caNDike vyadhi-nAshini |
rUpam dehi jayam dehi yasho dehi dvis.o jahi || ||

चण्डिके सततं ये त्वामर्चयन्तीह भक्तितः ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ ॥१

caNDike satatam ye tvAmarcayantiha bhaktitah |
rUpam dehi jayam dehi yasho dehi dvis.o jahi || ||

देहि सौभाग्यमारोग्यं देहि मे परमं सुखम् ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ ॥१

dehi saubhAgyam-Arogyam dehi me paramam sukham |
rUpam dehi jayam dehi yasho dehi dvis.o jahi || ||

विधेहि द्विषतां नाशं विधेहि बलमुच्चकैः ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ ॥१

vidhehi dvis.atam nAsham vidhehi balamuccakaih |
rUpam dehi jayam dehi yasho dehi dvis.o jahi || ||

विधेहि देवि कल्याणं विधेहि परमां श्रियम् ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ ॥१

vidhehi devi kalyANam vidhehi paramam shriyam |
rUpam dehi jayam dehi yasho dehi dvis.o jahi || ||

सुरासुरशिरोरत्ननिघृष्टचरणेऽम्बिके ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ ॥१

surAsura- shiro-ratna- nighrus.Ta-caraNeambike |
rUpam dehi jayam dehi yasho dehi dvis.o jahi || ||

विद्यावन्तं यशस्वन्तं लक्ष्मीवन्तं जनं कुरु ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ ॥१६॥

vidyAvantam yashasvantam laksmIvantam janam kuru |
rUpam dehi jayam dehi yasho dehi dvis.o jahi || ||16||

प्रचण्डदैत्यदर्पघ्ने चण्डिके प्रणताय मे ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ ॥१७॥

pracaNDa-daitya-darpaghne caNDike praNatAya me |
rUpam dehi jayam dehi yasho dehi dvis.o jahi || ||17||

चतुर्भुजे चतुर्वक्त्रसंस्तुते परमेश्वरि ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ ॥१८॥

caturbhuje caturvaktra- samsthuthe parameshvari.|
rUpam dehi jayam dehi yasho dehi dvis.o jahi || ||18||

कृष्णेन संस्तुते देवि शश्वद्भक्त्या सदाम्बिके ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ ॥१९॥

krus.Nena samsthuthe devi shashvadabhaktyA sadAmbike |
rUpam dehi jayam dehi yasho dehi dvis.o jahi || ||19||

हिमाचलसुतानाथसंस्तुते परमेश्वरी ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ ॥२०॥

himAcala-sutA-nAtha- samsthuthe parameshvari |
rUpam dehi jayam dehi yasho dehi dvis.o jahi || ||20||

इन्द्राणीपतिसद्भावपूजिते परमेश्वरि ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ ॥२१॥

indrANI-pati-sadbhAva- pUjite parameshvari |
rUpam dehi jayam dehi yasho dehi dvis.o jahi || ||21||

देवि प्रचण्डदोर्दण्डदैत्यदर्पविनाशिनि ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ ॥२२॥

devi pracaNda-dordaNda-daitya-darpa-vinAshini |
rUpam dehi jayam dehi yasho dehi dvis.o jahi || ||22||

देवि भक्तजनोद्दामदत्तानन्दोदयेऽम्बिके ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ ॥२३॥

devi bhakta-janoddAma- dattAnandodaye'ambike |
rUpam dehi jayam dehi yasho dehi dvis.o jahi || ||23||

पत्नीं मनोरमां देहि मनोवृत्तानुसारिणीम् ।
तारिणीं दुर्गसंसारसागरस्य कुलोद्भवाम् ॥ ॥२४॥

patnIm manoramAm dehi manovruttA-nusAriNIm |
tAriNIm durga-samsAra-sAgarasya kulodhbhavAm || ||24

इदं स्तोत्रं पठित्वा तु महास्तोत्रं पठेन्नरः ।
स तु सप्तशतीसंख्यावरमाप्नोति सम्पदाम् ॥ ॥२५

idam stotram paThithvA tu mahAstotram patennarah |
sa tu saptashathisamkhyA- varamApnothi sampadAm || ||25

॥ इति देव्याः अर्गलास्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

|| iti devyAh argala stotram sampUrNam ||

॥ ॐ श्री दुर्गार्पणमस्तु ॥

||om shrI durgArpaNamastu||

॥ देव्याः कीलकम् ॥

॥ devyAh kIlakam ॥

ॐ । अस्य श्रीकीलकमन्त्रस्य । शिव ऋषिः । अनुष्टुप् छन्दः । श्रीमहासरस्वती देवता । श्रीजगदम्बाप्रीत्यर्थं । सप्तशतीपाठाङ्गत्वेन जपे विनियोगः॥

Om | asya shrI kIlaka mantr.asya | shiva Rs.ih | anus.Tup chandah| shrImahAsarasvatI devatA | shrI jagadambA prItyarthe| saptashatIpAThAngatvena jape viniyogah ||

॥ ॐ नमश्चण्डिकायै ॥

|| Om namah caNDikAyai ||

मार्कण्डेय उवाच ।

ॐ विशुद्धज्ञानदेहाय त्रिवेदीदिव्यचक्षुषे ।
श्रेयःप्राप्तिनिमित्ताय नमः सोमार्धधारिणे ॥ ॥१॥

mArkandeya uvAca ||
om vishudhda jnA.na dehAaya trivedI divya cakshus.e |
sreyah prApti nimittAya namah somArdha-dhAriNe || ||1||

सर्वमेताद्विजानीयान्मन्त्राणामभिकीलकम् ।
सोऽपि क्षेममवाप्नोति सततं जाप्यतत्परः ॥ ॥२॥

sarvametadvijAanIyAanmantr.AnAmabhi kIlakam |
so'pi kshemamavapnoti satatam jApyatatparah || ||2||

सिद्धयन्त्युच्चाटनादीनि वस्तूनि सकलान्यपि ।
एतेन स्तुवतां देवी स्तोत्रमात्रेण सिद्ध्यति ॥ ॥३॥

sidhdayantyuccatanadIni vastUni sakalAnyapi |
etena stuvatAm devI stotr.amatr.ena sidhdayati || ||3||

न मन्त्रो नौषधं तत्र न किञ्चिदपि विद्यते ।
विना जाप्येन सिद्ध्येत सर्वमुच्चाटनादिकम् ॥ ॥४॥

na mantr.o-naus.adham tatr.a na kiny.cidapi vidhyate |
vinA jApyena sidhdyetha sarvamuccaATanadikam || ||4|

समग्राण्यपि सिद्ध्यन्ति लोकशङ्कामिमां हरः ।
कृत्वा निमन्त्रयामास सर्वमेवमिदं शुभम् ॥ ॥५॥

samagraNyapi sidhdynati, lokashan.kAmimAm harah |
krutvA nimantr.ayAmAsa sarvamevamidam shubham || ||5|

स्तोत्रं वै चण्डिकायास्तु तच्च गुप्तं चकार सः ।
समाप्तिर्न च पुण्यस्य तां यथावन्नियन्त्रणाम् ॥ ॥६॥

stotr.am vai caNDikAyAsthu tacca guptam cakAra sah |
samAptirna ca puNyasya tAm yathavanniyantr.aNAm || ||6

सोऽपि क्षेममवाप्नोति सर्वमेवं न संशयः ।
कृष्णायां वा चतुर्दश्यामष्टम्यां वा समाहितः ॥ ॥७

so'pi kshemamavApnoti sarvameva na samshayah |
krus.NAayAm vA caturdashyamas.T amyAm va samAhitah || ||7

ददाति प्रतिगृह्णाति नान्यथैषा प्रसीदति ।
इत्थंरूपेण कीलेन महादेवेन कीलितम् ॥ ॥८

dadAti prathigruhNAti nanyathais.A prasIdati |
ittham rUpeNa kIlena mahAdevena kIlitam || ||

यो निष्कीलां विधायैनां नित्यं जपति संस्फुटम् ।
स सिद्धः स गणः सोऽपि गन्धर्वो जायते नरः ॥ ॥९

yo nis.hkIlAm vidhayainAm nityam japati samsphutam |
sa sidhdah sa gaNa so'pi gandharvo jAyate narah || ||

न चैवाप्यटतस्तस्य भयं क्वापीह जायते ।
नापमृत्युवशं याति मृतो मोक्षमवाप्नुयात् ॥ ॥१०॥

na caivApyaTa-tastasya bhayam kwApIha jAyate |
nApamrutyu-vasham yAthi mrutho mokshamapnuyAt || ||**10**||

ज्ञात्वा प्रारभ्य कुर्वीत ह्य कुर्वाणो विनश्यति ।
ततो ज्ञात्वैव सम्पन्नमिदं प्रारभ्यते बुधैः ॥ ॥११॥

jnathvA prArabhya kurvIt hya kurvANo vinashyati |
tato jnattvaiva sampannamidam prArabhyate budhaih || ||**11**||

सौभाग्यादि च यत्किञ्चिद् दृश्यते ललनाजने ।
तत्सर्वं तत्प्रसादेन तेन जाप्यमिदं शुभम् ॥ ॥१२॥

saubhagyadi ca yatkincid drushyate lalanAjane |
tatsarvam tatprasAdena tena jApyamidam shubham || ||**12**||

शनैस्तु जप्यमानेऽस्मिन् स्तोत्रे सम्पत्तिरूच्चकैः ।
भवत्येव समग्रापि ततः प्रारभ्यमेव तत् ॥ ॥१३॥

shanaistu japyamAane'smin stotre sampattirUccakaih |
bhavatyeva samagrapi tatah prArabhyameva tat || ||**13**||

ऐश्वर्यं यत्प्रसादेन सौभाग्याऽऽरोग्यसम्पदः ।
शत्रुहानिः परोमोक्षः स्तूयते सा न किं जनैः ॥ ॥१४॥

ishvaryam yatprasAdena saubhagya''Arogya sampadah |
shatr.uhAnih paromokshah sthUyate sA na kim janaih || ||**14**||

॥ इति देव्याः कीलकम् समाप्तम् ॥

|| iti devyAh kIlakam sampUrNam ||

॥ ॐ श्री दुर्गार्पणमस्तु ॥

||om shrI durgArpaNamastu||

॥ तन्त्रोक्तं रात्रिसूक्तम् ॥

|| tantr.okta rAtri sUktam ||

ॐ विश्वेश्वरीं जगद्धात्रीं स्थितिसंहारकारिणीम् ।
निद्रां भगवतीं विष्णोरतुलां तेजसः प्रभुः ॥

om visweswarIm jagadhdatrIm stithi samhara kariNIm |
nidrAm bhagavathIm vishnortulAm tejasah prabhuh ||

ब्रह्मोवाच ।

त्वं स्वाहा त्वं स्वधा त्वं हि वषट्कारः स्वरात्मिका ।
सुधा त्वमक्षरें नित्ये त्रिधा मात्रात्मिका स्थिता ॥

brahma uvAca |
tvam swAhA tvam svadha
tvam hi vas.aTkArah svarAtmika |
sudhA tvamakshare nitye tr.idha mAtr.Atmika sthitA ||

अर्धमात्रास्थिता नित्या यानुच्चार्या विशेषतः ।
त्वमेव सन्ध्या सावित्री त्वं देवि जननी परा ॥

ardhamAtrA sthitA nityA ya'nuccAryA vishes.atah |
tvameva sndhyA sAvitr.I tvam devi jananI parA ||

त्वयैतद्धार्यते विश्वं त्वयैतत्सृज्यते जगत् ।
त्वयैतत्पाल्यते देवि त्वमत्स्यन्ते च सर्वदा ॥

tvayaitadhdAryate vishvam tvayaitatsrujyate jagat |
tvayaitatpAlyathe devi tvamatsyante ca sarvadA ||

विसृष्टौ सृष्टिरूपा त्वं स्थितिरूपा च पालने ।
तथा संहृतिरूपान्ते जगतोऽस्य जगन्मये ॥ ॥५॥

visrus.Tau srus.Ti rUpA tvam stitirUpA ca pAlane |
tathA samhrutirUpante' jagato'sya jaganmaye || ||5||

महाविद्या महामाया महामेधा महास्मृतिः ।
महामोहा च भवती महादेवी महासुरी ॥ ॥६॥

mahAvidhyA mahA mAyA mahA medhA, mahA smruti |
mahAmohA ca bhavatI mahAdevI mahAsurI || ||6||

प्रकृतिस्त्वं च सर्वस्य गुणत्रयविभाविनी ।
कालरात्रिर्महारात्रिर्मोहरात्रिश्च दारुणा ॥ ॥७॥

prakrutistvam ca sarvasya guNatr.ayavibhAvinI |
kAla rAtr.irmahArAatr.ir-moharAtr.isca dAruNA || ||7||

त्वं श्रीस्त्वमीश्वरी त्वं ह्रीस्त्वं बुद्धिर्बोधलक्षणा ।
लज्जा पुष्टिस्तथा तुष्टिस्त्वं शान्तिः क्षान्तिरेव च ॥ ॥८॥

tvam shrI-stvamIshvarI tvam
hrIstvam budhdir-bodhalakshaNA |
lajja pus.TistathA tus.Tistvam sAntih kshantireva ca || ||8||

खड्गिनी शूलिनी घोरा गदिनी चक्रिणी तथा ।
शङ्खिनी चापिनी बाणभुशुण्डीपरिघायुधा ॥ ॥९॥

khaDgini, shUlinI ghorA gadinI cakriNI tathA |
shan.khinI cApinI, bANabhUshuNDi, parighayudhA || ||9||

सौम्या सौम्यतराऽशेषसौम्येभ्यस्त्वतिसुन्दरी ।
परापराणां परमा त्वमेव परमेश्वरी ॥ ॥१०॥

sowmyA-sowmyatarA' shes.a-sowmyebhyastvatisundarI |
parAparANAm paramA tvameva parameshvarI || ||10||

यच्च किंञ्चित् क्वचिद्वस्तु सदसद्वाखिलात्मिके ।
तस्य सर्वस्य या शक्तिः सा त्वं किं स्तूयसे तदा ॥ ॥१

yacca kinycit kvacidvastu sadasadvA'khilAtmike |
tasya sarvasya yA shaktih sA tvam kim stUyase tadA || ||1

यया त्वया जगत्स्रष्टा जगत्पात्यत्ति यो जगत् ।
सोऽपि निद्रावशं नीतः कस्त्वां स्तोतुमिहेश्वरः ॥ ॥१

yayA tvayA jagatsras.TA jagatpAtyati yo jagat |
so'pi nidrAvasham nItah kastvAm stotumihesvarah || ||1

विष्णुः शरीरग्रहणमहमीशान एव च ।
कारितास्ते यतोऽतस्त्वां कः स्तोतुं शक्तिमान् भवेत् ॥ ॥१

vishnuh sharIragrahaNa-mahAmIshAna eva ca |
kAritaste yato'tastvAm kah stotum shakthiman bhavet || ||1

सा त्वमित्थं प्रभावैः स्वैरुदारैर्देवि संस्तुता ।
मोहयैतौ दुराधर्षावसुरौ मधुकैटभौ ॥ ॥१

sA tvamittham prabhAvaih svairudArairdevi samstutA |
mohayaitau duradhars.Avasurau madhukaiTabhau || ||1

प्रबोधं च जगत्स्वामी नीयतामच्युतो लघु ।
बोधश्च क्रियतामस्य हन्तुमेतौ महासुरौ ॥ ॥१

prabodham ca jagatsvAmI niyatAmacyuto laghu |
bhodasca kriyatAmasya hantumetau mahasurau || ||1

॥ इति देव्याःतन्त्रोक्तं रात्रिसूक्तम् सम्पूर्णम् ॥

||iti tantr.okta rAtr.I sUkta sampUrNam||

॥ ॐ श्री दुर्गार्पणमस्तु ॥

||om shrI durgArpaNamastu||

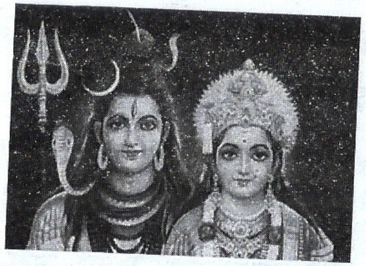

।। श्री शिव पंचाक्षर स्तोत्रम् ।।

॥ shiva pancAkshara stotr.am ॥

नागेन्द्रहाराय त्रिलोचनाय
भस्मांगरागाय महेश्वराय ।
नित्याय शुद्धाय दिगम्बराय
तस्मै 'न' काराय नमः शिवाय ॥ ।।१।।

nagEndra hArAya trilochanAya,
basmAnga rAgAya maheshvarAya ।
nithyAya shudhAya digambarAya,
tasmai "na" akArAya namah shivAya. ||1||

मन्दाकिनीसलिलचन्दनचर्चिताय
नन्दीश्वरप्रमथनाथमहेश्वराय ।
मन्दारपुष्पबहुपुष्पसुपूजिताय
तस्मै 'म' काराय नमः शिवाय ॥ ।।२।।

mandakinI salila chandana charchitAya,
nandIshvara pramatha nAtha maheshvarAya ।
mandAra pushpa bahu pushpa supUjitAya,
tasmai "ma" kArAya namah shivAya. ||2||

शिवाय गौरीवदनाब्जवृन्द -
सूर्याय दक्षाध्वरनाशकाय ।
श्री नीलकण्ठाय वृषध्वजाय
तस्मै 'शि' काराय नमः शिवाय ॥

shivAya govrI vadanAra vinda,
sUryAya dakshadwara nAshakAya ।
srInIla kanThAya vrishadvajAya,
tasmai "si" kArAya namah shivAya.

वसिष्ठकुम्भोद्भवगौतमार्य -
मुनीन्द्रदेवार्चितशेखराय ।
चन्द्रार्कवैश्वानरलोचनाय
तस्मै 'व' काराय नमः शिवाय ॥

vashis.Ta kumbhodhbhava govtamArya.
munendra devarchita shekharAya ।
chandrarka vaiswanaralOcanAaya,
tasmai "va" kArAya namah shivAya

यक्षस्वरूपाय जटाधराय
पिनाकहस्ताय सनातनाय ।
दिव्याय देवाय दिगम्बराय
तस्मै 'य' काराय नमः शिवाय ॥

yaksha svarUpAya jatAdharAya,
pinAka hastAya sanAtanAya ।
divyAya devAya digambarAya,
tasmai "ya" kArAya namah shivAya.

ॐॐॐॐॐॐॐॐॐॐॐॐॐॐॐॐॐॐॐॐ

ज्योत से ज्योत जगाओ....

jyot se jyot jagAo .....

ज्योत से ज्योत जगाओ....
सद्गुरु ज्योत से ज्योत जगाओ !
मेरा अन्तर तिमिर मिटाओ !
सद्गुरु ज्योत से ज्योत जगाओ।।

हे योगेश्वर ! हे परमेश्वर !
हे ज्ञानेश्वर ! हे सर्वेश्वर !
निज कृपा बरसाओ
सद्गुरु ज्योत से ज्योत जगाओ !
मेरा अन्तर तिमिर मिटाओ !
सद्गुरु ज्योत से ज्योत जगाओ।।

हम बालक तेरे द्वार पर आये,
मंगल दरस दिखाओ
सद्गुरु ज्योत से ज्योत जगाओ !
मेरा अन्तर तिमिर मिटाओ !
सद्गुरु ज्योत से ज्योत जगाओ।।

शीश झुकाए करें तेरी आरती,
प्रेम सुधा बरसाओ
सद्गुरु ज्योत से ज्योत जगाओ !
मेरा अन्तर तिमिर मिटाओ !
सद्गुरु ज्योत से ज्योत जगाओ।।

jyot se jyot jagAo .....
sadguru jyot se jyot jagAo
mera antar timir miTAo
sadguru jyot se jyot jagAo ||

he yogeshvar, he jNAneshvar,
he sarveshvar, he parameshvar
nij krupa barsAo
sadguru jyot se jyot jagAo
mera antar timir miTAo
sadguru jyot se jyot jagAo ||

ham bAlak tere dvAar pe Aye
mangal daras dikhAo
sadguru jyot se jyot jagAo
mera antar timir miTAo
sadguru jyot se jyot jagAo ||

shIsh jhukAye karein teri Arati
prEm sudhA barsAo
sadguru jyot se jyot jagAo
mera antar timir miTAo
sadguru jyot se jyot jagAo ||

साची ज्योत जगे जो हृदय में,
सोऽहं नाद जगाओ !
सद्गुरु ज्योत से ज्योत जगाओ !
मेरा अन्तर तिमिर मिटाओ !
सद्गुरु ज्योत से ज्योत जगाओ।।

अन्तर में युग युग से सोई,
चितिशक्ति को जगाओ !
सद्गुरु ज्योत से ज्योत जगाओ !
मेरा अन्तर तिमिर मिटाओ !
सद्गुरु ज्योत से ज्योत जगाओ।।

जीवन में शिव अविनाशी,
चरणन शरन लगाओ
सद्गुरु ज्योत से ज्योत जगाओ !
मेरा अन्तर तिमिर मिटाओ !
सद्गुरु ज्योत से ज्योत जगाओ।।

ॐॐॐॐॐॐ

sAci jyot jAge jo hriday
sOham nAd jagAo
sadguru jyot se jyot ja
mera antar timir miT
sadguru jyot se jyot jag

antar me yug-yugse s
cit shakti ko jagAo
sadguru jyot se jyot ja
mera antar timir miT
sadguru jyot se jyot jag

jIvan mein shiva avin
caraNan sharan lagA
sadguru jyot se jyot ja
mera antar timir miT
sadguru jyot se jyot jag

ॐॐॐॐॐॐ

॥ क्षमा प्रार्थना ॥

khsamA prArthaNA

अपराधसहस्राणि क्रियन्तेऽहर्निशं मया ।
दासोऽयमिति मां मत्वा क्षमस्व परमेश्वरि ॥ ॥१॥

aparAdha sahasrANi kriyante'harnisham mayA |
dAso'yamiti mAm matvA kshamasva parameshvari || ||1||

आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम् ।
पूजां चैव न जानामि क्षम्यतां परमेश्वरि ॥ ॥२॥

AvAhanam na jAnAmi na jAnAmi visarjanam |
pUjAm caiva na jAnAmi kshamyatAm parameshvari || ||2||

मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वरि ।
यत्पूजितं मया देवि परिपूर्णं तदस्तु मे ॥ ॥३॥

mantr.ahInam kriyAhInam bhakthi hInam sureshvari |
yatpUjitam mayA devi paripUrna tadastu me || ||3||

अपराधशतं कृत्वा जगदम्बेति चोच्चरेत् ।
यां गतिं समवाप्नोति न तां ब्रह्मादयः सुराः ॥ ॥४॥

aparAdha shatam krutvA jagadambeti coccaret |
yAm gatim samavApnoti na tAm brhmAdayah surAh || ||4||

सापराधोऽस्मि शरणं प्राप्तस्त्वां जगदम्बिके ।
इदानीमनुकम्प्योऽहं यथेच्छसि तथा कुरु ॥ ॥५॥

sAparAdho'smi sharanam prAptstvAm jagadambike |
idAnImanukampyo'ham yathecchAsi tathA kurU || ||5||

अज्ञानाद्विस्मृतेर्भ्रान्त्या यन्न्यूनमधिकं कृतम् ।
तत्सर्वं क्षम्यतां देवि प्रसीद परमेश्वरि ॥ ॥६

ajnAnAd-vismrute-bhrAntyA yannyUnamadhikam krutam |
tatsarva kshamyatAm devi prasIda paramesvarI || ||

कामेश्वरि जगन्मातः सच्चिदानन्दविग्रहे ।
गृहाणार्चामिमां प्रीत्या प्रसीद परमेश्वरि ॥ ॥७

kAmeshvari jaganmAtah saccidAnanda vigrahe |
gruhANArcAmimAm prIttyA prasIda paramesvarI || ||

गुह्यातिगुह्यगोप्त्री त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम् ।
सिद्धिर्भवतु मे देवि त्वत्प्रसादात्सुरेश्वरि ॥ ॥८

guhyAtiguhyagoptr.I tvam gruhANAsmatkrutam japam |
sidhdirbhavatu me devi tvatprasAdAtsureshvari || ||

॥इति क्षमा प्रार्थना स्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

||iti khsamA - prArthaNA sampUrNam||

॥ ॐ श्री दुर्गार्पणमस्तु ॥
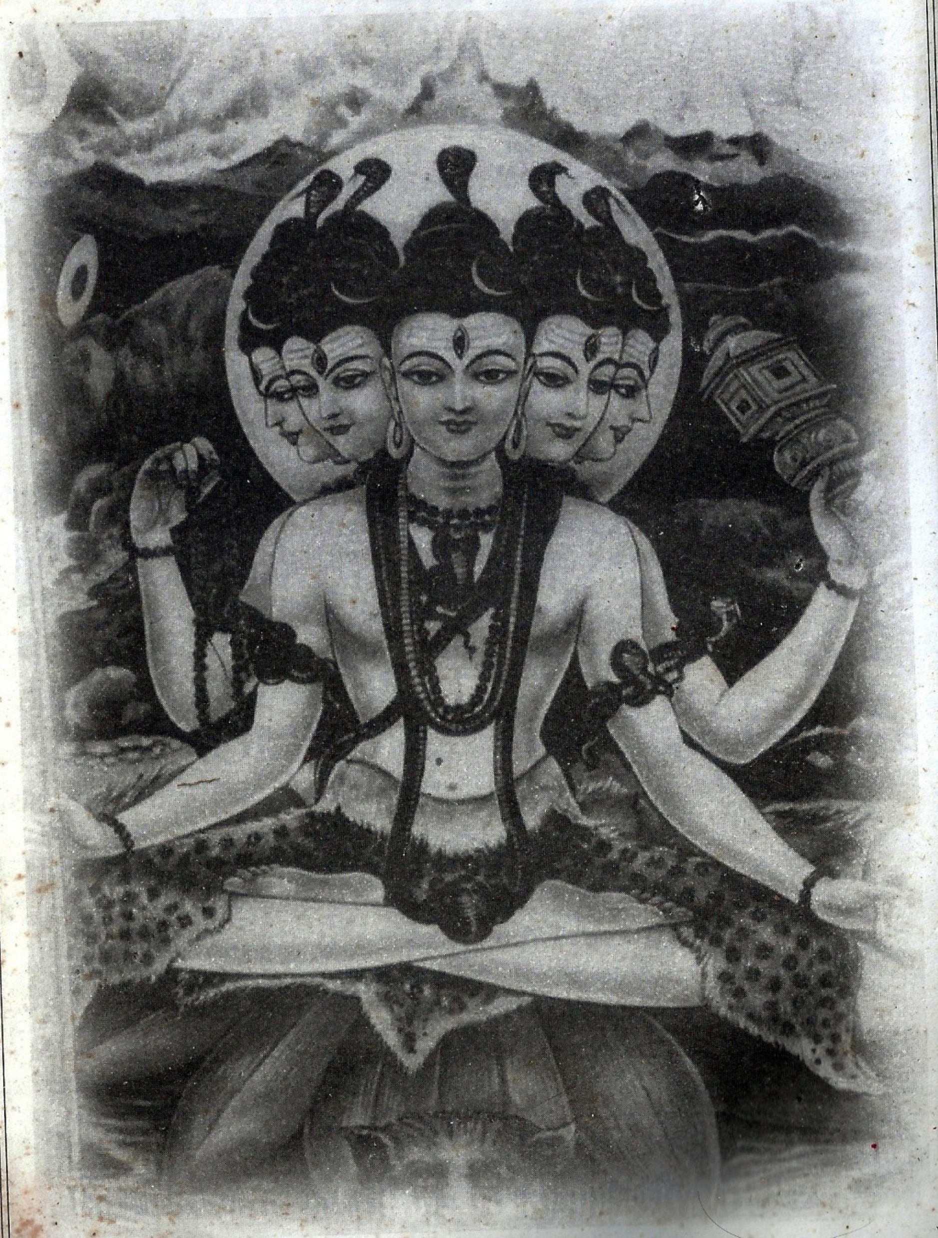
||om shrI durgArpaNamastu||